50 वां राष्ट्रीय
फिल्म पुरस्कार समारोह 2003

50th National
Film Awards Function 2003

फिल्म समारोह निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
Directorate of Film Festivals, Ministry of Information & Broadcasting, Govt. of India

50वां राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार

50th National Film Awards

2003

संपादन
सुमन तरफदार

Editor
Suman Tarafdar

समन्वय
मनोज श्रीवास्तव

Co-ordination
Manoj Srivastava

सहयोग
मंजु खन्ना
कौशल्या मेहरा

Assistance
Manju Khanna
Kaushalya Mehra

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
वी.के.मीणा
ए.के. गुलाटी
विलास पगारे

Production
G.P. Dhusia
V.K. Meena
A.K. Gulati
Vilas Pagare

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित
मुद्रक : पर्ल ऑफसेट प्रेस प्राईवेट लिमिटेड़, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-110015

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Pearl Offset Press Pvt. Ltd., Kirti Nagar, New Delhi-110015.

No. 2/16/2003-PP-III 1500 Copies December, 2003

50 NFA

विषय सूची

CONTENTS

निर्णायक मंडल / Hindi	Page No.	English
निर्णायक मंडल	VII	**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	11	**DADASAHEB PHALKE AWARD**
राष्ट्रपति के स्वर्णपदक (स्वर्णकमल) विजेता	14	**Winners of President's Gold Medal (Swarna Kamal)**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	16	**Dadasaheb Phalke Award Winners**
कथाचित्र पुरस्कार	17	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	18	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	20	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
स्वस्थ् मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म	22	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	24	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	26	Best Film on Other Social Issues
सर्वोत्तम बाल फिल्म	28	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	30	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	32	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	34	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	36	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	38	Best Supporting Actress
सर्वोत्ताम बाल कलाकार	40	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	42	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	44	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	46	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	48	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	50	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	52	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	54	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषा	56	Best Costume Design
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	58	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	60	Best Lyrics
सर्वोत्तम निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	62	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	64	Best Special Effects

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	66	Best Choreography
सर्वोत्तम असमी फीचर फिल्म	68	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म	70	Best Feature Film In Bengali
सर्वोत्तम हिंदी फीचर फिल्म	72	Best Feature Film In Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म	74	Best Feature Film In Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म	76	Best Feature Film In Malayalam
सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म	78	Best Feature Film In Marathi
सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म	80	Best Feature Film In Tamil
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म	83	Best Feature Film In English
विशेष उल्लेख	84	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए - फीचर फिल्म	86	Awards not given
गैर कथाचित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	88	Award for the Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	90	Award for the Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	92	Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	94	Award for the Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	96	Award for the Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण परिरक्षण फिल्म	98	Award for the Best Environment/Conservation Film
सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म	100	Award for the Best Promotional Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	102	Award for the Best Film On Social Issues
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	104	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	106	Award for the Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	108	Award for the Best Film On Family Welfare
सर्वोत्तम निर्देशन	110	Award for the Best Direction
सर्वोत्तम संपादन	112	Award for the Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	114	Award for the Best Music Direction
विशेष उल्लेख	116	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए-गैर कथाचित्र	118	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार		**AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	120	Award for the Best Book On Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	122	Award for the Best Film Critic
विशेष उल्लेख	124	Special Mention

फीचर फिल्म सारंश		SYNOPSES-FEATURE FILMS
बाजा	128	Baaja
भवम	129	Bhavam
देवदास	130	Devdas
कन्नाथिल मुत्थामिट्टाल	131	Kannathil Muthamittal
कोनिकर रामधेनु	132	Konikar Ramdhenu
मैजिक मैजिक	133	Magic Magic
मकड़ी	134	Makdee
मंदो मेयेर उपाख्यान	135	Mondo Meyer Upakhayan
मिस्टर एंड मिसेज़ अय्यर	136	Mr and Mrs Iyer
नन्बा नन्बा	137	Nanba Nanba
निझलक्कुथु	138	Nizhalkkuthu
पातालघर	139	Patal Ghar
प्रोहोर	140	Prohor
शुभो मुहुर्त	141	Shubho Muhurat
सिंगरव्वा	142	Singaravva
स्टंबल	143	Stumble
स्वराज	144	Swaraaj
द लीजेंड ऑफ भगत सिंह	145	The Legend of Bhagat Singh
वास्तुपुरुष	146	Vastupurush
जिंदगी खूबसूरत है	147	Zindagi Khoobsurat Hai
गैर फीचर-फिल्म सारांश		**SYNOPSES- NON-FEATURE FILMS**
ए फ्यू थिंग्स आई नो अबाउट हर	150	A Few Things I Know About Her
अवचेतन	151	Avchetan
बियांड और विदिन	152	Beyond or Within
धात्री पन्ना	153	Dhatri Panna
द आई ऑफ द फिश	154	The Eye of the Fish
कालीघाट एंड ड्राइंग	155	Kalighata Paintings and Drawings
मीटिंग मनजीत	156	Meeting Manjit
द मोरंग	157	The Morung
नारायण गंगाराम सूर्वे	158	Narayan Gangaram Surve
परमापथम	159	Paramapatham
सुंदर जीबोन	160	Sunder Jeebon
द ट्रेजर इन द स्नो	161	The Treasure in the Snow
उरुमाट्रम	162	Urumattram
00:00	163	00:00

निर्णायक मंडल Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS

प्रकाश झा (सभापति)
Prakash Jha (Chairperson)

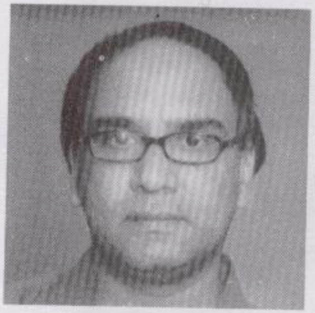

अमिताभ पराशर
Amitabh Parashar

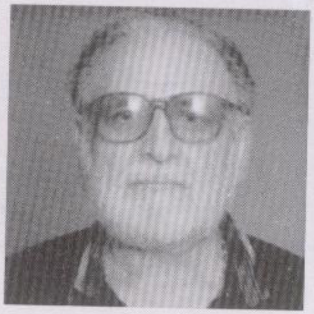

अरूण कौल
Arun Kaul

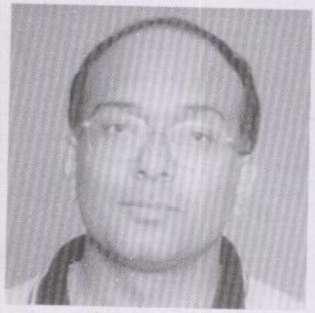

बीजू विश्वनाथ
Biju Viswanath

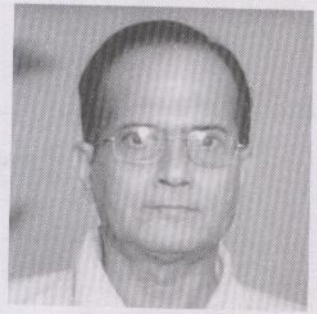

विप्लब रायचौधरी
Biplab Ray Chaudhuri

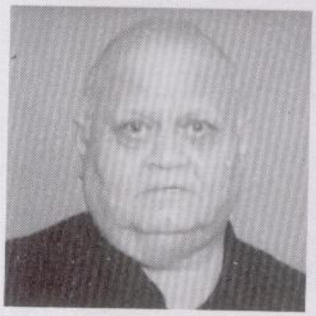

दिनयार कान्ट्रेक्टर
Dinyar Contractor

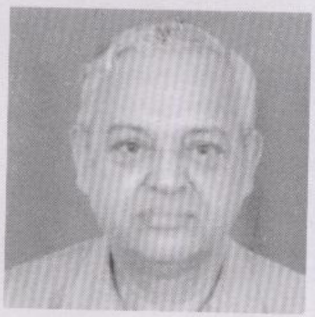

गौतम कौल
Gautam Kaul

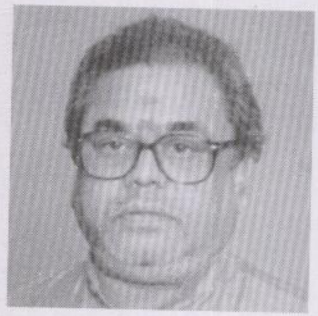

के.एस.एल. स्वामी
K S L Swame

किरण घई
Kiran Ghai

एम.एम. एलेक्स
M M Alex

मनोज तिवारी
Manoj Tiwari

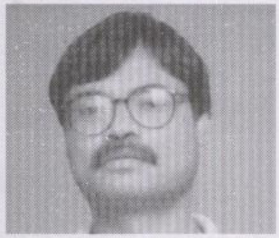
मृणाल कांति दास
Mrinal Kanti Das

मुकेश खन्ना
Mukesh Khanna

नासीर महमूद कुरैशी
Nasir Mahmood Quraishi

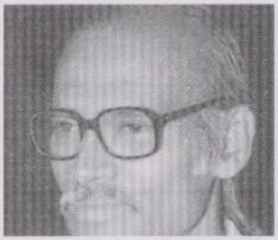
निराद महापात्रा
Nirad Mohapatra

आर. श्यामा प्रसाद
R Shyama Prasad

रउफ अहमद
Rauf Ahmed

एस. थियोदर भास्करण
S Theodore Bhaskaran

सैबल चटर्जी
Saibal Chatterjee

श्रीलेखा मुखर्जी
Sreelekha Mukherjee

स्वप्न मल्लिक
Swapan Mallick

जुबी अहमद आमीर
Zoobi Amir

गैर कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON FEATURE FILMS

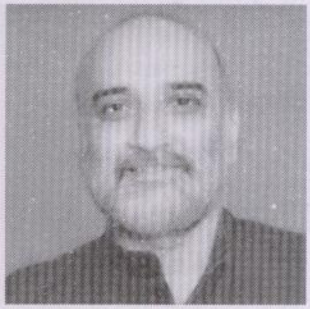

राजीव महरोत्रा (सभापति)
Rajiv Mehrotra (Chairperson)

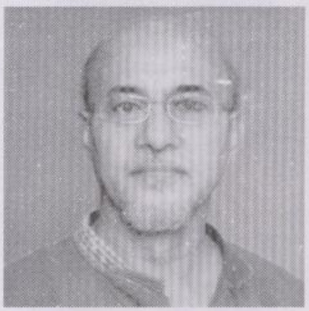

अपूर्व शर्मा
Apurba Shama

कानन कृष्णमूर्ति
Kannan Krishnamurthy

सत्य नारायण
Satya Narayan

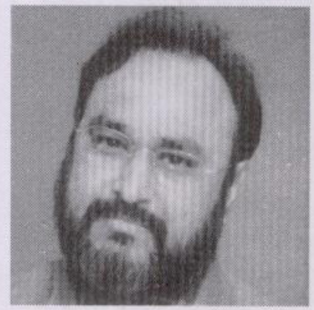

सत्य प्रकाश 'असीम'
Satya Prakash 'Aseem'

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मंडल

JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

रश्मि दोराईस्वामी
Rashmi Doraiswamy

उदय तारा नायर (सभापति)
Uday Tara Nayar (Chairperson)

ओम थान्वी
Om Thanvi

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

Dada Saheb Phalke Award

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 2003

भारतीय सिनेमा को अभिन्न योगदान

देव आनंद

सदाबहार अभिनेता, चितेरा, बॉलीवुड का अनन्त आशावादी - अपने लंबे और मनमोहक फिल्मी सफर में देव आनंद को ऐसे कई अलंकरणों से नवाज़ा जाता रहा है। अभिनेता, निर्माता और निर्देशक देश के स्वतंत्र होने के तुरंत बाद चर्चा में आये। आजादी मिलने के बाद समाज अनेक राजनीतिक-आर्थिक चुनौतियों से दो-चार हो रहा था। आशा और संघर्ष के इस दौर में अशोक कुमार, दिलीप कुमार और राज कपूर के साथ इस अभिनेता की चौकड़ी ने भारत को बांटने वाले उन अनगिनत विरोधों को दरकिनार करते हुए समूचे देश में लोगों के दिलों में अपनी विशिष्ट जगह बना ली।

देव आनंद का जन्म पंजाब के गुरदासपुर में 26 सितंबर, 1923 को हुआ था। उनके पिता वहां वकालत करते थे। प्राइवेट से मैट्रिक करने से पूर्व उन्होंने गुरदासपुर और डलहौजी में पढ़ाई की। बाद में उन्होंने लाहौर के गर्वमेंट कॉलेज से 1942 में कला विषय में स्नातक की डिग्री हासिल की। दिल्ली में थोड़े समय रुकने के पश्चात आंखों में फिल्म जगत में अपनी जगह बनाने का सपना लिये अपने बड़े भाई चेतन आनंद के पास मुंबई चले गये। हालांकि मुंबई प्रवास के पहले ढाई साल वह ब्रितानी सेंसर कार्यालय में क्लर्क रहे।

फिल्मों में 1946 में उन्हें पहला मौका मिला। फिल्म थी - प्रभात टाक़ीज की *हम एक हैं* लेकिन फिल्म *ज़िद्दी* (1948) ने देव आनंद को स्टार बना दिया। 1949 में चेतन और देव आनंद ने नवकेतन की बुनियाद रखी। अगले ढाई दशक से भी कुछ ज्यादा समय तक फिल्म निर्माण उद्योग में नवकेतन का नाम छाया रहा। इसके बाद से देव आनंद नवकेतन के लिए काम करें अथवा किसी और के बैनर के तले, उनकी फिल्मों के प्रति आम दर्शकों में सामान्य रूप से एक आशावादी दृष्टिकोण सदैव कायम रहा। हालांकि उनमें से कई फिल्में सफल नहीं रहीं।

जाल (1952), *टैक्सी ड्राइवर* (1954), *मुनीमजी* (1955), *फंटूश* (1956), *पेइंग गेस्ट, नौ दो ग्यारह* (दोनों 1957), *काला पानी* (1958), *काला बाजार, जाली नोट, बंबई का बाबु* (1960), *हम दोनों* (1961), *तेरे घर के सामने* (1963), *गाइड* (1965), *ज्वैलथीफ* (1967), *जानी मेरा नाम* (1970), *तेरे मेरे सपने, हरे रामा हरे कृष्णा* (दोनों 1971) - सफल फिल्मों की एक लंबी लड़ी से मनोहर छवि वाले इस अभिनेता का नाम बच्चे-बच्चे की जुबां पर आ गया। सुरैया, कामिनी कौशल, नरगिस, मीना कुमारी, मधुबाला, निम्मी, गीता बाली, नलिनी जयवंत और नूतन समेत 40 और 50 के दशक की तकरीबन सभी सफल अभिनेत्रियों के साथ उन्होंने काम किया।

उन्होंने फिल्म *गाइड* के निर्माण में अमेरिका का सहयोग लिया। फिल्म निर्माण में भारत-अमेरिका सहयोग का यह देश में पहला मौका था। इस फिल्म में शहरी रूमानी तबियत वाले युवक के रूप में उनकी अदाकारी आज भी कायम है। अपने दिलकश अंदाज की बदौलत देव आनंद पुरुषों और महिलाओं के दिलोदिमाग पर छा गये।

मुंबई फिल्म उद्योग के अनुपम आकर्षण को मनोहर व आकर्षक छवि वाले इस अभिनेता ने जिस तरह से अपने में समेट लिया वैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता।

देव आनंद अब भी अभिनय और फिल्म निर्माण का सिलसिला जारी रखे हुए हैं और आज भी उनकी ख्वाहिश एक और सुपरहिट फिल्म बनाने की बनी हुई है।

DADASAHEB PHALKE AWARD 2003

OUTSTANDING CONTRIBUTION TO INDIAN CINEMA
DEV ANAND

'Evergreen' hero, the suave charmer, Bollywood's eternal optimist, Dev Anand has been rewarded with many sobriquets in his long and fascinating celluloid journey. The actor, producer and director first came into the spotlight soon after independence, with society still coping with the massive politico-economic challenges facing the just independent country. Amidst the hope and struggles, the actor, along with Ashok Kumar, Dilip Kumar and Raj Kapoor, formed a quartet that ruled the hearts of the citizens, cutting across the myriad differences that seemed to divide India.

Dev Anand was born in Gurdaspur in Punjab on September 26, 1923, where his father was a practicing lawyer. He studied in Gurdaspur and Dalhousie before completing his matriculation privately. He later graduated in arts in 1942 from the Government College, Lahore. After a brief stay in Delhi, he went to Bombay to join his elder brother Chetan Anand, looking for a break in the film industry. However, for the initial two-and-a-half-years he worked in the British Censor Office.

He got his first break in films in 1946 in Prabhat Talkies' *Hum Ek Hain*. But it was with *Ziddi* (1948) that Dev Anand became a star. In 1949, Navketan, one of the best-known film production houses over the next two-odd decades, was launched by Chetan and Dev Anand. From then on, whether he worked for Navketan, or outside of it, Dev Anand's films became eagerly anticipated and more often than not proved to be major successes.

Jaal (1952), *Taxi Driver* (1954), *Munimji* (1955), *Funtoosh* (1956), *Paying Guest, Nau Do Gyarah* (both 1957), *Kala Pani* (1958), *Kala Bazar, Jaali Note, Bambai Ka Babu* (all 1960), *Hum Dono* (1961), *Tere Ghar Ke Samne* (1963), *Guide* (1965), *Jewel Thief* (1967), *Johnny Mera Naam* (1970), *Tere Mere Sapne, Hare Rama Hare Krishna* (both 1971) – a steady string of success made the handsome star a household name. He worked with most of the leading actresses of his days including Suraiya, Kamini Kaushal, Nargis, Meena Kumari, Madhubala, Nimmi, Geeta Bali, Nalini Jayawant and Nutan.

The maker of India's first Indo-American co-production *Guide,* his portrayal of the urban romantic remains unmatched to this day. But is Dev Anand's legacy that won him the hearts of his fellow countrymen and women. Sauve, charming, few have epitomised the inimitable spirit of the Mumbai film industry quite as effectively as him. Winner of numerous awards, Dev Anand continues to act in and make films, still dreaming of making yet another blockbuster.

PAST WINNERS OF PRESIDENT'S GOLD MEDAL (SWARNA KAMAL)

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi Aai	P. K.Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V.Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Hindi	1960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazare	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Gopi Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Pattabhiram Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalyam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B. V. Karanth	Kannada	1975

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
24.	Mrigaya	Mrinal Sen	Hindi	1976
25.	Ghatashraddha	Girish Kasaravalli	Kannada	1977
26.	No award recommended			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28.	Akaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Sankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32.	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Bodhan Kahi	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Maruppakkam	K. S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagavad Gita	G. V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalkrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997
46.	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47.	Vaanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48.	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000
49.	Dweepa	Girish Kasaravalli	Kannada	2001

DADASAHEB PHALKE AWARD DOWN THE YEARS

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1970	Devika Rani Roerich
2.	1971	B. N. Sircar
3.	1972	Prithviraj Kapoor
4.	1973	Pankaj Mullick
5.	1974	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1975	B. N. Reddi
7.	1976	Dhiren Ganguly
8.	1977	Kanan Devi
9.	1978	Nitin Bose
10.	1979	R. C. Boral
11.	1980	Sohrab Modi
12.	1981	P. Jairaj
13.	1982	Naushad Ali
14.	1983	L. V. Prasad
15.	1984	Durga Khote
16.	1985	Satyajit Ray
17.	1986	V. Shantaram
18.	1987	B. Nagi Reddy
19.	1988	Raj Kapoor
20.	1989	Ashok Kumar
21.	1990	Lata Mangeshkar
22.	1991	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1992	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1993	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1994	Majrooh Sultanpuri
26.	1995	Dilip Kumar
27.	1996	Dr. Rajkumar
28.	1997	Shivaji Ganesan
29.	1998	Kavi Pradeep
30.	1999	B. R. Chopra
31.	2000	Asha Bhonsle
32.	2001	Yash Chopra

कथाचित्र पुरस्कार Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र

मंदो मेयेर उपाख्यान (बंग्ला)

निर्माता को स्वर्ण कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार आर्य भट्टाचार्य

निर्देशक को स्वर्ण कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार बुद्धदेव दासगुप्ता

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र से पुरस्कृत फिल्म मंदो मेयेर उपाख्यान में समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों की मानवीय और सामाजिक वास्तविकताओं का पद्यात्मक वर्णन किया गया है।

BEST FEATURE FILM

MONDO MEYER UPAKHYAN (Bengali)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer **ARYA BHATTACHARJEE**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **BUDDHADEB DASGUPTA**

CITATION
The award for the Best Feature Film of 2002 is given to the Bengali film Mondo Meyer Upakhyan for its poetic exploration of human and social realities concerning people on the fringes of society.

आर्य भट्टाचार्य

अमेरिका के सॉफ्टवेयर उद्यमी आर्य भट्टाचार्य ने 2000 में आरजोई एंटरटेनमेंट की स्थापना की। उनका उद्देश्य था- पश्चिम के बाजार को मुख्य रूप से ध्यान में रखते हुए भारतीय विषय-वस्तु के साथ फिल्मों का स्वतंत्र निर्माण और ऐसी फिल्मों को प्रोत्साहन। पिछले 24 महीनों में आर्य ने स्वयं वित्त की व्यवस्था कर भारतीय शास्त्रीय संगीत पर तीन फीचर फिल्मों और दो दृश्य/श्रव्य अलबम का निर्माण किया। आरजोई एंटरटेनमेंट की नवीनतम फिल्म मंदो मेयेर उपाख्यान ने 2003 के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया है। इससे पहले आर्य टेलीकॉम चिप कंपनी आर्कस टेक्नोलॉजी के स्थापक और मुख्य कार्याधिकारी थे।

बुद्धदेव दासगुप्ता

बहु-आयामी प्रतिभा के धनी बुद्धदेव अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं। समालोचकों की नजर में बुद्धदेव दासगुप्ता आज भारत के सर्वश्रेष्ठ निर्देशकों में से एक हैं। बुद्धदेव की सभी फिल्में उनके जीवंत एकांतवाद को चित्रित करती हैं। इनमें से कई आश्चर्यजनक रूप से पूर्णतया मौलिक चित्रण के पर्याय के रूप में नजर आती हैं। कलाकारों की अदाकारी निर्देशक की संवेदनशील, बुद्धिमत्ता और मानवीय दृष्टिकोण को निरूपित करती है और परदे पर इसके चित्रण ने बुद्धदेव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया है। उनकी कृतियों ने भारत और विदेश में अनगिनत पुरस्कार जीते हैं। इनमें चार राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं। प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में बुद्धदेव की फिल्मों को सराहा गया है। शुरुआती दौर की उनकी फिल्में *दूरत्वा* (1978), *गृहयुद्ध* (1981) और *अंधेरी गली* (1984) की ट्राइलोजी ने बुद्धदेव के तथा बाद की उनकी फिल्में - *फेरा* (1986), *बाघ बहादुर* (1989), *थहादेर कथा* (1992), *चराचर* (1993), *लाल दर्जा* (1996), *उत्तरा* (2000) और *जोरासांको ठाकुरबाड़ी* (2001) ने श्रेष्ठ निर्देशक के रूप में उन्हें स्थापित कर दिया।

ARYA BHATTACHARJEE

Arya Bhattacherjee, a Silicon Valley entrepreneur, founded Arjoe Entertainment Inc. in 2000, with the aim of producing and promoting independent films with Indian content, targeted primarily for the western market. Over the last 24 months Arya has self-financed and produced three feature films and two video/audio products on Indian classical music. Arjoe Entertainment's latest film, *Mondo Meyer Upakhayan*, has won the National Award. Prior to this, Arya was the founder and CEO of a telecom chip company, Arcus Technology.

BUDDHADEB DASGUPTA

A multi-talented person, Buddhadeb is an economics professor by training. Critics consider him as India's foremost director today. All his films reflect his vibrant individualism, many of them exhibiting an amazing originality. The artist's response to his world in all his films is sensitive, intelligent and humane, and his interpretation of it on the screen is internationally famous for its artistic skill and creativity. His works have won numerous awards in India and abroad. His initial films - *Dooratwa* (1978), *Grihajuddha* (1981) and *Andhi Gali* (1984) - formed a trilogy that served to establish him as a director to look out for. And the promise has been amply fulfilled in his later body of work - *Phera* (1986), *Bagh Bahadur* (1989), *Tahader Katha* (1992), *Charachar* (1993), *Lal Darja* (1996), *Uttara* (2000) and *Jorasanko Thakurbari* (2001).

निर्देशन के लिए सर्वोत्तम पहली फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार

पाताल घर (बंग्ला) और प्रोहोर (बंग्ला)

प्रत्येक निर्माता को स्वर्ण कमल और 12,500 रुपये का नकद पुरस्कार नीति सौनी गौरीसरिया (पाताल घर) और देबजानी गुप्ता (प्रोहर)

प्रत्येक निर्देशक को स्वर्ण कमल और 12,500 रुपये का नकद पुरस्कार अभिजीत चौधरी (पाताल घर) और सुभद्रो चौधरी (प्रोहोर)

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वोत्तम पहली फिल्म के निर्देशन का इंदिरा गांधी पुरस्कार दो बंग्ला फिल्में पाताल घर और प्रोहोर को संयुक्त रूप से दिया गया है। अभिनव शिल्प कला और वैज्ञानिक कल्पना के देसी व्याख्यात्मक निरूपण के लिए पाताल घर और एक महिला के साथ क्रूरता के संवेदनशील चित्रण के लिए प्रोहोर को पुरस्कार के लिए चुना गया।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

PATAL GHAR (Bengali) AND PROHOR (Bengali)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 12,500/- each to the Producers **NITI SONI GOURISARIA (PATAL GHAR) AND DEBJANI GUPTA (PROHOR)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 12,500/- each to the Directors **ABHIJIT CHAUDHURI FOR PATAL GHAR AND SUBHADRO CHOWDHURY FOR PROHOR**

CITATION
The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2002 is given jointly to two Bengali films: Patal Ghar and Prohor, the first for its craftsmanship and fine blending of the conventions of science fiction and an indigenous narrative form and the second for its use of sensitive idiom to portray the trauma of a brutalised woman.

नीति सोनी गौरीसरिया

नीति सोनी गौरीसरिया ने जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकता से अर्थशास्त्र में स्नातक किया है। वह प्रशिक्षित कंप्यूटर प्रोग्रामर और सिस्टम एनालिस्ट रही हैं। उन्होंने विज्ञापन की दुनिया में कई वर्षों तक काम किया है। क्लेरियन एडवर्टाइजिंग की राष्ट्रव्यापी गतिविधियों के लिए एमआईएस पैकेज के उपयोग के दौरान उन्हें परियोजना विकास और कार्यान्वयन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गयी थी। ब्लैक मैजिक के लिए उन्होंने अनगिनत टेलीविजन विज्ञापनों का निर्माण किया। वर्ष 1990 से वह फिल्म निर्माण में सक्रिय हैं और कई वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है।

देबजानी गुप्ता

पश्चिम बंगाल में जन्मी देबयानी सांस्कृतिक रूप से धनी परिवार में बड़ी हुईं। कम उम्र से ही देबयानी को कला के प्रति लगाव रहा। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद रवींद्र संगीत में डिप्लोमा किया। देबयानी ने सिद्धार्थ विधि महाविद्यालय, मुंबई में भी पढ़ाई की। बतौर निर्माता प्रोहोर उनकी पहली फिल्म है।

अभिजीत चौधुरी

कलकत्ता विश्वविद्यालय से गणित में स्नातक अभिजीत चौधरी ने विज्ञापन उद्योग और टेलीविजन की दुनिया में 12 वर्षों से अधिक समय तक काम किया है। पहले वह कांटिनेंटल एडवर्टाइजिंग में विजुलाइजर के पद पर रहे। बाद में उन्होंने कलकत्ता स्थित प्राइम टाइम के लिए स्वतंत्र रूप से टेलीविजन विज्ञापनों का निर्माण किया। वर्ष 1990 में उन्होंने क्लेरियन एडवर्टाइजिंग सर्विसेज में बतौर फिल्म प्रभारी कार्याधिकारी के रूप में कार्य किया। क्लेरियन के बाद वह एचटीए (जे. वाल्टर थामसन से संबद्ध भारतीय कंपनी) से जुड़े। वर्ष 1995 में उन्होंने नीति और अर्जुन के साथ मिलकर ब्लैक मैजिक की स्थापना की। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने सैकड़ों टीवी विज्ञापनों का निर्माण किया है। पातालघर उनकी पहली फीचर फिल्म है। इस फिल्म के लिए उन्होंने संवाद, पटकथा और गीत लिखे हैं।

सुभद्रो चौधरी

अंग्रेजी (प्रतिष्ठा) में स्नातक सुभद्रो चौधरी ने भारतीय फिल्म व टेलीविजन संस्थान, पुणे में निर्देशक का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष (1994) उन्होंने डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक फिल्म स्टील लाइफ बनाई। यह फिल्म 1995 की सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुन ली गई। उसके बाद से सुभद्रो कोलकता में पेशेवर निर्देशक के रूप में कार्यरत हैं। पिछले आठ वर्षों में उन्होंने दूरदर्शन और निजी चैनलों के लिए अनेक टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्देशन किया है। प्रोहोर उनकी पहली फीचर फिल्म है।

NITI SONI GOURISARIA

Niti Sonee Gourisaria is an economics graduate from Jadavpur University, Kolkata. She is also a trained systems analyst. She has worked in advertising for several years. At Clarion Advertising, she was responsible for developing and implementing a MIS package for the company's nationwide operations. Since 1990, she has been actively involved in filmmaking and has directed a couple of documentaries.

DEBJANI GUPTA

Born in West Bengal and brought up in a culturally-inclined family, Debjani was interested in the arts from an early age. She completed her graduation from Calcutta University and has done her diploma in Rabindra Sangeet. She also studied at the Siddharth Law College, Mumbai. Prohor is her first film as a producer.

ABHIJIT CHAUDHURI

Abhijit Choudhuri, a mathematics graduate from University of Kolkata, has worked in advertising and television for over 12 years. Starting as a visualiser with Continental Advertising, Abhijit moved on to work on independent television productions. He has wirked in Clarion Advertising and HTA before starting out on his own. He has directed hundreds of commercials. *Patal Ghar* is his first feature film.

SUBHADRO CHOWDHURY

An English Honours graduate, Subhabdro Chowdhury joined FTII, Pune as direction student. In 1994 he made his final year diploma film, *Still Life*, which won the National Award in 1995. Chowdhury has since then been working as a professional director in Kolkata. He has directed several televsion shows. *Prohor* is his first feature film.

स्वस्थ मनोरंजन के लिए सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म का पुरस्कार

देवदास (हिंदी)

निर्माता को स्वर्ण कमल और 40,000 रुपये का नकद पुरस्कार भरत एस. शाह

निर्देशक को स्वर्ण कमल और 40,000 रुपये का नकद पुरस्कार संजय लीला भंसाली

विवरण

2002 में स्वस्थ मनोरंजन के लिए सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म का पुरस्कार हिंदी फिल्म देवदास को इसकी श्रेष्ठ तकनीक और लोकप्रिय साहित्य के आधुनिक चित्रण के लिए दिया गया है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

DEVDAS (Hindi)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer **BHARAT S. SHAH**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 40,000/- to the Director **SANJAY LEELA BHANSALI**

CITATION

The award for the Best Popular Film of 2002 providing Wholesome Entertainment is given to the Hindi film Devdas for its technical finesse and its modern reinterpretation of an enduring classic.

भरत शाह

भारत के एक बड़े हीरा व्यापारी और फिल्मों के अग्रिम फाइनेंसर और वितरक भरत शाह पिछले दो दशक से मनोरंजन के व्यवसाय में बड़े पैमाने पर सक्रिय हैं। वह मल्टीमीडिया चैनल बी फोर यू से भी संबद्ध हैं। उन्होंने चोरी चोरी चुपके चुपके, हम तुम्हारे हैं सनम, जंगल, कसूर, लज्जा, राजू चाचा, जिंदगी का सफर, पागलपन समेत कई फिल्में बनाई हैं। देवदास उनकी एक और चर्चित फिल्म है।

BHARAT SHAH

One of India's leading diamond merchants and a leading financier and distributor of films, Bharat Shah has been engaged in a big way with the entertainment industry for the last two decades. He is associated with B4U Mulitmedia International. He has produeced films like *Chori Chori Chupke Chupke, Hum Tumhare hain Sanam, Jungle, kasoor, Lajja, Raju Chacha, Zindagi Ka Safar, Paagalpan* among others. Devdas was another notable film produced by him.

संजय लीला भंसाली

संजय लीला भंसाली ने भारतीय के फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से संपादन में डिप्लोमा किया है। उन्होंने गुरु नटबर महाराणा से ओडिसी नृत्य में औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 1942 - ए लव स्टोरी के सह-पटकथा लेखक संजय ने इस फिल्म के गानों का दृश्यालोकन और निर्देशन किया। उनकी पहली फीचर फिल्म खामोशी - द म्यूजिकल (1996) ने फिल्म फेयर में आलोचकों की नजर में सर्वश्रेष्ठ फिल्म (क्रिटिक अवार्ड) जीता। उनकी दूसरी फिल्म थी - हम दिल दे चुके सनम (1999)। इस फिल्म की कहानी संजय ने लिखी और निर्माण और निर्देशन भी उन्होंने किया। फिल्म ने कई पुरस्कार जीते और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की गयी।

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित उनकी तीसरी फिल्म देवदास (2002) सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए कई पुरस्कार जीत चुकी है। फिल्म अनेक अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखायी गयी है। आस्कर 2003 के लिए यह भारत की तरफ से आधिकारिक प्रविष्टि थी। सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म श्रेणी में इसे बीएएफटीए की तरफ से मनोनीत किया गया।

SANJAY LEELA BHANSALI

Sanjay Leela Bhansali is a diploma-holder in editing from the Film and Television Institute of India, Pune. He has received formal classical dance training in Odissi from Guru Natbar Maharana. He visualised and directed the songs and co-wrote the screenplay of *1942 - A Love Story*. His debut feature film *Khamoshi - The Musical* (1996) won Filmfare Critics' Award for the best film. He wrote, produced and directed his second film *Hum Dil De Chuke Sanam* (1999), which won several awards and was screened at many international film festivals. His third venture *Devdas* (2002), based on the novel by Sarat Chandra Chattopadhyay, received many awards for best director. Screened at international film festivals, *Devdas* has been nominated as India's official entry for Oscars 2003 and BAFTA nomination in the 'best foreign film' category.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्ता पुरस्कार

मिस्टर एंड मिसेज अय्यर (अंग्रेजी)

निर्माता को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार एन. वेंकटेशन

विवरण
राष्ट्रीय एकता पर वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का नरगिस दत्त पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज अय्यर को दिया गया है। सांप्रदायिक तनाव के बीच दो भिन्न धर्मावलंबियों में परस्पर संबंध के मानवीय चित्रण के लिए इस फिल्म का चयन किया गया।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

MR. & MS. IYER (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **N. VENKATESAN**

CITATION
The Nargis Dutt award for the Best Feature Film of 2002 on National Integration is given to the English film *Mr & Mrs Iyer* for its humane depiction of the bonding between two individuals of different religious backgrounds in the midst of communal tension.

एन. वेंकटेशन

55 वर्षीय एन. वेंकटेशन वाणिज्य और विधि में स्नातक हैं। वर्ष 2001 में उन्होंने फिल्म निर्माण उद्योग में ट्रिपल कॉम मीडिया प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी की स्थापना की। मिस्टर एंड मिसेज अय्यर इस कंपनी द्वारा निर्मित पहली फिल्म है। फिल्म ने भारत में और विदेश में कई पुरस्कार जीते हैं।

N. VENKATESAN

55-year old N. Venkatesan is a commerce graduate and has a law degree. He launched Triple Com Media Private Limited to engage in film production in 2001. Mr and Mrs Iyer is the first film produced by the company. The film has won several awards, both in India and overseas.

मद्यनिषेध, महिला व बाल कल्याण, दहेज विरोधी, मादक द्रव्य, विकलांगों के कल्याण जैसे सामाजिक विषयों पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार

स्वराज (हिंदी)

निर्माता को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार जॉर्ज मैथ्यू

निर्देशक को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार अनवर जमाल

विवरण

वर्ष 2002 के लिए मद्यनिषेध, महिला व बाल कल्याण, दहेज विरोधी, मादक द्रव्य, विकलांगों के कल्याण जैसे सामाजिक विषयों पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हिंदी फिल्म स्वराज को दिया गया है। ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण के सशक्त चित्रण के लिए इस फिल्म का चयन किया गया।

BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC

SWARAAJ (Hindi)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **GEORGE MATHEW**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **ANWAR JAMAL**

CITATION

The award for the Best Film on Other Social Issues such as Prohibition, Women and Child welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. for 2002 is given to the Hindi film Swaraaj, for its strong and competent depiction of women's empowerment in rural India.

जॉर्ज मैथ्यू

1943 में जन्मे जॉर्ज मैथ्यू ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से सामाजिक शास्त्र में पीएच. डी. की। वह सामाजिक विज्ञान संस्थान, दिल्ली के संस्थापक निदेशक भी रहे। उन्होंने पंचायती राज प्रणाली, विकेंद्रीकरण और लिंग आधारित विषमता को दूर करने की दिशा में काफी काम किया है। भारत सरकार द्वारा गठित अनेक समितियों में वह सदस्य रहे। इस प्रतिभाशाली विद्वान ने धर्म व समाज, राजनीतिक प्रक्रिया, लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे विषयों पर आयोजित कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है। उनके लेख कई पुस्तकों और जर्नल में प्रकाशित हुए हैं।

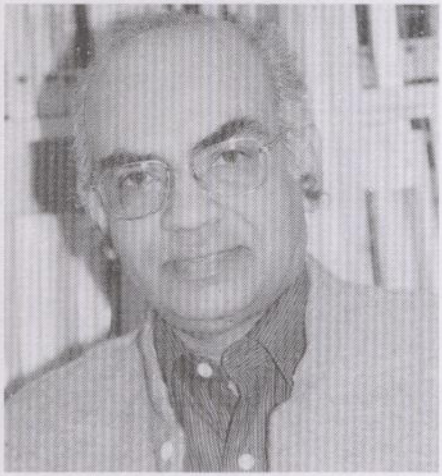

GEORGE MATHEW

A doctorate in Sociology from the Jawaharlal Nehru University, Delhi, 1943-born George Mathew is the founder Director of Institute of Social Sciences, Delhi. He has worked extensively on the Panchayati Raj system, decentralisation and gender equality. He has been a member of several committees constituted by the Indian Government. A Fulbright scholar, he has participated in international conferences on religion and society, political processes, democracy and human rights. His articles have appeared in many books and journals.

अनवर जमाल

अनवर जमाल को पहला राष्ट्रीय पुरस्कार 1992 में उनके वृत्तचित्र द कॉल आफ भागीरथी के लिए मिला। फिल्म में बड़े बांधों की प्रासंगिकता पर सवालिया निशान लगाये गये थे। उन्होंने सीमांत किसानों के भूमि अधिकार पर दो वृत्तचित्र द वूमेन बिट्राएड और सोना माटी का भी निर्माण किया। सहजो सिंह द्वारा निर्देशित इन फिल्मों को टोक्यो में विशिष्ट जूरी पुरस्कार गोल्डन कोंच और मुंबई में जूरी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। अनवर ने दूरदर्शन के लिए सांस्कृतिक विभूतियों के ऊपर धारावाहिक जिंदा इतिहास का निर्माण व निर्देशन किया। हिंदी, भाषा विज्ञान व जनसंचार में स्नातकोत्तर अनवर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के शिक्षण कार्य से भी जुड़े रहे। अनवर ने पत्रिकाओं के लिए कहानियां और स्तंभ लेखन भी किया। उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया और कुछ के आयोजन में भी सक्रिय रहे। स्वराज उनकी पहली फीचर फिल्म है।

ANWAR JAMAL

Anwar Jamal got his first National award in 1992 for his documentary film, *The Call of Bhagirathi,* which questioned the rationale of big dams. He also produced *The Women Betrayed* and *Sonamaati*, two documentaries on the land rights of the marginalised. Directed by Sehjo Singh, they won the Special Jury award in Tokyo, the Golden Conch and the Jury award in Mumbai. Anwar produced and directed *Zinda Itihaas*, a serial on living cultural legends for Doordarshan. A M.A. in Hindi, Linguistics and Mass Communications, he has taught journalism at the Aligarh Muslim University. Anwar writes short stories and columns for journals. He has participated in many international film festivals and helped in programming some. *Swaraaj* is his first feature film.

सर्वोत्तम बालफिल्म

बाजा

निर्माता को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार भारतीय बालचित्र समिति

निर्देशक को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार ए.के. बीर

विवरण

हिंदी फिल्म बाजा को एक तरुण दिमाग के वयस्क होने के यात्रा का मर्मभेदी चित्रण के लिए 2002 का सर्वश्रेष्ठ बालफिल्म पुरस्कार प्रदान किया गया है।

BEST CHILDREN'S FILM

BAAJA

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **A.K. BIR**

CITATION

The award for the Best Children's Film of 2002 is given to the Hindi film Baaja for its poignant, portrayal of the maturing of a young mind.

ए.के. बीर

सर्वश्रेष्ठ छायांकन का तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके ए.के. बीर ने आदि मीमांसा, लावण्या प्रीति, अरण्यक, शेष द्रुष्टि और नंदन का पटकथा लेखन और निर्देशन किया है। उनकी सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है और यह अनेक अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी हैं। भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से छायांकन में डिग्री हासिल करने के बाद बीर ने अनेक विज्ञापनों, लघु व वृत्तचित्रों के लिए काम किया। इनमें से कई पुरस्कृत भी हुईं। मा ओउरू, बॉर्न इक्वल और नो स्मोकिंग इनमें शामिल हैं जिन्हें अमेरिका के क्लियो अवार्ड और फ्रांस के कांस राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय साक्षरता अभियान के लिए निर्मित पूरब से सूरज उगा को आईएएएफए और आरएपीपीए पुरस्कार मिला। बीर ने रिचर्ड एटनबरो की गांधी फिल्म में पहली यूनिट के लिए कैमरामैन की जिम्मेदारी संभाली। वह 1996 में बर्लिन फिल्म समारोह में बालफिल्म खंड के लिए जूरी में रहे। ए.के. बीर फिल्म व टेलीविजन प्रशिक्षण संस्थान, पुणे में अब भी पढ़ाते हैं और सत्यजीत रे फिल्म व टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से वह अतिथि व्याख्याता के रूप में संबद्ध हैं।

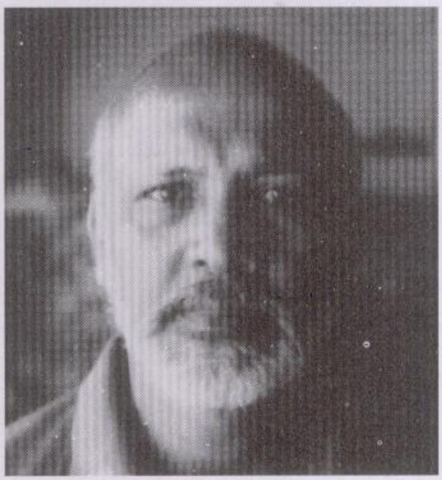

A.K. BIR

Three times recipient of the National Award for Best Cinematographer, A.K. Bir has scripted and directed *Adi Mimansa, Lavanya Preeti, Aranyaka, Shesha Drushti and Nandan.* All the films won National Awards and were screened at various international festivals. After graduating in cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune, Bir had worked in a number of advertisements, short and documentary films, many of which were awarded. *Maa Ooru, Born Equal* and *No Smoking* are among the ones that picked up the Clio award from America and the Cannes National award from France. *Purab Se Suraj Uga* for the National Literacy Mission received the IAAFA and RAPPA awards. Besides handling the camera for the first unit of Richard Attenborough's *Gandhi*, Bir has served on the jury of the children's film section at the Berlin festival in 1996. He continues to teach at FTII and Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata, as a guest lecturer.

सर्वोत्तम निर्देशन

अपर्णा सेन

निर्देशक को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार अपर्णा सेन

विवरण
मिस्टर एंड मिसेज अय्यर में मुसीबत व संघर्ष की परिस्थिति में फंसे लोगों के प्रभावी चित्रण के लिए अपर्णा सेन को वर्ष 2002 के सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

BEST DIRECTION

APARNA SEN

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **APARNA SEN**

CITATION
The award for the Best Direction of 2002 is given to Aparna Sen for her effective and subtle handling of people caught in trying and difficult times.

अपर्णा सेन

इनका जन्म फिल्म प्रेमियों के परिवार में हुआ (उनके पिता चिदानंद दासगुप्ता प्रख्यात फिल्म आलोचक थे)। अपर्णा सेन ने 1961 में सत्यजीत रे की फिल्म तीन कन्या के साथ अभिनेत्री के रूप में अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की। अब तक वह कई प्रख्यात फिल्म निर्देशकों के साथ काम कर चुकी हैं। उन्होंने तपन सिन्हा, मृणाल सेन, जेम्स आइवरी, ऋषिकेश मुखर्जी, बुद्धदेव दासगुप्ता और ऋतुपर्णो घोष के साथ काम किया है। 36 चौरंगी लेन (1981) के साथ अपर्णा ने फिल्म निर्देशन में धमाकेदार शुरुआत की। इस फिल्म का पटकथा लेखन भी उन्होंने किया। कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित इस फिल्म ने उन्हें बड़े पैमाने पर प्रसिद्धि दिलाई। बाद में उन्होंने परम (1985), सती (1989) और पिकनिक (1990) का निर्देशन किया। मिस्टर एंड मिसेज अय्यर उनकी नवीनतम फिल्म है और यह कई राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है।

APARNA SEN

Born into a family of film lovers (her father was the noted film critic Chidananda Dasgupta), Aparna Sen made her debut as an actress in 1961 in Satyajit Ray's Teen Kanya. She has since acted in films by many notable directors including Tapan Sinha, Mrinal Sen, James Ivory, Hrishikesh Mukherjee, Buddhadeb Dasgupta and Rituparno Ghosh. Sen also has directed films, making a spectacular debut with *36 Chowringhee Lane* (1981), which she also scripted. The film won her widespread acclaim and many national and international awards. Since then, she has also directed *Parama* (1985), *Sati* (1989) and *Picnic* (1990). *Mr and Mrs Iyer* (2002) is her latest venture and has won multiple national awards.

सर्वोत्तम अभिनेता

अजय देवगन

अभिनेता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार अजय देवगन

विवरण
दि लीजेंड आफ भगत सिंह में महान चरित्र को निभाने और इतिहास की चुनौतियों का बखूबी सामना करने के दृष्टिगत अजय देवगन को 2002 का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

BEST ACTOR

AJAY DEVGAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor **AJAY DEVGAN**

CITATION
The award for the Best Actor of 2002 is given to Ajay Devgan for his role in The Legend of Bhagat Singh for entering into the spirit of the legendary character and for living up to the challenge of history.

अजय देवगन

एक्शन दृश्यों के प्रख्यात संयोजक वीरू देवगन के पुत्र अजय देवगन ने 1992 में शायद सहज रूप से एक्शन हीरो के तौर पर कैरियर की शुरुआत की। फिल्मी सफर की शुरुआत में उन्होंने एक्शन प्रधान फिल्मों को प्राथमिकता दी। तब शायद ही किसी ने महसूस किया हो कि सख्त किरदार निभाने वाले इस अभिनेता के अंतर्मन में एक संवेदनशील कलाकार छिपा है। वर्ष 1998 में जख्म रिलीज होने के साथ तस्वीर के दूसरे रुख पर से परत उतरती दिखी। जख्म की भूमिका के लिए अजय की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गयी और उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। हम दिल दे चुके सनम और दिल क्या करे (1999), लज्जा और कंपनी (2001) एवं दी लीजेंड आफ भगत सिंह (2002) की भूमिकाओं के लिए भी उनकी व्यापक सराहना की गई।

आज वह केवल चर्चित अभिनेता ही नहीं बल्कि उभरते व्यवसायी भी हैं। उनकी मीडिया फर्म देवगन एंटरनेंटमेंट एंड सॉफ्टवेयर लिमिटेड से भारत के मनोरंजन के व्यवसाय में एक नयी बयार की उम्मीद बंधी है।

AJAY DEVGAN

Ajay Devgan, son of ace action coordinator Veeru Devgan, perhaps naturally started out as an action star in *Phool aur Kaante* in 1992. Early in his career when he essayed action roles, rarely did anybody realise that, beneath his tough exterior, he had nurtured the soul of a sensitive actor. This side of the actor in him started unfolding gradually when *Zakhm* was released in 1998. His performance in the film was highly appreciated and it also got him the National Award for Best Actor. He has also had notable performances in films like *Hum Dil De Chuke Sanam* and *Dil Kya Kare* (1999), *Lajja* and *Company* (both 2001) and The Legend of Bhagat Singh (2002).

Today not only is he a reigning star but is also an innovative businessman. His media firm Devgan Entertainment & Software Ltd. breathes a whiff of fresh air into the business of entertainment in India.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

कोंकणा सेन शर्मा

अभिनेत्री को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार कोंकणा सेन शर्मा

विवरण

कोंकणा को मिस्टर एंड मिसेज अय्यर में सशक्त और प्रभावी भूमिका निभाने के लिए 2002 का सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस फिल्म में उन्होंने रूढ़िवादी मानसिकता और मानवीय करुणा के दो पाटों में फंसी एक तमिल ब्राह्मण महिला का चरित्र निभाया है।

BEST ACTRESS

KONKANA SEN SHARMA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Actress **KONKANA SEN SHARMA**

CITATION
The award for the Best Actress of 2002 is given to Konkana Sen Sharma of Mr and Mrs Iyer for her strong and effective portrayal of a Tamil Brahmin woman caught between an orthodox mindset and human compassion.

कोंकणा सेन शर्मा

अपर्णा सेन की पुत्री कोंकणा को अभिनय कला विरासत में मिली। चार वर्ष की उम्र में उन्होंने दिनेम गुप्ता की इंदिरा से कैरियर की शुरुआत की। फिल्म पिकनिक में उन्होंने शबाना आजमी की पुत्री की भूमिका अदा की। बाद में वह राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्म आमोदिनी में तेरह वर्ष की सौतेली मां के किरदार में नज़र आईं। हाल में सुब्रत सेन की एक जे आचे कन्या और ऋतुपर्णो घोष की तितली में निभाये गये उनके किरदार ने आज उन्हें सर्वाधिक प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों में शुमार कर दिया है। एक जे आचे कन्या की भूमिका के लिए उन्हें बंगाली फिल्म जर्नलिस्ट एसोशिएसन के प्रतिष्ठित पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के सम्मान से नवाजा गया।

थियेटर के प्रति रुझान की वजह से कोंकणा ने अनेक नाटकों में अभिनय किया है। इनमें मच एडो एबाउट नौटंकी और ए मिडसमर नाइट ड्रीम शामिल हैं। बंग्ला फिल्मों से हटकर पहली बार उन्होंने मिस्टर एंड मिसेज अय्यर में एक रूढ़िवादी तमिल गृहिणी की भूमिका अदा की है।

KONKANA SEN SHARMA

Acting came naturally to Aparna Sen's daughter Konkana. Starting her career at the age of four with Dinem Gupta's *Indira*, she went on to play Shabana Azmi's daughter in *Picnic* and a thirteen-year-old stepmother in the National Award winning film *Amodini*. Her recent roles in Subrata Sen's *Ek Je Aache Kanya* and Rituparno Ghosh's *Titli* have earned her critical acclaim as one of the most talented actresses of today. She received the prestigious Bengali Film Journalist's Association Award as best actress for her performance in *Ek Je Aache Kanya.*

Her passion for theatre has led Konkana to work in various plays, such as *Much Ado About Nautanki* and *A Midsummer Night's Dream*. With *Mr. And Mrs. Iyer*, she made her debut outside Bengali cinema by playing the role of a married orthodox Tamil housewife.

सर्वोत्तम सह अभिनेता

वी. चंद्रशेखर

सह अभिनेता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार वी. चंद्रशेखर

विवरण
तमिल फिल्म नन्बा नन्बा में अपाहिज की मर्मस्पर्शी भूमिका के लिए वी. चंद्रशेखर को वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

BEST SUPPORTING ACTOR

V. CHANDRASEKHAR

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actor **V. CHANDRASEKHAR**

CITATION
The award for the Best Supporting Actor of 2002 is given to Chandrasekhar for his touching and absorbing portrayal of a physically challenged man in the Tamil film Nanba Nanba.

वी. चंद्रशेखर

तमिल सिनेमा के प्रख्यात कलाकार वी. चंद्रशेखर पिछले 25 वर्षों से अधिक समय से अभिनय की दुनिया से जुड़े रहे हैं। अनगिनत चरित्र भूमिकाएं अदा करने वाले चंद्रशेखर की अदाकारी की प्रशंसा होती रही है। तमिलनाडु सरकार ने उनकी भूमिकाओं के लिए कई बार उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है। चंद्रशेखर जनसेवा में भी गहरी रुचि रखते हैं और विभिन्न परियोजनाओं में वह सक्रिय हैं।

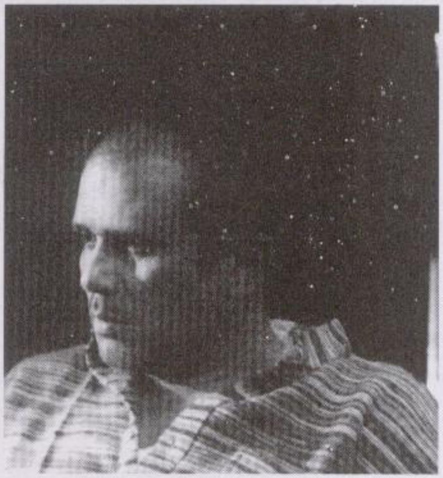

V. CHANDRASEKHAR

A veteran actor of Tamil cinema, he has been acting for over 25 years. He has played numerous character roles and has received recognition for them. The Tamil Nadu Government has given him awards several times for his roles. He also is very interested in public service and is actively involved in various projects.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

राखी गुलझार

सह अभिनेत्री को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार **राखी गुलझार**

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री का पुरस्कार राखी को फिल्म शुभो मुहूर्त में निभाये गये उनके किरदार के लिए प्रदान किया गया। इस फिल्म में उन्होंने सामान्य मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि के बावजूद एक जासूस की सशक्त और असाधारण भूमिका अदा की।

BEST SUPPORTING ACTRESS

RAAKHEE GULZAR

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actress **RAAKHEE GULZAR**

CITATION
The award for the Best Supporting Actress of 2002 goes to Raakhee Gulzar in Shubho Muhurat for her finely balanced portrayal of an enigmatic and unlikely detective against a simple middle class background.

राखी गुलज़ार

पूर्व नायिका राखी ने भारतीय फिल्मों में कई बहुत ही यादगार किरदार निभाये हैं। वर्ष 1947 में जन्मी इस तारिका ने कैरियर के शिखर के दौरान एक निर्भीक व उन्मुक्त अभिनेत्री के रूप में अपनी पहचान बनाई थी। लीक से हटकर मिली भूमिकाओं को निभाने में भी उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। अभिनय जीवन की शुरुआत उन्होंने बंगला फिल्मों से की। फिर वह मुंबई आ गईं जहां उन्हें जीवन मृत्यु (1970) में पहला ब्रेक मिला। फिर सफलता के सफर के प्रारंभ में उन्हें रेशमा और शेरा और शर्मीली (1971)जैसी फिल्में मिलीं। गीतकार-निर्देशक गुलजार से वैवाहिक संबंध विच्छेद के पश्चात फिल्म कभी कभी (1976) की सफलता से उन्होंने फिल्मी दुनिया में वापस अपनी जगह बना ली। कई सफल व्यावसायिक फिल्मों में काम करने के साथ ही उन्होंने कलात्मक फिल्में जैसे 27 डाउन और पैरोमा (1985) में अभिनय किया। कैरियर के बाद के दिनों में उन्होंने अन्याय के खिलाफ प्रतिशोध की ज्वाला में धधकने वाली मां का किरदार निभाया। इन भूमिकाओं के लिए उनकी सराहना भी हुई। हालांकि अब भी वह छिटपुट भूमिकाएं करती रही हैं लेकिन उन्हें मुख्य रूप से 1970 व 80 के दशक के निभाये गये किरदारों की वजह से याद किया जाता है।

RAAKHEE GULZAR

Former lead actress Raakhee Gulzar has played some of the most memorable characters in Indian cinema. This 1947-born star was known in her heyday as fiercely independent actress who did not hesitate to take on roles that strayed from the beaten track. She started acting in Bengali films and then shifted from Mumbai and got her break with *Jeevan Mrityu* (1970). Success followed in films like *Reshma Aur Shera* and *Sharmilee* (1971). After a brief hiatus, she was back with successes like *Kabhie Kabhie* (1976). Though many commercially successful films followed, she was also simulataneously part of art house cinema like *27 Down* and *Paroma* (1985). Later in her career, she also portrayed the wronged and vengeful mother to great acclaim. Though she still acts sporadically, she is most remembered for her roles in the 1970s and 80s.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

श्वेता प्रसाद और कीर्तना

प्रत्येक बाल कलाकार को रजत कमल और 5000 रुपये का नकद पुरस्कार **श्वेता प्रसाद और कीर्तना**

विवरण
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार का वर्ष 2002 का पुरस्कार श्वेता प्रसाद को हिंदी फिल्म मकड़ी और कीर्तना को तमिल फिल्म कन्नथिल मुथामिथाल के लिए संयुक्त रूप से दिया गया है। श्वेता प्रसाद को फिल्म मकड़ी में जुड़वां बहनों की स्वच्छंद व जीवंत भूमिका के लिए और कीर्तना को फिल्म कन्नथिल मुथामिथाल में मां की खोज करती एक लड़की की मर्मस्पर्शी भूमिका के लिए पुरस्कृत किया गया।

BEST CHILD ARTIST

SHWETA PRASAD AND KEERTANA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Child Artistes **SHWETA PRASAD AND KEERTANA**

CITATION
The award for the Best Child Artiste of 2002 is given jointly to Shweta Prasad in the Hindi film Makdee for her spontaneous and lively portrayal of twin sisters and to Keertana in the Tamil film Kannathil Muthamittal for her heart vending portrayal of a girl in search of her mother.

श्वेता प्रसाद

11 वर्षीय मुंबई वासी श्वेता प्रसाद ने कई टेलीविजन धारावाहिकों जैसे कहानी घर घर की, कुटुंब, करिश्मा का करिश्मा और दी मैजिक मेकअप बॉक्स में काम किया। मकड़ी में उनके अभिनय के लिए उन्हें काफी सराहा गया है और इस फिल्म के लिए वह कई पुरस्कार भी जीत चुकी हैं।

SHWETA PRASAD

11-year-old Mumbai-based Shweta Prasad has acted in a number of programmes for television – *Kahaani Ghar Ghar Ki, Kutumbb, Karishma Kaa Karishma* and the *Magic Make-Up Box.* Her role in *Makdee* was widely appreciated, and for which she has already won a number of awards.

कीर्तना

11 वर्षीय चेन्नई वासी कीर्तना को उनकी पहली फिल्म कन्नथिल मुथामिथाल के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इससे पहले वह राष्ट्रीय एकता पर आधारित वीडियो एलबम में काम कर चुकी हैं। इस एलबम में प्रधानमंत्री भी दिखाये गये हैं।

KEERTANA

This 11-year-old Chennai-based young actress won the National Award for her debut film, *Kannathil Muthamittal*. She has earlier worked in a video album on national integration that also featured the Prime Minister.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

उदित नारायण

पार्श्वगायक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार उदित नारायण

विवरण

उदित नारायण को वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायन का पुरस्कार प्रदान किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार फिल्म जिंदगी खूबसूरत है के टाइटिल गीत छोटे-छोटे सपने के लिए दिया गया है।

BEST MALE PLAYBACK SINGER

UDIT NARAYAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Male Playback Singer **UDIT NARAYAN**

CITATION

The award for the Best Male Playback Singer of 2002 is given to Udit Narayan for his melodious rendering of the title song *Chhote chhote sapne* in the Hindi film *Zindagi Khoobsurat Hai*.

उदित नारायण

आमिर खान के लिए मुख्य रूप से पार्श्वगायन करने वाले नेपाल में जन्मे उदित नारायण को पहली प्रमुख सफलता वर्ष 1988 में फिल्म कयामत से कयामत तक से मिली। इस फिल्म की सफलता के साथ उदित नारायण ने फिल्म संगीत के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। गायन में विधिवत प्रशिक्षित उदित करीब 15 भाषाओं में हजारों गीतों को अपनी आवाज दे चुके हैं। बॉलीवुड में पदार्पण से पूर्व वह रेडियो नेपाल के लिए गाते रहे हैं। फिल्मों से बाहर भी सक्रिय रहे उदित नारायण अब तक करीब 750 स्टेज शो कर चुके हैं। दो फिल्मों में अभिनय करने के अलावा उन्होंने अपने गीतों के एलबम भी जारी किये हैं। सभी तरह के गीतों के लिए पार्श्वगायन करने वाले उदित नारायण कई पुरस्कार जीत चुके हैं।

UDIT NARAYAN

Best known as the singing voice of Aamir Khan, Nepal-born Udit Narayan has been a fixture on the Indian music scene right from his first major success, *Qayamat Se Qayamat Tak* in 1988. A trained musician, Narayan has already sung thousands of songs in about 15 languages. Before entering Bollywood, he sang on Radio Nepal. Prolific outside films too, he has already done about 750 stage shows and released his music albums besides acting in two Nepali films. He has won numerous awards for his versatile singing.

सर्वोत्तम पार्श्वगायिका

श्रेया घोषाल

पार्श्वगायिका को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार श्रेया घोषाल

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायिका का पुरस्कार श्रेया घोषाल को हिंदी फिल्म देवदास में बैरी पिया के दिलकश गायन के लिए दिया गया है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

SHREYA GHOSAL

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to best Female Playback Singer **SHREYA GHOSAL**

CITATION
The award for the Best Female Playback Singer of 2002 is given to Shreya Ghosal for her soulful rendering of the song *Bairi piya* for the Hindi film Devdas.

श्रेया घोषाल

19 वर्षीया श्रेया मुंबई के एक कालेज की छात्रा हैं। वह बचपन से ही गाना गाती रही हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। सुगम संगीत में प्रशिक्षित होने के साथ ही उन्होंने शास्त्रीय संगीत में शिक्षा जारी रखी है। टेलीविजन कार्यक्रम टीवीएस सा रे गा मा के जरिये वह अपनी पहचान बनाने में सफल हुईं। संजय लीला भंसाली ने उन्हें इस कार्यक्रम में गाते सुना और अपनी फिल्म देवदास में पार्श्वगायन का उन्हें अवसर दिया। इस फिल्म के गीत सिलसिला, बैरी पिया और डोला रे को जबर्दस्त प्रसिद्धि मिली। अनेक पुरस्कारों के लिए यह गीत मनोनीत हुए और ज्यादातर को जीतने में कामयाब भी रहे।

देवदास के पश्चात उनकी दूसरी प्रमुख फिल्म रही जिस्म। इस फिल्म के पार्श्वगायन के लिए भी उन्हें संगीतप्रेमियों और आलोचकों की सराहना मिली है। हिंदी फिल्मों के लिए पार्श्वगायन के अलावा वह तेलुगू, तमिल, कन्नड़ और बंग्ला जैसी अनेक क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों के लिए लगातार गा रही हैं। उन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं और कई प्रतियोगिताओं के लिए उनके गाये गीतों को मनोनीत किया जाता रहा है। इनमें ज़ी बॉलीवुड म्यूजिक अवार्ड 2002, माणिकचंद फिंल्म फेयर अवार्ड और आर.डी. बर्मन अवार्ड, चतुर्थ आईआईएफए अवार्ड 2003 और हीरो होंडा स्टारडस्ट अवार्ड 2003 शामिल हैं।

SHREYA GHOSAL

Nineteen-year-old Shreya Ghosal is a college student in Mumbai. Shreya started singing since her childhood, training in Hindustani Classical music. She has also trained in light music and continues to learn classical music. She became a well-known figure through TVS Sa Re Ga Ma. Sanjay Leela Bhansali spotted her in this TV programme and gave her the break in Hindi playback in *Devdas*. The songs 'Silsila', 'Bairi Piya' and 'Dola Re' became immensely popular.

After *Devdas*, her major work was *Jism* which has also been appreciated by music lovers and critics. Besides Hindi playback, she is regularly singing for regional films in various languages like Telugu, Tamil, Kannada, and Bengali. She has many nominations and awards to her credit.

सर्वोत्तम छायांकन

अभिक मुखोपाध्याय

कैमरामैन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार अभिक मुखोपाध्याय

फिल्म की लेबोरेट्री प्रोसेसिंग के लिए रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार रेनबो कलर लैब, हैदराबाद

विवरण

फिल्म की कहानी के अनुरूप विशिष्ट और प्रभावशाली दृश्य तैयार करने में सिद्धहस्त अभिक मुखोपाध्याय को वर्ष 2002 के सर्वश्रेष्ठ छायांकन का पुरस्कार दिया गया है।

BEST CINEMATOGRAPHY

ABHIK MUKHOPADHYAYA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the cameraman **ABHIK MUKHOPADHYAYA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to laboratory processing the film **RAINBOW COLOUR LAB, HYDERABAD.**

CITATION

The award for Best Cinematography of 2002 is given to Abhik Mukhopadhyaya for creating the distinctive and elegant visual ambience of the film that is excellently in tune with the mood of the story.

अभिक मुखोपाध्याय

कलकत्ता निवासी अभिक मुखोपाध्याय छायांकन और टेलीविजन कैमरामैन की दुनिया में शीर्षस्थ नामों में से एक हैं। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई तरह के प्रयोजनों के लिये वह अनुबंधित किये जाते हैं। उन्होंने फिल्म व टेलीविजन संस्थान, पुणे से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। तब से वह फीचर व अन्य तरह की फिल्मों के लिए लगातार काम करते रहे हैं। उनके सर्वाधिक प्रतिष्ठित अनुबंधों में ऋतुपर्णो घोष द्वारा निर्देशित आशुख, उत्सब व चोखेर बाली, अपर्णा सेन द्वारा निर्देशित पारोमितर एक दिन और नीतिश राय द्वारा निर्देशित हार्टबीट जैसी फिल्में शामिल हैं। उन्होंने गैनेथ गिब्ले द्वारा निर्देशित हालीवुड की फिल्म नाइटफाल में भी काम किया है।

ABHIK MUKHOPADHYAYA

Calcutta based Abhik Mukhopadhyaya is one of the most accomplished cinematographers and television cameramen operating on national and international assignments from the city. He trained at the Film and Television Institute, Pune, and since then has been working regularly on feature and other films. Amongst his most prestigious assignments have been films like *Asookh, Utsab, Chokher Bali*, all directed by Rituparno Ghosh, *Paromitar Ek Din*, directed by Aparna Sen and *Heart Beat* directed by Nitish Roy. He has also worked on the Hollywood film, *Nightfall*, directed by Gwyneth Gibly.

सर्वोत्तम पटकथा

अपर्णा सेन

पटकथा लेखक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार अपर्णा सेन

विवरण
सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखन के लिए वर्ष 2002 का राष्ट्रीय पुरस्कार अपर्णा सेन को प्रदान किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज अय्यर में संघर्ष के काल में संदेहास्पद रिश्तों के बीच के अनर्गल प्रलाप को सुस्पष्ट शब्दार्थ देने के लिए दिया गया है।

BEST SCREENPLAY

APARNA SEN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Screenplay Writer **APARNA SEN**

CITATION
The award for the Best Screenplay for 2002 is given to Aparna Sen for her English film Mr and Mrs Iyer for its fluid narration of the nuances of an ambiguous relationship in troubled times.

अपर्णा सेन

इनका जन्म फिल्म प्रेमियों के परिवार में हुआ (उनके पिता चिदानंद दासगुप्ता प्रख्यात फिल्म आलोचक थे)। अपर्णा सेन ने 1961 में सत्यजीत रे की फिल्म तीन कन्या के साथ अभिनेत्री के रूप में अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की। अब तक वह कई प्रख्यात फिल्म निर्देशकों के साथ काम कर चुकी हैं। उन्होंने तपन सिन्हा, मृणाल सेन, जेम्स आइवरी, ऋषिकेश मुखर्ज़ी, बुद्धदेव दासगुप्ता और ऋतुपर्णो घोष के साथ काम किया है। 36 चौरंगी लेन (1981) के साथ अपर्णा ने फिल्म निर्देशन में धमाकेदार शुरुआत की। इस फिल्म का पटकथा लेखन भी उन्होंने किया। कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित इस फिल्म ने उन्हें बड़े पैमाने पर प्रसिद्धि दिलाई। बाद में उन्होंने परम (1985), सती (1989) और पिकनिक (1990) का निर्देशन किया। मिस्टर एंड मिसेज अय्यर उनकी नवीनतम फिल्म है और यह कई राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है।

APARNA SEN

Born into a family of film lovers (her father was the noted film critic Chidananda Dasgupta), Aparna Sen made her debut as an actress in 1961 in Satyajit Ray's Teen Kanya. She has since acted in films by many notable directors including Tapan Sinha, Mrinal Sen, James Ivory, Hrishikesh Mukherjee, Buddhadeb Dasgupta and Rituparno Ghosh. Sen also has directed films, making a spectacular debut with *36 Chowringhee Lane* (1981), which she also scripted. The film won her widespread acclaim and many national and international awards. Since then, she has also directed *Parama* (1985), *Sati* (1989) and *Picnic* (1990). *Mr and Mrs Iyer* (2002) is her latest venture and has won multiple national awards.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

ए.एस. लक्ष्मी नारायणन और एच. श्रीधर

अंतिम मिश्रित ट्रैक के लिए प्रत्येक री-रिकार्डिस्ट को रजत कमल और 5000 रुपये का नकद पुरस्कार **ए.एस. लक्ष्मी नारायणन और एच. श्रीधर**

विवरण
तमिल फिल्म कन्नाथिल मुथामित्तल में नाटकीय संघर्ष को जीवंत कर देने वाले संगीत के ध्वनि आलेखन के लिए ए.एस. लक्ष्मी नारायणन एवं एच. श्रीधर को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन का वर्ष 2002 का राष्ट्रीय पुरस्कार संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है।

BEST AUDIOGRAPHY

A.S. LAXMI NARAYANAN and H. SRIDHAR

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Re-recordists of the final mixed track **A.S. LAKSHMI NARAYANAN and H. SRIDHAR**

CITATION
The award for the Best Audiography of 2002 is given to A.S. Laxmi Narayanan and H. Sridhar for the Tamil film *Kannathil Muthamittal* for creating a soundscape that heightens the dramatic conflicts of the story.

ए.एस. लक्ष्मी नारायणन

1957 में जन्मे ए.एस. लक्ष्मी नारायणन ने वर्ष 1980 में मद्रास फिल्म व टीवी इंस्टिट्यूट, अडयार से साउंड रिकार्डिंग और साउंड इंजीनियर की डिग्री हासिल की। उन्होंने न्यूयार्क में भी छह महीने का प्रशिक्षण लिया। साउंड इंजीनियर के रूप में वह पिछले 20 वर्षों से दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग में सक्रिय रहे हैं। वह फीचर फिल्मों, लघु फिल्मों, विज्ञापनों और वृत्तचित्रों के लिए निर्माण पश्चात साउंड रिकार्डिंग की व्यावसायिक सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। उन्हें 1995 में कादलान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें मिले पुरस्कारों में वानप्रस्थम (2000) के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार शामिल है। वह भारतन, जी. अरविंदन, मणि रत्नम और भारती राजा जैसे प्रख्यात निर्देशकों के साथ काम कर चुके हैं।

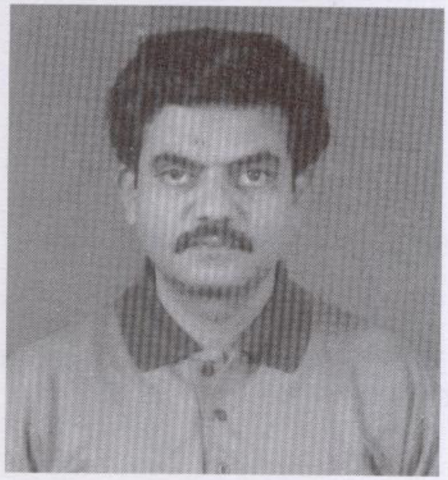

A.S. LAXMI NARAYANAN

1957-born AS Lakshmi Narayanan graduated from Madras Film and TV Institute, Adayar, as a sound recording and sound engineer in 1980. he also trained for six months in New York. As a sound designer, he has served in the South Indian Film Industry for the past 20 years. He has been handling professional audio post-production for feature films, short films, commercials and documentaries. He has received the National Award for *Kaadhalan* in 1995 and state awards for *Vaanaprashtam* (2000) among other awards. He has worked with leading directors like Bharathan, G. Aravindan, Mani Rathnam and Bharathi Raja.

एच. श्रीधर

एच. श्रीधर गणित विषय में स्नातक हैं। इलेक्ट्रॉनिक विषय में इनकी गहरी रुचि रही है। श्रीधर ने संगीत का औपचारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। वर्ष 1988 में उन्होंने साउंड इंजीनियर के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की। अब तक वह 200 से अधिक फिल्मों के लिए काम कर चुके हैं। वह श्याम बेनेगल, मणि रत्नम, सुभाष घई, के. बालाचंदर, ए.आर. रहमान समेत कई अन्य भारतीय सिनेमा की शीर्षस्थ विभूतियों के साथ काम कर चुके हैं। हाल में बांबे ड्रीम्स के लिए एंड्रयू लॉयड के साथ काम करने के अलावा वह जॉर्ज हैरीसन व रविशंकर जैसी अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध हस्तियों के लिए अलबम निकाल चुके हैं।

H. SRIDHAR

A mathematics graduate with a keen interest in electronics and formally trained in music, H. Sridhar started out as a sound engineer in 1988. He has since engineered over 200 films and worked with some of the biggest names of Indian cinema like Shyam Benegal, Mani Rathnam, Subhash Ghai, K Balachandar, A.R. Rahman and many others. He worked on landmark films like *Rangeela*, which was the first Dolby stereo film to have post-production in India. He has also engineered and mixed albums for international music stars like George Harrison and Ravi Shankar, besides recently working with Andrew Lloyd Webber on *Bombay Dreams*.

सर्वोत्तम संपादन

ए. श्रीकर प्रसाद

संपादक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार **ए. श्रीकर प्रसाद**

विवरण

वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ संपादन का राष्ट्रीय पुरस्कार तमिल फिल्म कन्नाथिल मुथामित्तल में नाटकीय संघर्ष के असाधारण निरुपण के लिए ए. श्रीकर प्रसाद को प्रदान किया गया है।

BEST EDITING

A. SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor **A. SREEKAR PRASAD**

CITATION

The award for Best Editing for the year 2002 is given to A. Sreekar Prasad for the Tamil film *Kannathil Muthamittal* for creating a soundscape that heightens the dramatic conflicts of the story.

ए. श्रीकर प्रसाद

ए. श्रीकर प्रसाद का जन्म 1963 में चेन्नई में हुआ। उन्होंने मद्रास यूनिवर्सिटी से साहित्य में स्नातक की डिग्री हासिल की। संपादन कला का प्रशिक्षण उन्होंने अपने पिता प्रख्यात संपादक ए. संजीवी से लिया। करीब 20 फिल्मों में उन्होंने अपने पिता के सहयोगी के रूप में कार्य किया। बाद में उन्होंने स्वतंत्र रूप से संपादन की सुविधायुक्त स्टूडियो तैयार किया। नवीनतम तकनीक से सुसज्जित इस स्टूडियो में डिजिटल नॉन लीनियर एडिटिंग की भी सुविधा है। केरल से कश्मीर तक विभिन्न फिल्मकारों के लिए उन्होंने 150 से अधिक फीचर फिल्मों और विज्ञापनों व वृत्तचित्रों के संपादन में अपनी सेवाएं दीं। वह मणि रत्नम और संतोष शिवम समेत कई अन्य फिल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं।

उन्हें राख (1988), असमिया फीचर फिल्म राग बिराग (1996), अंग्रेजी वृत्तचित्र दी टेरोरिस्ट (1997), तमिल फिल्म नौका चैरीत्रमु (1996) और मलयालम फिल्म वानप्रस्थम (1999) के लिए सर्वश्रेष्ठ संपादन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें व्यूहम (1991), योद्धा (1992), पीटर स्कॉट (1995), शेषम (2001) और कन्नेजहट्टी पोट्टूम थोट्टू (2000) के लिए भी विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

A. SREEKAR PRASAD

Born in 1963 in Chennai, he graduated in literature from the University of Madras. He learned editing from his father, A. Sanjivi, a reputed editor. He worked as an associate with his father in 20 feature films. He started his own editing set up and has independently edited documentaries, advertisements and more than 150 feature films for filmmakers from Kerala to Kashmir. He is credited to have worked with Mani Rathnam and Santosh Sivan among others.

He got the National Award for best editing for *Raakh* (1988), the Assamese feature film *Raag Birag* (1996), the English documentary film *Nauka Charitramu* (1996), the Tamil film *The Terrorist* (1997) and the Malayalam film *Vaanaprastham* (1999). He also got awards for *Vyuham* (1991), *Yodha* (1992), *Peter Scot* (1995), *Sesham* (2001) and *Kannezhutti Pottum Thottu* (2000).

सर्वोत्तम कला निर्देशन

नितीन चंद्रकांत देसाई

कला निर्देशक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार **नितीन चंद्रकांत देसाई**

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार नीतीन चंद्रकांत देसाई को प्रदान किया गया है। नीतीन को यह पुरस्कार हिंदी फिल्म देवदास में रूमानी नाटक के लिए प्रभावशाली दृश्य तैयार करने के लिए दिया गया।

BEST ART DIRECTION

NITIN CHANDRAKANT DESAI

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Art Director **NITIN CHANDRAKANT DESAI**

CITATION
The award for the Best Art Direction of 2002 is given to Nitin Chandrakant Desai for the Hindi film *Devdas* for creating an evocative visual setting for the romantic drama.

नितीन चंद्रकांत देसाई

बालीवुड के सर्वाधिक चर्चित कला निर्देशकों में से एक, नितीन चंद्रकांत देसाई ने जे.जे. स्कूल आफ आर्ट्स में प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिल्म चाणक्य से उन्होंने स्वतंत्र रूप से कला निर्देशन के सफर की शुरुआत की। बाद में उन्होंने तमस और डिस्कवरी आफ इंडिया के लिए भी काम किया। नीतिन ने अनेक अंतरराष्ट्रीय फ़िल्मों के लिए भी कला निर्देशन किया है। इनमें सच ए लांग जर्नी, होली स्मोक, कामसूत्र, सलाम बांबे और जंगल बुक शामिल हैं। उनकी कुछ प्रमुख भारतीय फिल्में हैं - परिंदा, 1942-ए लव स्टोरी, इश्क, जोश, हम दिल दे चुके सनम, देवदास और मिशन कश्मीर।

NITIN CHANDRAKANT DESAI

One of Bollywood's best-known art directors, Nitin Chandrakant Desai trained at the J. J. School of Art. He started providing art direction independently with films like *Chanakya*, following it up with *Tamas* and *Discovery of India*. He has provided art direction for a number of international films like *Such A Long Journey, Holy Smoke, Kamasutra, Salaam Bombay* and *Jungle Book*. His work in major Indian films include *Parinda, 1942 - A Love Story, Ishq, Josh, Hum Dil De Chuke Sanam, Devdas* and *Mission Kashmir*.

नितीन चंद्रकांत देसाई

बालीवुड के सर्वाधिक चर्चित कला निर्देशकों में से एक, नितीन चंद्रकांत देसाई ने जे.जे. स्कूल आफ आर्ट्स में प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिल्म चाणक्य से उन्होंने स्वतंत्र रूप से कला निर्देशन के सफर की शुरुआत की। बाद में उन्होंने तमस और डिस्कवरी आफ इंडिया के लिए भी काम किया। नीतिन ने अनेक अंतरराष्ट्रीय फ़िल्मों के लिए भी कला निर्देशन किया है। इनमें सच ए लांग जर्नी, होली स्मोक, कामसूत्र, सलाम बांबे और जंगल बुक शामिल हैं। उनकी कुछ प्रमुख भारतीय फिल्में हैं - परिंदा, 1942-ए लव स्टोरी, इश्क, जोश, हम दिल दे चुके सनम, देवदास और मिशन कश्मीर।

NITIN CHANDRAKANT DESAI

One of Bollywood's best-known art directors, Nitin Chandrakant Desai trained at the J. J. School of Art. He started providing art direction independently with films like *Chanakya*, following it up with *Tamas* and *Discovery of India*. He has provided art direction for a number of international films like *Such A Long Journey, Holy Smoke, Kamasutra, Salaam Bombay* and *Jungle Book*. His work in major Indian films include *Parinda, 1942 - A Love Story, Ishq, Josh, Hum Dil De Chuke Sanam, Devdas* and *Mission Kashmir*.

सर्वोत्तम वेशभूषा

नीता लुल्ला, अबु जानी, संदीप खोसला और रेजा शरीफी

प्रत्येक डिजाइनर को रजत कमल और 2500 रुपये का नकद पुरस्कार **नीता लुल्ला, अबु जानी, संदीप खोसला और रेजा शरीफी**

विवरण
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा की डिजाइन के लिए वर्ष 2002 का राष्ट्रीय पुरस्कार नीता लुल्ला, अबु जानी, संदीप खोसला और रेजा शरीफी को हिंदी फिल्म देवदास में उनके काम के लिए दिया गया है। गहन अनुसंधान, अभिनव प्रयोग के साथ वेशभूषा की डिजाइनिंग की बदौलत फिल्म देवदास के विभिन्न चरित्रों को जीवंत तस्वीर दे पाने में यह कामयाब रहे।

BEST COSTUME DESIGN

NEETA LULLA, ABU JANI, SANDEEP KHOSLA and REZA SHARIFI

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 2,500/- each to Costume Designers **NEETA LULLA, ABU JANI, SANDEEP KHOSLA AND REZA SHARIFI**

CITATION
The award for the Best Costume Designer of 2002 is given to Neeta Lulla, Abu Jani, Sandeep Khosla and Reza Sharifi for the Hindi film *Devdas* for their researched, inventive, designing of costumes enhancing the persona of the various characters.

नीता लुल्ला

बालीवुड की अग्रणी डिजाइनरों में से एक नीता लुल्ला ने फिल्म उद्योग में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। कैरियर की शुरुआत में उन्होंने जीन नोरोगी के साथ सहायक नृत्य निर्देशक के तौर पर काम किया। फैशन डिजाइनिंग में उन्हें 15 वर्षों का अनुभव है। वह बालीवुड फैशन अवार्ड, बिलीव शो, ड्रीम गर्ल्स जैसे शो भी कर चुकी हैं। नीता लुल्ला ने कई अभिनेत्रियों के साथ काम किया है। उन्हें मिले पुरस्कारों में लम्हें (1992) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, देवदास (2002) के लिए आईआईएफए अवार्ड, डिजाइनर आफ दि इयर अवार्ड, और वूमेन एचीवर अवार्ड -2000 शामिल है।

अबु जानी-संदीप खोसला

हालांकि उम्र का बड़ा फासला उनके बीच है लेकिन जहां तक इनकी जोड़ी का सवाल है अबू जानी और संदीप खोसला पिछले 15 सालों में अपनी अनूठी डिजाइनों के जरिये फैशन की दुनिया को लगातार अपने सम्मोहन पाश में जकड़े हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों से इस जोड़ी ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में डिजाइन किये हुए विशिष्ट शाल उतारे हैं। परिवर्तन की खोज में वर्ष 1993 में उन्होंने डिजाइनर फर्नीचर का व्यापार शुरू किया और जल्दी ही एक विशिष्ट वर्ग को अपना मुरीद बना लिया। अबू और संदीप के लिए सौंदर्य को नये सिरे से निखारना और उस उद्देश्य की प्रवृत्ति धर्म की भांति है। इस सिलसिले में उन्होंने अनछुए इलाकों और गांवों की यात्राएं की हैं। चिकन और ज़रदोजी की परंपरागत कला को नया रूप देने के लिए अबू व संदीप के कार्य की विशिष्ट पहचान बन गयी है।

रेजा शरीफी

पिछले 13 वर्षों से रेजा शरीफी एक पेशेवर फैशन डिजाइनर के रूप में फिल्म उद्योग में सक्रिय हैं। उन्होंने माधुरी दीक्षित, कमल हसन, सुश्मिता सेन, प्रियंका चोपड़ा, शिल्पा शेट्टी, संजय लीला भंसाली, समीरा रेड्डी, अंतरा माली, रविना टंडन, उर्मिला मातोंडकर, रानी मुखर्जी और सैफ अली खान के लिए वेशभूषाएं तैयार की हैं। मुंबई विश्वविद्यालय से भू-विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के पश्चात उन्होंने जे.डी. इंस्टिट्यूट आफ फैशन टेक्नोलॉजी से फैशन डिजाइनिंग में डिप्लोमा किया।

NEETA LULLA

One of the leading designers for Bollywood film, Neeta Lulla has created her own niche in the film industry. She started off as an assistant choreographer to Jeanne Naorogi and has an experience of 15 years in the field. She has done several shows for Bollywood and has worked with leading stars. She has won National Award for *Lamhe* (1992), IIFA award for *Devdas* (2002) and Designer of the Year 2001 award.

ABU JANI-SANDEEP KHOSLA

Age may set them apart but Abu Jani and Sandeep Khosla as a team have captivated the world of fashion with their unique creation for over 15 years. The duo is known for dressing India's best-known faces as well as international personalities. Over the years, their label has made its mark internationally beginning with the range of exclusive shawls. A desire for change led to the creation of an imaginative furniture line in 1993 that has proved popular with a discerning clientele. For them, the pursuit and regeneration of beauty is something of a religion. In this quest, they have travelled to long-forgotten regions and villages. The Abu-Sandeep label is distinguished for reinventing traditional Indian arts of *chikan* and *zardozi*.

REZA SHARIFI

A professional fashion designer who has been closely associated with films for the last 13 years, Reza's client list includes names like Madhuri Dixit and Kamal Hasan among others. A post-graduate in geology from Bombay University, he also holds a diploma in Fashion Designing from the J.D. Institute of Fashion Technology.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

ए. आर. रहमान

संगीतकार (गीत और पार्श्वसंगीत) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार ए.आर. रहमान

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन का पुरस्कार ए.आर. रहमान को तमिल फिल्म कन्नथिल मुथामिथल के मौलिक संगीत के लिए प्रदान किया गया है। इस फिल्म के गीतों के जरिये उन्होंने सांस्कृतिक संघर्ष और व्यक्तिगत परिवेदना को पुरजोर तरीके से उभारा है।

BEST MUSIC DIRECTION

A.R. RAHMAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director (songs and background music score) **A.R. RAHMAN**

CITATION

The award for the Best Music Direction of 2002 is given to A R Rahman for the Tamil film Kannathil Muthamittal for his original musical score highlighting the cultural conflicts and personal anguish in the story.

ए. आर. रहमान

भारत के सर्वप्रसिद्ध संगीत निर्देशकों में से एक ए.आर. रहमान संगीत की दुनिया में धूमकेतु की भांति चमके। संगीत की समझ उन्हें विरासत में मिली। रहमान ने कम उम्र में संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी। उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज आफ म्यूजिक, लंदन से भी संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपने कठिन परिश्रम की बदौलत रहमान ने जल्दी ही भारत की युवा पीढ़ी कें पसंदीदा संगीतकार के रूप में अलग पहचान कायम कर ली।

मणि रत्नम से अचानक हुई मुलाकात के बाद ए.आर. रहमान को फिल्म रोज़ा के एक गीत तमीजा तमीजा के लिए संगीत देने का मौका मिला। इस गीत ने धूम मचा दी। तब से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके साथ काम करने के लिए उत्सुक लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। उनके प्रसिद्ध गीतों में वंदेमातरम शामिल है। इस गीत को उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में तैयार किया। इसके अलावा स्पीरिट आफ फ्रीडम और जन गण मन जैसे गीत तैयार करने का श्रेय भी उन्हें जाता है। फिल्मों को दिये संगीत के लिए रहमान के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा होती रही है।

A.R. RAHMAN

Easily one of the most sought after film music directors in India today, A.R. Rahman's rise to stardom has been meteoric. Inherited musical genes, early musical apprenticeship and training at the Trinity College of Music, London, have made Rahman's music the one most young Indians identify with.

A chance meeting with Mani Rathnam led him to compose the music for the song Tamizha Tamizha in *Roja*, which became a rage. Since then, he has not had to look back, as the number of people who want to work with him is increasing everyday. Among his notable productions have been *Vandemataram* to commemorate 50 years of India's independence, *Spirit of Freedom* and *Jana Gana Mana* besides a number of films where his work has stood out.

सर्वोत्तम गीत

वैरामुथु

गीतकार को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार वैरामुथु

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार तमिल फिल्म कन्नथिल मुथामिथल में लौकिकता से ऊपर उठकर काव्य परिधि को छूने के प्रयास के लिए वैरामुथु को दिया गया है।

BEST LYRICS

VAIRAMUTHU

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Lyricist **VAIRAMUTHU**

CITATION

The award for the Best Lyricist of 2002 is given to Vairamuthu for the Tamil film *Kannathil Muthamittal* for rising above the conventions of film songs to reach the realms of poetry.

वैरामुथु

प्रतिभाशाली गीतकार वैरामुथु (जन्म 1953) ने कम उम्र में ही गीत लिखना शुरू कर दिया। सुब्रमनिया भारती और भारतीदसन से प्रेरित वैरामुथु ने तमिल साहित्य के पद्यात्मक शैली में लीक से हटकर एक नये युग का सूत्रपात किया। कविता को आम लोगों के बीच लोकप्रिय करने की उनकी ललक फिल्मों में वैरामुथु के गीतों के जरिये देखने को मिलती है। वर्ष 1980 में निर्देशक भारतीराजा ने उन्हें तमिल फिल्मों में काम करने का मौका दिया। वर्ष 1985 में फिल्म मुधल मरिथाई के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वर्ष 1992 में उन्हें फिल्म रोजा के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 1995 में उन्हें तीसरी बार फिल्म करुथमा के गीत लिखने के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तमिल वलारची मन्दरम, चेन्नई ने उन्हें 'कवियारुसु'की उपाधि से सम्मानित किया। अब तक वह 400 से अधिक गीतों की रचना कर चुके हैं। कवि की नैसर्गिक प्रतिभा के धनी वैरामुथु ने गीतों का स्तर ऊपर उठाकर उन्हें साहित्य का रूप दे दिया है। उन्होंने 28 पुस्तकें भी लिखी हैं। वह तमिलनाडु सरकार द्वारा वर्ष 1981 में सर्वश्रेष्ठ गीतकार के अलावा कई अन्य पुरस्कार जीत चुके हैं।

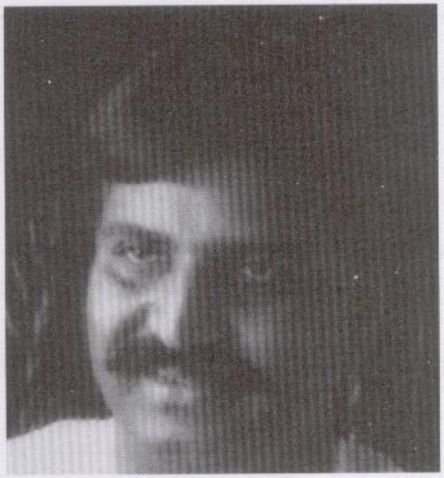

VAIRAMUTHU

1953-born Vairamuthu is a prolific lyricist who began writing at an early age. Inspired by Subramania Bharathi and Bharathidasan, he is one of the pioneers who initiated a new era of vers libre in Tamil Literature. His obsession to make poetry a common property made him think in terms of rendering it through films. In 1980, director Bharathiraja introduced him in Tamil films. He was presented the National Award for Best Lyrics for the film *Mudhal Mariathai* in 1985. In 1992, he got the best lyricist award for the film *Roja*. He got an award for the third time for lyrics in the film *Karuthamma* in 1995. He was conferred the title 'kaviyarasu' by the Tamil Valarchi Mandram, Chennai. So far, he has composed 400 lyrics. By his instinctive poetic genius, he has raised the standard of lyrics to literature in an effortless excellence. He has also written 28 books and has won many awards including the best lyricist award of the Tamil Nadu Government in 1981.

विशेष जूरी पुरस्कार

प्रकाश राज

प्रकाश राज को रजत कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

विवरण

वर्ष 2002 का विशेष जूरी पुरस्कार प्रकाश राज को अनेक क्षेत्रों में उनकी दक्षता के लिए प्रदान किया गया है। इस अनूठी क्षमता के बूते उन्होंने विभिन्न भाषाओं में फिल्म जगत को अपना योगदान दिया है।

SPECIAL JURY AWARD

PRAKASH RAJ

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 25,000/- to **PRAKASH RAJ**

CITATION

The Special Jury Award of 2002 is given to Prakash Raj for the impressive power and versatility, through which he has contributed to films in multiple languages.

प्रकाश राज

38 वर्षीय प्रकाश राज कर्नाटक के निवासी हैं। लेकिन वह चेन्नई में अभिनेता, लेखक और निर्देशन के तौर पर काम करते रहे हैं। उन्होंने 2500 से अधिक भारतीय नाटकों और पश्चिमी नाटकों के रूपांतरण में काम किया हैं। फिलहाल वह सभी चार दक्षिण भारतीय भाषाओं में मनोरंजन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। कल्की में अभिनय के लिए उन्हें तमिलनाडु सरकार ने प्रतिष्ठित कलाईमामणी पुरस्कार से सम्मानित किया है। गनशॉट और अंथपुरम में अभिनय के लिए उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार ने नंदी पुरस्कार प्रदान किया है।

वर्ष 1999 में फिल्म अंथपुरम में उनके अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (विशिष्ट उल्लेख) दिया गया। मणि रत्नम की इरूवर में उनके अभिनय की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। उन्हें इस फिल्म के लिए यूसीएलए, कैलिफोर्निया के अंतरराष्ट्रीय समारोह में भाग लेने का निमंत्रण भी मिला। इरूवर की भूमिका के लिए वर्ष 1997 के 45वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया।

PRAKASH RAJ

Prakash Raj is a 38-year-old native of Karnataka but has been working as an actor, writer and director in Chennai. He has performed in more than 2,500 shows of Indian plays and western adaptations. He is now active in all the four southern languages, having won the prestigious *Kalaimamani* award from the Tamil Nadu Government for his performance in *Kalki* and the Nandi award from the Andhra Government for *Gunshot* and *Andhapuram*.

He got the National Award (special mention) for his performance in the film, *Anthahpuram* in 1999. His performances in Mani Ratnam's *Iruvar* won him many plaudits, as also an invitation to attend an international festival at UCLA, California. He also won the best supporting actor at the 45th National Film Awards in 1997 for his role in *Iruvar*.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

इंडियन आर्टिस्ट

इंडियन आर्टिस्ट के स्थापक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

विवरण
वर्ष 2002 के लिए सर्वश्रेष्ठ विशेष प्रभाव का पुरस्कार इंडियन आर्टिस्ट, चेन्नई को तमिल फिल्म मैजिक मैजिक में डिजीटल तकनीक की मदद से फंतासी व जादुई संसार रचने के लिए दिया गया है।

BEST SPECIAL EFFECTS

INDIAN ARTISTS

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Creator **INDIAN ARTISTS**

CITATION
The award for the Best Special Effects of 2002 is given to M/s. Indian Artists, Chennai, for the Tamil film Magic Magic for the skilful use of digital technology to create a world of fantasy and magic.

इंडियन आर्टिस्ट्स

चेन्नई में स्थित एक बेहतर कम्प्यूटर ग्राफिक कंपनी इंडियन आर्टिस्ट ने पिछले एक दशक से अधिक समय से विभिन्न प्रकार की फिल्मों के लिए जादुई दृश्यों की रचना की है।

INDIAN ARTISTS

A well-known computer graphics company based in Chennai, Indian Artists has been creating visual magic for over a decade in various types of films.

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

सरोज खान

नृत्य निर्देशक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार सरोज खान

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशन का पुरस्कार हिंदी फिल्म देवदास के डोला रे डोला गीत के लिए सरोज खान को दिया गया है। सरोज खान ने तत्कालीन परिवेश के अनुरूप सटीक नृत्य निर्देशन के जरिये इस गीत को नई उंचाइयां दे दीं।

BEST CHOREOGRAPHY

SAROJ KHAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Choreographer **SAROJ KHAN**

CITATION

The award for the Best Choreography of 2002 is given to Saroj Khan for the number *Dola re Dola* in Hindi film Devdas for her creation of captivating dance movements to reflect the spirit of the characters and the period.

सरोज खान

सरोज खान का जन्म 1948 में मुंबई में हुआ। मुंबई फिल्म उद्योग में आज उनकी जबरदस्त मांग है। सरोज ने तीन वर्ष की उम्र से ही नृत्य कला में अपने जौहर दिखाने शुरू कर दिये और फिल्म उद्योग में वर्ष 1951 में उन्होंने दस्तक दे दी। 10 साल की उम्र में वह समूह नर्तकियों में शामिल हो गईं। सात महीने बाद वह मास्टर बी. सोहनलाल की सहायक बन गईं। साधना (गीत मेरे नाम) के लिए उन्होंने पहली बार नृत्य निर्देशन किया। सुभाष घई की फिल्म हीरो ने उन्हें बुलंदियों पर पहुंचा दिया।

तेज़ाब (1988) में उनके नृत्य निर्देशन ने ऐसी धूम मचाई कि फिल्म फेयर को नृत्य निर्देशन के लिए पुरस्कार की अलग श्रेणी बनानी पड़ी। तब से वह कई पुरस्कार जीत चुकी हैं। उनकी सर्वाधिक चर्चित फिल्मों में तेज़ाब, चालबाज (1989), सैलाब (1990), नरसिंहा (1991), बेटा (1992), खलनायक (1993), राजा (1994) और याराना (1995) शामिल हैं।

SAROJ KHAN

Born in Mumbai in 1948, Saroj Khan is amongst the sought after choreographers in the Mumbai film industry. She started dancing at the age of three. Entering the film industry in 1951, she became a group dancer at the age of 10. After seven months, she became assistant to master B. Sohanlal. She became a choreographer with Sadhana's *Geeta Mera Naam*. And rose to fame for her work in Subhash Ghai's film *Hero*.

So popular was her dance number for *Tezaab* (1988), that Filmfare started a category for choreography awards. She has got awards many times. Amonst her most popular films are *Tezaab*, *Chaalbaaz* (1989), *Sialaab* (1990), *Narsimha* (1991), *Beta* (1992), *Khalnayak* (1993), *Raja* (1994) and *Yaraana* (1995).

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म कोनिकर रामधेनु

प्रत्येक निर्माता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार सैलाधर बरूआ और जानू बरूआ

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार जानू बरूआ

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ असमिया फीचर फिल्म का पुरस्कार बाल शोषण के संवेदनशील चित्रण के लिए कोनिकर रामधेनु को प्रदान किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGE SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

KONIKAR RAMDHENU

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- each to Producers **SAILADHAR BAROOAH and JAHNU BARUA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **JAHNU BARUA**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Assamese of 2002 is given to Konikar Ramdhenu for its sensitive portrayal of child abuse.

सैलाधार बरूआ

एक निर्माण कंपनी के मालिक सैलाधर बरूआ लंबे अरसे से असम में संस्कृति और खेल जगत के उत्थान की दिशा में सक्रिय हैं। जानू बरूआ के साथ वह कई फिल्मों में काम कर चुके हैं। इनमें पापोरी (1986), हालोधिया चोराय बाओधन खाये (1987), हक्हागोरोलोई बोहु दूर (1994), फिरिन्गोती (1991) और कोनिकर रामधेनु (2001) शामिल हैं।

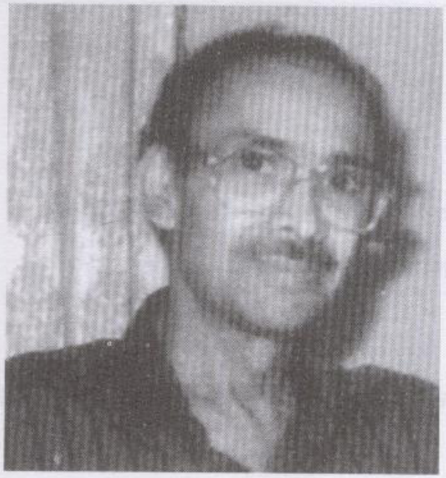

SAILADHAR BAROOAH

A construction company owner, Sailadhar Barooah has also been a longtime promoter of culture and sports in Assam. He has worked on many projects with Jahnu Barua, including *Papori* (1986), *Halodhia Choraye Baodhan Khaye* (1987), *Hkhagoroloi Bohu Door* (1994) *Firingoti* (1991) and *Konikar Ramadhenu* (2001).

जानू बरूआ

सामाजिक सेवा में समर्पित जानू बरूआ (जन्म 1952) आज असम के सर्वाधिक चर्चित फिल्मकारों में से एक हैं। गुवाहाटी विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद उन्होंने भारतीय फिल्म व टेलीविजन संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने नौ फिल्में बनाई हैं। यह सभी फिल्में भारतीय सामाजिक मूल्यों के सशक्त संदेशों पर आधारित हैं। बरूआ को उनकी पहली फिल्म अपरूपा (1982) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। हालोधिया चोराय बाओधन खाये को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। उनकी अगली फिल्म हक्हागोरोलोई बोहु दूर की भी काफी प्रशंसा हुई। भारतीय अंतरिक्ष शोध संस्थान में काम करने के दौरान बरूआ ने ग्रामीण बच्चों के लिए कई कार्यक्रम तैयार किये। इस दौरान उन्होंने कुछ लघु फिल्मों और वृत्तचित्रों का निर्माण किया। उनकी अन्य चर्चित फिल्में हैं पापोरी (1986), बनानी (1989)।

JAHNU BARUA

Committed to social causes, 1952–born Jahnu Barua is one of Assam's best known filmmakers. He graduated from Guwahati University and later studied at the Film and Television Institute of India. He has made nine films, which have strong messages based on traditional social values. He won his first National Award for his debut film *Aparoopa* (1982). *Halodhia Choraye Bodhan Khai* has been acclaimed internationally, as was *Hkhagoroloi Bohu Door* (1994). Barua has made programmes for rural children when he worked at Indian Space Research Organisation and also made some short films and documentaries. Other notable features include *Papori* (1986), *Banani* (1989) and *Firingoti* (1991).

सर्वोत्तम बंग्ला फीचर फिल्म

शुभो मुहूर्त

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार **जगन्नाथ फिल्म्स**

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार ऋतुपर्णो घोष

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ बंग्ला फीचर फिल्म का पुरस्कार शुभो मुहूर्त को एक जासूसी कहानी के चरित्रों के सटीक चित्रण के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

SHUBHO MUHURAT

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **JAGANNATH FILMS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **RITUPARNO GHOSH**

CITATION
The award for the Best Feature Film in Bengali for the year 2002 is given to Shubho Muhurat for its intelligent handling of characters in a detective story.

ऋतुपर्णो घोष

लघु फिल्म निर्माता सुनील घोष के पुत्र ऋतुपर्णो घोष का जन्म 1962 में हुआ। वह राष्ट्रीय पटल पर भारतीय युवा निर्देशकों के खेमे में अपनी पहचान कायम करने में कामयाब रहे हैं। कम उम्र से ही उन्हें फिल्मी दुनिया का आकर्षण खींचता रहा है। हालांकि उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। शुरूआती दौर में उन्होंने एक विज्ञापन एजेंसी के लिए कॉपी राइटिंग की और अपनी विज्ञापन फिल्मों के लिए 18 पुरस्कार जीतने में सफल रहे। बच्चों के लिए हिरेर अंगेठी फिल्म के निर्माण के साथ उन्होंने फीचर फिल्मों की दुनिया में प्रवेश किया। अपनी दूसरी फिल्म उनीशे अप्रील के लिए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। इस फिल्म के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया। उनकी फिल्मों में दहन (1996), आसुख (1998), उत्सब (2000) और शुभो मुहूर्त (2002) शामिल हैं और यह सभी फिल्में भारतीय पैनोरमा में शामिल हो चुकी हैं। उनकी नवीनतम फिल्म चोखेर बाली (2003) बंगला फिल्म उद्योग में हाल के दिनों में शायद सबसे बड़ी संख्या में दर्शकों को आकर्षित करने में सफल हुई है।

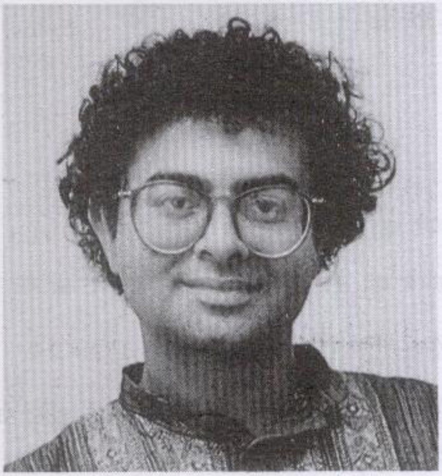

RITUPARNO GHOSH

Son of a short filmmaker, Sunil Ghosh, 1962- born Rituparno Ghosh is amongst the younger breed of Indian directors who have already made their mark on the national scene. He evinced an interest in cinema from an early age even as he completed his post graduate degree in economics. He initially worked as a copywriter for an advertising firm and won 18 awards for his advertising films. He started making features with a film for children, *Hirer Angthi*.

He gained national recognition with his second film, *Unishe April*, for which he won the National Award. He has since made other acclaimed films like *Dahan* (1996), *Asookh* (1998), *Utsab* (2000) and *Shubho Muhurat* (2002), all of which have been part of the Indian Panorama. His latest film *Chokher Bali* (2003) is perhaps the most widely seen Bengali film nationally in recent times.

सर्वोत्तम हिंदी फीचर फिल्म

दि लीजेंड आफ भगत सिंह

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार टिप्स फिल्म

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार राज कुमार संतोषी

विवरण
वर्ष 2002 के सर्वश्रेष्ठ हिंदी फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार महान शहीद के चरित्र को पूरी संजीदगी से प्रस्तुत करने के लिए फिल्म दि लीजेंड आफ भगत सिंह को प्रदान किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

THE LEGEND OF BHAGAT SINGH

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producers **TIPS FILMS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **RAJ KUMAR SANTOSHI**

CITATION
The award for the Best Feature Film in Hindi of 2002 is given to *The Legend of Bhagat Singh* for its gripping portrayal of the life and times of a legendary martyr.

राज कुमार संतोषी

बालीवुड के अग्रणी निर्देशकों में से एक राज कुमार संतोषी की फिल्में सशक्त चरित्रों के चित्रण के लिए जानी जाती हैं। इनकी फिल्मों में चरित्र को जबरदस्त क्रोध में प्रदर्शित किया जाता है। चाहे वह घायल (1990), दामिनी (1993) हो अथवा घातक (1996) हो, संतोषी की फिल्मों में यह रंग फिल्म निर्माण के अन्य सभी पहलुओं पर हावी होता है। हालांकि उन्होंने दूसरी धाराओं में भी अपना जौहर दिखाया है। हास्य प्रधान फिल्म अंदाज अपना अपना (1994) और रुमानी तबियत वाली फिल्म बरसात (1995) इसके प्रमाण हैं। संतोषी की फिल्मों में चाइना गेट (1998) और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में निर्मित दि लीजेंड आफ भगत सिंह (2002) शामिल हैं। लज्जा (2001) और दामिनी जैसी उनकी कुछ फिल्मों में बेहद सशक्त महिला चरित्रों को भी प्रमुखता दी गयी है।

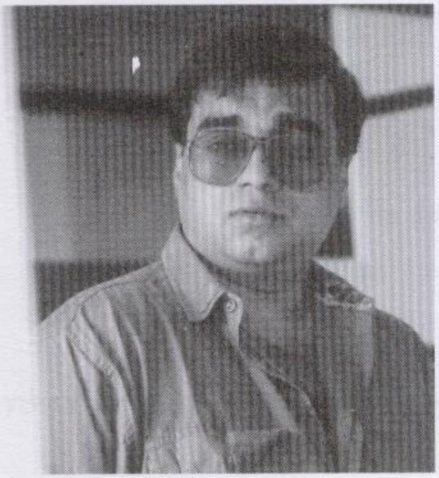

RAJ KUMAR SANTOSHI

One of Hindi cinema's leading directors, Rajkumar Santoshi's films are known for their strongly etched lead characters, who usually have a lot of pent up anger. Whether it is *Ghayal* (1990), *Damini* (1993) or *Ghatak* (1996), Santoshi's films have to be associated with this protagonist. He has however made films in other genres as well, notably the comedy *Andaz Apna Apna* (1994) or the romantic *Barsaat* (1995) His repertoire includes films like the mega adventure *China Gate* (1998) or the recent historical, *The Legend of Bhagat Singh* (2002). His films have often protrayed very powerful and strong women characters, especially films like *Lajja* (2001) or *Damini*.

सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म

सिंगारवा

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार संदेश नागराज

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार टी.एस. नागभर्णा

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार लोककथा के शानदार चित्रण के लिए सिंगारवा को प्रदान किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

SINGARAVVA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **SANDESH NAGARAJ**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **T. S. NAGABHARANA**

CITATION
The award for the Best Feature Film in Kannada of 2002 is given to Singaravva for its stylized treatment of a folk tale.

संदेश नागराज

किसान से उद्योगपति बने संदेश नागराज संदेश समूह की कंपनियों के मालिक हैं। वह मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण के प्रबंध निदेशक भी हैं और एक सम्मानित राजनेता भी। फिल्म निर्माण से भी वह काफी समय से जुड़े हुए हैं और अब तक 12 फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इनकी ज्यादातर फिल्में साहित्यिक उपन्यासों पर आधारित हैं। मसलन, मौना रागा, दोनी, मुषकु और मुन्जनेया मंजू आदि।

SANDESH NAGARAJ

An agriculturist turned industrialist, Sandesh Nagaraj also heads the Sandesh Group of Industries. He is also the managing Director of Mysore Urban Development Authority and a reputed politician. He has also been involved with cinema production over the years and has already produced 12 films, most of which have been screen adaptations of classic novels like *Mauna Raaga, Doni, Musuku* and *Munjaneya Manju* among others.

टी.एस. नागभर्णा

विज्ञान और विधि में स्नातक होने के पश्चात टी.एस नागभर्णा ने थियेटर की दुनिया से बतौर कलाकार, निर्देशक व मंच कर्मी का नाता जोड़ लिया। कैरियर की शुरुआत में उन्होंने चर्चित कन्नड़ नाटकों के लेखक और निर्देशक अदया रंगाचार्य के साथ प्रशिक्षु के रूप में कार्य किया। बाद में उन्होंने बी.वी.कारंत और गिरीश कर्नाड जैसे दिग्गजों के साथ भी रंगमंच और फिल्मों में काम किया। 1970 के पूर्वार्द्ध में नागभर्णा ने कारंत के थियेटर ग्रुप बेनका के लिए कई लघु नाटकों का निर्देशन किया। इसके साथ उन्होंने ह्यावदना और ओइडिपस जैसे वृहद निर्माणों में भी भागीदारी की। कर्नाड की फिल्म काडु (1973) में भी उन्होंने काम किया। हालांकि तब तक वह फिल्मकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके थे। उन्होंने संगीत का भी विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया है। बतौर निर्देशक उनकी पहली फिल्म थी ग्रहण (1978)। नागभर्णा ने करीब 25 फिल्मों का निर्देशन किया है। उनकी सर्वाधिक चर्चित फिल्मों में अन्वेषण (1980), बंकेर मरगय्या (1983), आहूति (1984), अशोप्ता (1988) और नागमंडला शामिल हैं।

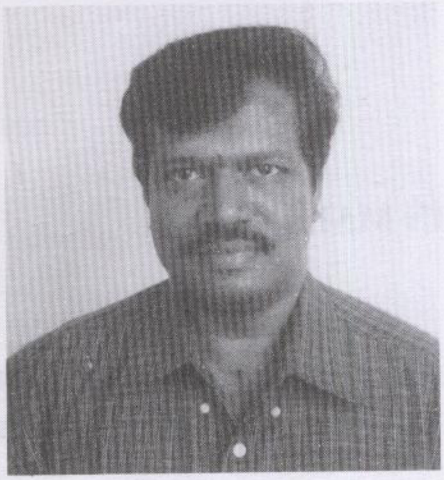

T. S. NAGABHARANA

T.S. Nagabharana plunged into active theatre as an actor, director and stage worker after his graduation in science and law. Beginning his career as an apprentice to noted Kannada playwright and director Adya Rangacharya, he went on to become a part of the theatre and film activities of stalwarts like B.V. Karanth and Girish Karnad. Nagabharana directed several short plays for Karanth's theatre group Benaka in the early 1970s and participated in major productions like *Hayavadana* and *Oedipus*. He assisted Karanth and Karnad in their early films, including the latter's *Kaadu* (1973). He however developed his distinct style as a filmmaker and also trained in music. He made his directorial debut with *Grahana* (1978) and later made a successful transition to commercial Kannada cinema. He has directed about 25 films. Among his best-known films are *Anveshane* (1980), *Banker Margayya* (1983), *Ahuti* (1984), *Ashopta* (1988) and *Nagamandala*.

सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म

निढ़लकूथ

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार अदूर गोपालाकृष्णन

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार अदूर गोपालाकृष्णन

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ मलयालम फीचर फिल्म का पुरस्कार निढ़लकूथ को प्रदान किया गया है। इस फिल्म में एक जल्लाद की मानसिकता का चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

NIZHALKUTHU

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **ADOOR GOPALAKRISHNAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **ADOOR GOPALAKRISHNAN**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Malayalam of 2002 is given to Nizhalkuthu for its exploration of the mind of a hangman.

अदूर गोपालाऔष्णन

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहे गये फिल्मकारों में से एक अदूर गोपालाकृष्णन का जन्म केरल के अदूर गांव में हुआ। इनके परिवार ने अतिविशिष्ट नृत्यशैली कथकली को न केवल पारंपरिक संरक्षण दिया बल्कि उसका अभ्यास भी किया। अदूर मात्र आठ वर्ष की उम्र से ही अभिनय की दुनिया में प्रवेश कर गये। स्नातक होने तक इन्होंने 20 से भी अधिक सराहनीय नाटकों का निर्देशन किया। इनमें से आधे से अधिक नाटक अदूर द्वारा लिखे गये थे। अदूर ने वर्ष 1965 में भारतीय फिल्म व टेलीविजन संस्थान, पुणे से पटकथा लेखन तथा निर्देशन में स्नातक किया। इसी वर्ष इन्होंने तिरुवनंतपुरम में चित्रलेखा फिल्म सोसाइटी की शुरुआत की। इस तरह अदूर ने केरल में फिल्म सोसाइटी की नींव रख दी।

अपनी फीचर फिल्मों के लिए अदूर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के रूप में चार बार राष्ट्रीय पुरस्कार के विजेता रहे। इन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी जीते हैं। अदूर की अति सराहनीय फिल्मों में स्वयंवरम, कोडियेट्टम, एलिपाठयाम, मुखामुखम, अनंतरम, मुथीलुकल, विधेयन और कथापुरुषम शामिल हैं।

ADOOR GOPALAKRISHNAN

One of India's most admired filmmakers on the international scene, Adoor Gopalakrishnan was born in the village of Adoor, Kerala. His family traditionally patronized and practiced that highly sophisticated dance form Kathakali. He himself began acting on the stage at the age of eight. By the time he graduated he had already produced over 20 critically acclaimed plays, authoring half of them.

He graduated in Scriptwriting and Direction from the Film and Television Institute of India, Pune, in 1965. The same year he started the Chitralekha Film Society in Thiruvananthapuram – thereby pioneering the film society movement in Kerala.

For his feature films, Adoor has received the National Award for Best Direction on four occasions. He has also many international awards. His highly acclaimed films include *Swayamvaram, Kodiyettam, Elippathayam, Mukhamukham, Anantaram, Mathilukal, Vidheyan* and *Kathapurushan.*

सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म

वास्तुपुरुष

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार एनएफडीसी

निर्देशक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार सुमित्रा भावे और सुनील **सुकठणकर**

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ मराठी फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार वास्तुपुरुष को प्रदान किया गया है। इस फिल्म के जरिये स्वतंत्र भारत में चल रहे सामाजिक परिवर्तनों के चक्रवात में फंसे एक जमींदार परिवार की कहानी को बेहद खूबसूरती से दिखाया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

VASTUPURUSH

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **NFDC**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- each to Directors **SUMITRA BHAVE AND SUNIL SUKTHANKAR**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Marathi of 2002 is given to Vastupurush for its competent handling of a feudal family caught in the vortex of social change in post-independence India.

SUMITRA BHAVE & SUNIL SUKTHANKAR

Sumitra Bhave, born in 1943, is a trained social worker from the Tata Institute of Social Sciences, Mumbai. After ten years of teaching at the Karve Institute of Social Service, Pune, she felt the urge to use the audio-visual medium to take her research findings to illiterate audiences. Her first documentary film *Bai* (Woman), based on a case study of a Dalit slum dweller, won the National award for Social Welfare in 1985. Since then Sumitra Bhave and Sunil Sukthankar have made four feature films, 20 documentaries and a TV serial.

Sunil Sukthankar, born in 1966, graduated in Commerce before joining the Film & TV Institute of India, Pune. After a career as a youth theatre activist, he assisted Sumitra Bhave in three short films and later became her co-director. Their prominent films and projects together include *Doghi* (1994), *Zindagi Zindabad, Long Live Life* (1996), *Dahavi 'F' (10th 'F')* (2002), *Vastupurush Guardian Spirit of House* (2002) and 1998-99 *Bhains Barabar*, a 26-episode serial on illiteracy for Doordarshan.

सुमित्रा भावे और सुनील सुकठणकर

सुमित्रा भावे का जन्म वर्ष 1943 में हुआ। वे टाटा इंस्टिट्यूट आफ सोशल साइंसेज, मुंबई से समाजसेवा में प्रशिक्षण लेने के पश्चात सामाजिक सेवा में सक्रिय हो गईं। कार्वे इंस्टिट्यूट आफ सोशल सर्विस, पुणे में 10 साल पढ़ाने के बाद उन्हें अपने अनुसंधान खोजों से अशिक्षितों को जागरुक कराने की आवश्यकता महसूस हुई। इसके लिए उन्होंने श्रव्य-दृश्य माध्यम का उपयोग किया। उनके पहले वृत्तचित्र बाई (औरत) को वर्ष 1985 में सामाजिक कल्याण का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह फिल्म झुग्गी-बस्ती में रहने वाले एक दलित की सच्ची कहानी पर आधारित है। उसके बाद सुमित्रा भावे और सुनील सुकठणकर ने चार फीचर फिल्म, 20 वृत्तचित्र तथा एक टेलीविजन धारावाहिक का निर्माण किया।

सुनील सुकठणकर का जन्म वर्ष 1966 में हुआ। वाणिज्य में स्नातक होने के बाद इन्होंने भारतीय फिल्म व टेलीविजन संस्थान, पुणे में दाखिला लिया। कैरियर की शुरुआत में रंगमंच से वह जुड़े। उन्होंने सुमित्रा भावे की तीन लघु फिल्मों के लिए साथ काम किया। बाद में वह भावे के सह निर्देशक बन गये। युगल जोड़ी के रूप में इन्होंने दोघी (1994), जिंदगी जिंदाबाद, लांग लिव लाइफ (1996), दाह्वी एफ (10वें एफ) (2002), वास्तुपुरुष, गार्जियन स्पीरिट आफ हाउस (2002) जैसी चर्चित फिल्मों व परियोजनाओं पर काम किया। इसके अलावा इस जोड़ी ने दूरदर्शन के लिए निरक्षरता पर आधारित 26 कड़ियों के धारावाहिक भैंस बराबर (1998-99) का निर्माण किया।

सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म

कन्नथिल मुत्थामिट्टाल

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार मद्रास टाकीज

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार मणि रत्नम

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ तमिल फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार कन्नथिल मुत्थामिट्टाल को प्रभावशाली निर्माण और समसामयिक दुखांत गाथा के चित्रण के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

KANNATHIL MUTHAMITTAL

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **MADRAS TALKIES**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **MANI RATHNAM**

CITATION
The award for the Best Feature Film in Tamil of 2002 is given to *Kannathil Muthamittal* for its superb craftsmanship and commitment to a contemporary tragedy.

मणिरत्नम

फिल्म *रोजा* से आरंभ कर मणि रत्नम ने *बांबे, दिल से* और *कन्नथिल मुत्थामिट्टाल* जैसी फिल्मों के जरिये आतंकवाद, विप्लववाद तथा हिंसा जैसे विषयों की उत्पत्ति तथा कारणों को अपनी फिल्मों लिए विषय वस्तु बनाया। अपनी फिल्मों के जरिये मणि रत्नम ने भारतीय उपमहाद्वीप को खोखला करने में सक्षम इन समस्याओं को बहुत शिद्दत से दर्शाया है। कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत, श्रीलंका हो या फिर मुंबई, नक्शे का कोई भी कोना उनकी नजरों से अछूता नहीं रहा है।

फिल्म *रोजा* के काफी पहले से मणि रत्नम अपनी कई फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं। *मौना रागम, नायकन, गीतांजली, अंजली, रोजा, थिरुदा थिरुदा, बांबे, इरुवर, दिल से* - इन सभी फिल्मों ने मणि रत्नम के लिए एक से अधिक स्वर्ण अथवा रजत कमल राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। इसके अलावा यह सभी फिल्में दुनिया भर के फिल्म समारोहों में शामिल की गईं। कांस, बर्लिन, टोक्यो, लोकार्नो, एडिनबर्ग, टोरंटो, पुसान तथा हांगकांग के फिल्म समारोहों में यह फिल्में दिखाई गईं।

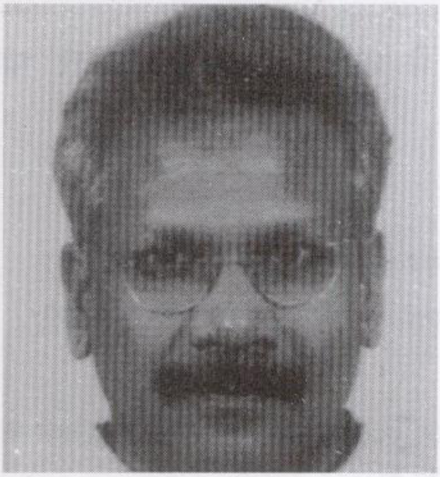

MANI RATHNAM

Starting with *Roja* and following it up with *Bombay*, *Dil Se* and now *Kannathil Muthamittal*, Mani Rathnam has carved a niche for himself with his penchant for exploring the whys and wherefores of militancy, extremism and violence that seems to be gnawing away the vitals of the subcontinent. Kashmir, the North East, Sri Lanka or Bombay - no corner has escaped his probing eyes.

However, his kitty of National Awards had started growing long before he made *Roja*. *Mouna Ragam, Nayakan, Gitanjali, Anjali, Roja, Thiruda Thiruda, Bombay, Iruvar, Dil Se* all of these have won more than one Lotus, be it Silver or Golden. In addition, they have been the toast of festivals worldwide - from Cannes, Berlin, Tokyo and Locarno to Edinburgh, Toronto, Pusan and Hong Kong.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म

स्टंबल

निर्माता को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार 2 स्ट्रीम्स मीडिया

निर्देशक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार प्रकाश बेलवाड़ी

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के सशक्त चित्रण के लिए फिल्म *स्टंबल* को प्रदान किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION.
BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

STUMBLE

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **2 STREAMS MEDIA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **PRAKASH BELAWADI**

CITATION

The award for the Best Feature Film in English of 2002 is given to *Stumble* for its intelligent handling of corruption prevailing in the world of information technology.

प्रकाश बेलवाड़ी

प्रकाश बेलवाड़ी (जन्म 1961) पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर हैं। एक सक्रिय पत्रकार के रूप में उन्होंने 10 वर्षों से अधिक समय तक कार्य किया। बेलावादी ने इंडियन एक्सप्रेस संडे मैगजीन तथा एशियन एज में नौकरी की। उन्होंने जुलाई, 2000 में 2 स्ट्रीम्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की। बेलावादी ने दूरदर्शन के लिए कन्नड़ तथा हिंदी में उपन्यास तथा कहानियों पर आधारित कार्यक्रमों के लिए पटकथा लेखन व निर्देशन किया। इसके अलावा बेलावादी ने गिरीश कर्नाड की फिल्म कनूरू हेगाडिथी में अभिनय भी किया। बेलावादी बंगलौर में रहते हैं और स्टंबल इनकी पहली फिल्म है।

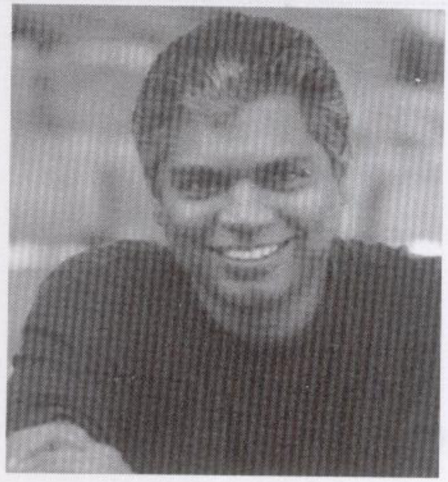

PRAKASH BELAWADI

Born in 1961, Prakash Belawadi is a mechanical engineer who worked as an active journalist for over a decade. He served on the staff of such publications as Indian Express, Sunday magazine and Asian Age. He set up 2Streams Media Pvt Ltd in July 2000. Besides scripting and directing Kannada and Hindi fiction shows for television, he acted in Girish Karnad's feature film, Kanooru Heggadithi. Belawadi lives in Bangalore. Stumble is his first feature film.

विशेष उल्लेख

ज्योतिर्मयी
विशेष उल्लेख प्रभाव पत्रा **ज्योतिर्मयी** को

विवरण
मलयालम फिल्म *भवम* में ज्योतिर्मयी के शानदार अभिनय का जूरी ने विशिष्ट रूप से उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

JYOTIRMOYEE
Special Mention Certificate to **JYOTIRMOYEE**

CITATION
The jury makes a special mention of Jyotirmoyee for her remarkable performance in the Malayalam film Bhavum.

ज्योतिर्मयी

बहुत ही थोड़े समय में मलयालम फिल्म में अपनी खास जगह बना लेने वाली अभिनेत्री ज्योतिर्मयी दूरदर्शन कार्यक्रमों की संचालिका रह चुकी हैं। हाल की कुछ चर्चित फिल्में जैसे *एंतवीडु अपून्तम* और *भवम* में उनके अभिनय की काफी प्रशंसा हुई है।

JYOTIRMOYEE

An actress who has made her mark in Malayalam cinema in a short time, she is a former television anchor. She has done important popular film roles in recent times like *Enteveedu Appoontem* and *Bhavum*.

कथा चित्र पुरस्कार जो नहीं दिये गये

पर्यावरण पर सर्वोत्तम कथाचित्र
गुजराती भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र
मणिपुरी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र
ओड़िया भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र
पंजाबी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र
राजस्थानी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र
तेलुगु भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

FEATURE FILMS AWARDS NOT GIVEN

BEST FEATURE FILM ON ENVIRONMENT
BEST FEATURE FILM IN GUJARATI
BEST FEATURE FILM IN MANIPURI
BEST FEATURE FILM IN ORIYA
BEST FEATURE FILM IN PUNJABI
BEST FEATURE FILM IN RAJASTHANI
BEST FEATURE FILM IN TELUGU

गैर कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र फिल्म के लिए पुरस्कार

नाराण गंगाराम सूर्वे (मराठी)

स्वर्ण कमल और नकद पुरस्कार 20,000 रुपये निर्माता को **ख्याल ट्रस्ट**

स्वर्ण कमल और नकद पुरस्कार 20,000 रुपये निर्देशक को **अरुण खोपकर**

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म का पुरस्कार मराठी फिल्म नारायण गंगाराम सुर्वे को दिया गया है। इस फिल्म में महान मराठी कवि की जीवन-कथा को नावीन्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है, साथ ही उनकी कविताओं का भी सजीव आकल्पन किया गया है। फिल्म में सशक्त चरित्र चित्रण के लिए छवि एवं रूपक का अद्वितीय प्रयोग किया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

NARAYAN GANGARAM SURVE (Marathi)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **KHAYAL TRUST**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **ARUN KHOPKAR**

CITATION
The Award for the Best Non-feature Film of the year 2002 is given to the Marathi film Narayan Gangaram Surve for the innovative telling of the story on the life of the great Marathi poet juxtaposed with the evocative visualization of his poems. The film makes brilliant use of image and metaphor as it evolves a complex and powerful narrative.

अरुण खोपकर

वर्ष 1945 में जन्मे अरुण खोपकर, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन (निर्देशन) में डिप्लोमा किया। उन्होंने 1976 से अब तक बेहतरीन तरीके से बनाई गई 30 लघु फिल्मों से ख्याति अर्जित करने के साथ-साथ एक फीचर फिल्म, कथा दोन गणपतरावांची (दो गणपतरावों की कहानी, 1996) भी बनाई। हाथी का अंडा उनकी दूसरी फीचर फिल्म थी। ललित कला और सिनेमा पर महारत रखने वाले खोपकर की गुरुदत्त की ट्रेजेडी पर मराठी में लिखी पुस्तक को सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

उनकी चर्चित लघु फिल्मों में *गांधी, नेहरु एंड माडर्न आर्ट* (2000), *कलर्स ऑफ एबसेंस* (1993), कलाकार जहाँगीर सबावाला के जीवन एवं कार्यों पर फिल्म, तीन समकालीन भारतीय कलाकारों - भूपेन खक्कर, विवान सुंदरम और नलिनी मालिनी के कार्य पर केंद्रित *फिगर्स ऑफ थॉट* (1991) शामिल हैं। हिंदी फिल्म संगीत तथा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर आधारित दो लघु फिल्में क्रमशः लोकप्रिय एवं रसिकप्रिय - दोनों 2001 में भारतीय पेनोरमा के लिए चुनी गयी थीं।

ARUN KHOPKAR

Arun Khopkar, born in 1945, has diploma in Cinematography (Direction) from the Film and Television Institute of India, Pune. While his fame rests primarily on the 30-odd skilfully crafted short films he has made since 1976, he also has to his credit a feature film, *Katha Doan Ganpatraoanchi (A Tale of Two Ganpatraos*, 1996). *Haathi Ka Anda* is his second feature-length film. Khopkar has extensively lectured on aesthetics and cinema. His book on Guru Dutt's tragedies in Marathi won the National Award for the best book on cinema.

His acclaimed short films include *Gandhi, Nehru* and *Modern Art* (2000), *Colours of Absence* (1993), about the life and work of the artist Jehangir Sabavala, *Figures of Thought* (1991), which focused on the work of three contemporary Indian artists – Bhupen Khakkar, Vivan Sundaram and Nalini Malani. Lokapriya and Rasikpriya. Two short films on Hindi film music and Hindustani classical music respectively, were both selected for the Indian Panorama in 2001.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार

परमापथम (तमिल) एवं बियोंड ऑर विदिन (अंग्रेजी)

रजत कमल और नकद पुरस्कार 5,000 रुपये प्रत्येक, निर्माता को **फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ तमिलनाडु (परमपथम) और पी.टी.एम.पय्योली (बियोंड ऑर विदिन)**

रजत कमल और नकद पुरस्कार 5,000 रुपये प्रत्येक, निर्देशक को **प्रभु राधाकृष्णन (परमापथम) और विनोद मन्कारा (बियोंड ऑर विदिन)**

विवरण

वर्ष 2002 का किसी निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली गैर-फीचर फिल्म का पुरस्कार तमिल फिल्म परमापथम को दिया गया है। इसके निर्देशक प्रभु राधाकृष्णन ने फिल्म विधा पर परिपक्व नियंत्रण का प्रदर्शन किया है तथा एक शिल्पकार की कथा को कहने के लिए चरित्र का कसा हुआ, सशक्त एवं छोटा ताना-बाना इस तरह बुना है कि उसके जीवन के अनुत्तरित प्रश्नों का खुलासा हो सके। साथ ही साथ यह पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म बियांड ऑर विदिन को प्राचीन अलौकिक विज्ञान तथा विवादास्पद मंत्रवदा के प्रयोग पर सूचनाप्रद वृत्तचित्र की संतुलित प्रस्तुति के लिए दिया गया है।

THE AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

PARAMAPATHAM (Tamil) and BEYOND OR WITHIN (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Producers **FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF TAMIL NADU (Paramapatham) and P.T.M. Payyoli (Beyond or Within)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Directors **PRABHU RADHAKRISHNAN (Paramapatham) and VINOD MANKARA (Beyond or Within)**

CITATION

The award for the Best First Non-feature Film of a Director for the year 2002 is given to the Tamil film *Paramapatham*. Its director, Prabhu Radhakrishnan displays a mature control of film form and weaves a taut, powerful and short narrative to tell the story of a sculptor as the unanswered questions of his life unfold. And to the English film Beyond or Within for its balanced exploration through an informative documentary on the ancient occult science and practice of the controversial Mantravada.

पी.टी.एम. पय्योली

पिछले पच्चीस वर्षों से सक्रिय पी.टी.एम. पय्योली कलाओं के पारखी भी हैं। वे लम्बे समय से फिल्म उद्योग की गतिविधियों के साक्षी रहे हैं। बियोंड ऑर विदिन उनके द्वारा निर्मित पहली फिल्म है।

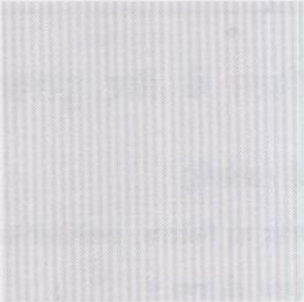

P.T.M. PAYYOLI

An entrepreneur for the last twenty five years, P.T.M. Payyoli is also a connoisseur of the arts. He has been following trends in the film industry for a long time. *Beyond or Within* is the first film produced by him.

प्रभु राधाकृष्णन

फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ तमिलनाडु में फिल्म एवं टीवी निर्देशन में एक कोर्स के लिए दाखिल होने से पहले प्रभु राधाकृष्णन मद्रास कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स में अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने इस लघु फिल्म के साथ अपने निर्देशन का प्रारंभ किया है।

PRABHU RADHAKRISHNAN

Prabhu Radhakrishnan studied at the Madras College of Arts and Crafts before going on to complete a course in film and TV direction at the Film & Television Institute of Tamil Nadu. He makes his directorial debut with this short film.

विनोद मन्कारा

वर्ष 1967 में जन्मे विनोद मन्कारा ने दृश्य माध्यम में तुलनात्मक रूप से हाल ही में प्रवेश किया है और अपना ध्यान वृत्तचित्रों पर केंद्रित किया है। वे अब तक 200 से ज्यादा वृत्तचित्र बना चुके हैं। उनके कई वृत्तचित्रों को पुरस्कार मिल चुके हैं और उन्हें मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह सहित अनेक फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया है। वे फिलहाल दूरदर्शन, तिरुवनंतपुरम के लिए एक वृत्तचित्र श्रृंखला पर कार्य कर रहे हैं। वह एक लेखक भी हैं और उनके नाटक, कविताएं तथा कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा रेडियो पर प्रसारित हो चुकी हैं।

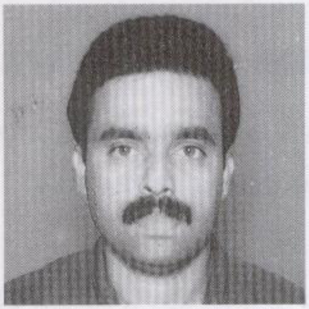

VINOD MANKARA

1967-born Vinod Mankara entered the field of visual media comparatively recently and has focused on documentaries, having already made over 200. He has won a number of awards for his documentaries, which have been shown in various film festivals including the Mumbai International Film Festival. He is currently working on a series of documentaries for Doordarshan, Thiruvanathapuram. He is also a writer and his plays, poems and stories have been published in various periodicals and broadcast on radio.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म के लिए पुरस्कार

द मॉरंग - साइलेंट विटनेस ऑफ द ब्रेव वांचो (अंग्रेजी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, **निर्माता को निदेशक, एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **बप्पा रे**

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म के लिए पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म द मॉरंग - साइलेंट विटनेस ऑफ द ब्रेव वांचो को अरुणाचल प्रदेश की वांचो जनजाति के विस्तृत साथ ही साथ परिश्रमपूर्ण चित्रण के लिए दिया गया है। फिल्म इस जनजाति के अतीत एवं वर्तमान की कहानी इस समुदाय में किसी समय 'शयनागार' द्वारा निभायी गयी मुख्य भूमिका के माध्यम से कहती है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

THE MORUNG - SILENT WITNESS OF THE BRAVE WANCHO (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **DIRECTOR, ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **BAPPA RAY**

CITATION
The award for the Best Anthropological/Ethnographic film of the year 2002 is given to the English film *The Morung - Silent Witness of the Brave Wancho* for its detailed and painstaking yet engaging documentation of The Wancho Tribe of Arunachal Pradesh. The film imaginatively tells the story of both their past and the present through its vivid account of the central role that the 'dormitory' once played in the community.

बप्पा रे

बप्पा रे आदिवासी एवं जनजाति विकास में गहरी रूचि रखने वाले फिल्मकार हैं। वे पिछले दो दशकों से आदिवासी समुदायों के बीच कार्य कर रहे हैं। उनके वृत्तचित्र साक्षरता एवं महिला सशक्तिकरण पर भी केंद्रित रहे हैं।

रे वांगला - गारो उत्सव (1993), लद्दाख - इंडस के संग जीवन (1994) तथा पर्श्मिना रॉयल के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं। उनकी पहली फीचर फिल्म, एक दिस गूंजा एक जनजातीय क्षेत्र में साक्षरता पर आधारित थी तथा 1995 के भारतीय पेनोरमा में शामिल की गयी थी। इसके बाद उन्होंने उत्तरप्रदेश के एक छोटे शहर में महिला सशक्तिकरण के विषय पर एक और फीचर फिल्म, एक छोटी-सी आशा बनायी है। रे ने हाल ही में एक अन्य वृत्तचित्र, बनम - मिथ एंड कॉस्मोलॉजी ऑफ संथाल पूर्ण किया है।

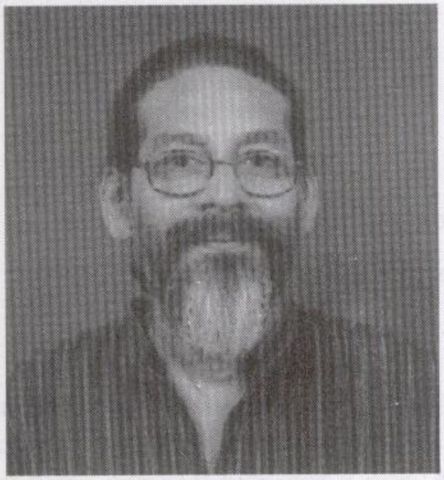

BAPPA RAY

Bappa Ray is a filmmaker with a keen interest in tribes and tribal development. He has been working among tribal communities for the past two decades. His documentaries also focus on literacy and women's empowerment.

Ray has won National Awards for *Wangala – A Garo Festival* (1993), *Ladakh – Life Along the Indus* (1994) and *Pashmina Royale*. His first feature film, *Ek This Goonja*, focused on literacy in a tribal area and was included in the Indian Panorama in 1995. He has since made another feature film, *Ek Chotisi Asha*, about the issue of women's empowerment in a small town in Uttar Pradesh. Ray recently completed another documentary film, *Banam – Myth and Cosmology of the Santhal.*

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म

मीटिंग मनजीत (अंग्रेजी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **इना पुरी**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **बुद्धदेव दासगुप्ता**

विवरण

वर्ष 2002 का जीवनी पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार चित्रकार मनजीत बावा पर आधारित अंग्रेजी फिल्म मीटिंग मनजीत को दिया गया है। बुद्धदेव दासगुप्ता ने सिनेमा की दृश्य-संभावनाओं का तीक्ष्ण प्रयोग करके हमें एक कलाकार के जीवन, उसके अवचेतन तथा कैनवास पर उसकी रचना की दुर्लभ झलक दिखलाई है। फिल्म में विलक्षण ढंग से कलाकार, उसकी मित्र इना तथा स्वयं फिल्मकार की यात्राओं को गुंथा गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

MEETING MANJIT (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **INA PURI**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **BUDDHADEB DASGUPTA**

CITATION

The award for the Best Biographical Film of the year 2002 is given to the English film *Meeting Manjit*. On the painter Manjeet Bawa, the film's maker Buddhadeb Dasgupta makes incisive use of the visual potential of cinema to give us rare insight into an artist's life, his subconscious and its articulation on canvas. The film brilliantly juxtaposes the journeys of the artist, his friend Ina and the filmmaker himself.

इना पुरी

इना पुरी दो दशक से अधिक समय से भारतीय कला तथा कलाकारों की उन्नति के लिए गहराई से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने विश्वभर में भारतीय कला केंद्र सजाये हैं। पिछले छह सालों से वह मनजीत बावा से निकटता से जुड़ी हुई हैं और उनके तमाम प्रदर्शनियों एवं कला-प्रोजेक्टों का ध्यान रखती हैं। वे शिवकुमार शर्मा पर स्मारिका तथा चित्रकार मनजीत बावा, जोगेन चौधुरी, थोटा वैकुंठम की लघु जीवनियां प्रकाशित कर चुकी हैं। उन्होंने राज भवन, कोलकाता, महानता के दो सौ वर्ष का संपादन किया है तथा आजकल वे बावा की जीवन लिख रही हैं तथा शांतिनिकेतन पर एक पुस्तक पर कार्य कर रही हैं।

INA PURI

Ina Puri has been deeply involved in promotion of Indian art and artists for over two decades. She has been showcasing Indian art centres across the globe. In the past six years, she has been closely associated with Manjit Bawa – overseeing his exhibitions and art projects. She has published a memoir of Shiv Kumar Sharma, and short biographies of painters Bawa, Jogen Chowdhuri, Thota Vaikuntham and edited *Raj Bhawan, Kolkata, Two Hundred Years of Grandeur* and is presently writing a biography of Bawa and working on a book on Shantiniketan.

बुद्धदेव दासगुप्ता

बहुविध-प्रतिभाशाली व्यक्ति बुद्धदेव अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं। आलोचक उनकी गणना आज भारत के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के रूप में करते हैं। बुद्धदेव की सभी फिल्में उनके विशिष्ट व्यक्तित्व का परिचय देती हैं, उनमें से अनेक फिल्में एक अद्‌भुत मौलिकता का प्रदर्शन करती हैं। उनकी फिल्मों में अपने संसार के प्रति कलाकार का अनुभव संवेदनपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण और मानवतापूर्ण है और उनकी फिल्मों में इस बारे में उनकी व्याख्या अपनी कलात्मक क्षमता तथा क्रियात्मकता के लिए विश्व भर में विख्यात है। उन्हें अपने काम के लिए भारत तथा विदेशों में अनेक पुरस्कार मिले हैं जिनमें चार राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल हैं। उनकी अधिकांश फिल्मों ने प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय समारोह में पर्याप्त ख्याति हासिल की है। उनकी फिल्में - दूरत्व (1978), गृहजुद्ध (1981) तथा अंधी गली (1984) एक ऐसा त्रिकोण बनाती हैं, जिसने उन्हें एक संभावनापूर्ण निर्देशक के रूप में स्थापित किया। और उनकी अगली फिल्मों ने उन संभावनाओं को परिपूर्ण किया। इन फिल्मों में फेरा (1986), बाघ बहादुर (1989), तहादेर कथा (1992), चराचर (1993), लाल दर्जा (1996) उत्तरा (2000) और जरासंको ठाकुरवानी (2001) शामिल हैं।

BUDDHADEB DASGUPTA

A multi-talented person, Buddhadeb is an economics professor by training. Critics consider him as India's foremost director today. All his films reflect his vibrant individualism, many of them exhibiting an amazing originality. The artist's response to his world in all his films is sensitive, intelligent and humane, and his interpretation of it on the screen is internationally famous for its artistic skill and creativity. His works have won numerous awards in India and abroad. His initial films - *Dooratwa* (1978), *Grihajuddha* (1981) and *Andhi Gali* (1984) - formed a trilogy that served to establish him as a director to look out for. And the promise has been amply fulfilled in his later body of work - *Phera* (1986), *Bagh Bahadur* (1989), *Tahader Katha* (1992), *Charachar* (1993), *Lal Darja* (1996), *Uttara* (2000) and *Jorasanko Thakurbari* (2001).

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म के लिए पुरस्कार

दी आई ऑफ द फिश - द कलारिज़ ऑफ केरला (अंग्रेजी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **फिल्म प्रभाग**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **प्रिया कृष्णास्वामी**

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म दी आई ऑफ द फिश - द कलारिज ऑफ केरला को दिया गया है। कलारिप्पायुट्टु पर की समृद्ध छवि से भरपूर यह फिल्म अपनी सरल और प्रभावी कथा के माध्यम से हिंसा और युद्ध को नकारने तथा आत्म-विश्वास के प्रबल साधन के रूप में एक सुनिश्चित मानसिकता को विकसित करने का सशक्त संदेश देती है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

THE EYE OF THE FISH - THE KALARIES OF KERALA (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **PRIYA KRISHNASWAMY**

CITATION

The award for the Best Arts/Cultural Film of the year 2002 is given to the English film *The Eye of the Fish - The Kalaries of Kerala*. The rich visual texture of the film on Kalarippayuttu with its simple and effective story telling powerfully counterpoints its message of the need to reject violence and war and develop a focused mind as a potent tool of self-realisation.

प्रिया कृष्णा स्वामी

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से डिप्लोमा करने वाली प्रिया कृष्णास्वामी एक स्थापित फिल्म एडिटर है। उनके बनाये हुए वृत्तचित्रों में यूनियन कार्बाइड प्लांट के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के दृष्टिकोण से भोपाल गैस त्रासदी को दर्शाने वाला वृत्तचित्र द सेडक्शन ऑफ डॉ. लोया तथा 12वीं शताब्दी में मदीना से पैगम्बर द्वारा भारत में इस्लाम के प्रचार के लिए भेजे गये सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की कथा कहने वाला वृत्तचित्र गेटवे टू हेवन शामिल है। कृष्णास्वामी द्वारा संपादित फीचर अवधि की कथा फिल्मों में भोपाल एक्सप्रेस, बाम्बे बायज और पर्सी शामिल है।

PRIYA KRISHNASWAMY

Priya Krishnaswamy is an established editor with a diploma from the Film and Television Institute of India, Pune. She has made documentaries like The Seduction of Dr. Loya, which sees the Bhopal gas tragedy from the point of view of the Union Carbide plant's chief medical officer, and Gateway to Heaven, which tells the story of Khwaja Moinuddin Chisti, the Sufi saint who was sent from Medina by the Holy Prophet to popularize Islam in India in the 12th century. Among the feature-length fiction films that Krishnaswamy has edited are *Bhopal Express*, *Bombay Boys* and *Percy*.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म के लिए पुरस्कार (जागरुकता सम्मिलित)

उरुमाट्रम (तमिल)

रजत कमल एवं 5,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को जी. मीनाक्षी सुंदरम एवं बी. सिवकुमार

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को बी. सिवकुमार

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण/संरक्षण फिल्म का पुरस्कार तमिल फिल्म उरुमाट्रम को दिया गया है। यह फिल्म एक गतिशील लघु कथा है जिसमें प्रकृति के साथ आदमी के रिश्ते में मानवीय भावनाओं का समावेश किया गया है। एक प्लास्टिक फैक्ट्री के निर्माण के लिए जब एक वृक्ष के बलिदान का अवसर आता है उस समय पोता उम्मीद की कोंपलें जगाता है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/CONSERVATION/ PRESERVATION FILM (Including awareness)

URUMATTRAM (Tamil)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Producers **G. MEENAKSHI SUNDARAM & B. SIVAKUMAR**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **B. SIVAKUMAR**

CITATION

The award for the Best Environment/Conservation/Preservation film of the year 2002 is given to the Tamil film *Urumattram*. The film is a moving short fiction that captures the depth of human emotions embodied in man's relationship with nature that nurtures him. Even as all seems lost to the family patriarch, as trees must make way for a plastic factory, the grandson offers seeds of hope.

जी. मीनाक्षी सुंदरम

चेन्नई के तमिलनाडु फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से अभिनय में डिप्लोमा करने वाले जी. मीनाक्षी सुंदरम या जी.एम. सुंधर विज्ञान में स्नातक हैं। उन्हें पहला अवसर निर्देशक के. बालचंदर ने पुन्नगई मन्नान में दिया। उन्होंने 20 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया। सथ्या, नानबारगल, आधार्मम और किझाकुम मेरकुम में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई। उरुमत्तरम निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है। उन्होंने फिल्म में एक आधुनिक युवा की भूमिका अदा की है।

G. MEENAKSHI SUNDARAM

A science graduate with a Diploma in acting from the Film and Television Institute of Tamil Nadu, Chennai, G. Meenakshi Sundaram or G.M. Sundhar was given his first break by director K. Balachander in Punnagai Mannan. He has acted in over 20 films, playing key roles in *Sathya, Nanbargal, Adharmam* and *Kizhakum Merkum. Urumattram* is his first film as a producer. He plays the role of a modern youth in the film.

बी. सिवकुमार

1974 में जन्मे बी. सिवकुमार मल्टीमीडिया (एनिमेशन 3डी मेक्स) के प्रशिक्षित विशेषज्ञ हैं। उन्होंने फिल्म उद्योग में सहायक निर्देशक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने रविचंद्रन के साथ *कन्नेथिराए थोन्ड्रीनल*, गोवंथमन के साथ *कन्नावए कलैयाथाए* और जानकी विश्वनाथन के साथ *कुट्टी* में काम किया है। कुट्टी ने 2001 में सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल किया था। वे व्यावसायिक विज्ञापन भी कर चुके हैं। आयिशा निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है। आयिशा ने 7वें मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 2002 में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार जीता। फिल्म को लंदन में 2001 में सिने संगम द्वारा सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। इस फिल्म को हैदराबाद में आयोजित 12वें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह के अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता खंड में शामिल किया गया था। इसे 2002 में भारतीय पेनोरमा में प्रदर्शित किया गया। उनकी लघु फिल्म उरुमत्तरम मानव सम्बन्ध तथा पर्यावरण असंतुलन के सम्बन्ध में है।

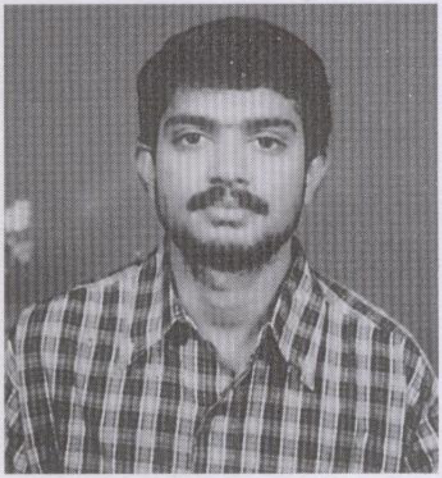

B. SIVAKUMAR

Born in 1974, B. Sivakumar is a qualified professional in multimedia (animation 3D Max). He entered film industry as assistant director. He has worked with Ravi Chandran in *Kannethirae Thondrinal*, Gowthaman in *Kannavae Kalaiyathae* and Janaki Viswanathan in *Kutty*. Kutty won the National Award for Best Child artiste of 2001. He has also done commercial Ads. *Aayeeshaa* is his debut film as a director. *Aayeeshaa* won best second short film at the 7th Mumbai International Film 2002. It got best short film at London in 2001 by Cine Sangam. It was screened at International Competitive section at 12th International Children Film Festival 2001 held in Hyderabad. It was also screened at the Indian Panorama in 2002. His short film *Urumattram* is about the human relationships and environmental disturbance.

सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म के लिए पुरस्कार (पर्यटन, निर्यात, कला, उद्योग आदि के लिए)

द ट्रेज़र इन द स्नो : ए फिल्म आन सिक्किम (अंग्रेजी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **विदेश मंत्रालय**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **गौतम घोष**

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ प्रमोशनल फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म द ट्रीजर इन द स्नो : ए फिल्म आन सिक्किम को दिया गया है। इस फिल्म में सिक्किम के प्रचुर प्राकृतिक सौंदर्य को, उसके इतिहास, लोगों एवं संस्कृति को दर्शाया गया है। यह फिल्म एक ऐसा जादुई सिनेमाई विन्यास है जिसमें वहाँ के रहस्य व अन्य पहलुओं को बड़ी स्पष्टता से चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM (to cover tourism exports, crafts, industry etc.)

THE TREASURE IN THE SNOW: A FILM ON SIKKIM (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **GOUTAM GHOSE**

CITATION

The award for the Best Promotional Film of the year 2002 is given to the English film *The Treasure in the Snow: A Film on Sikkim* for its weaving of a magical cinematic spell that vividly captures the mist and mystery of the abundant natural beauty of Sikkim - its history, people and culture.

गौतम घोष

भारत के सर्वाधिक विख्यात निर्देशकों में से एक गौतम घोष को अपनी फिल्मों में गैरसमझौतावादी वास्तविकता के चित्रण के लिए जाना जाता है। उनके विषय विषमताओं के खिलाफ संघर्ष के अनगाये महाकाव्य से उपजते हैं। फरीदपुर में जन्मे घोष एक सक्रिय छात्र आंदोलनकारी रहे हैं। उन्होंने स्वतंत्र पत्रकार तथा नाट्य निर्देशक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। महान वृत्तचित्रकार सुखदेव से प्रभावित घोष ने अपनी फोटोपत्रकारिता के साथ-साथ वृत्तचित्र बनाना शुरू किया। उन्होंने पहली फीचर फिल्म तेलुगू में माभूमि (1979) तेलंगाना आंदोलन पर बनायी। इस फिल्म ने उन्हें बहुत ख्याति दिलायी। उनकी अगली फीचर फिल्में - दखल (1981) और पार (1984) ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म संसार का स्थायी हिस्सा बना दिया। यद्यपि उन्होंने तुलनात्मक रूप से कम फिल्में बनायी हैं किंतु उनकी लगभग सभी फिल्मों ने उन्हें चौतरफा सम्मान दिलाया, विशेषकर अंतर्जली यात्रा (1987), पद्मा नदीर माझी (1992), पतंग (1993) और देखा (2001) ने। उन्होंने फिल्मों में अभिनय भी किया और संगीत रचना भी की है।

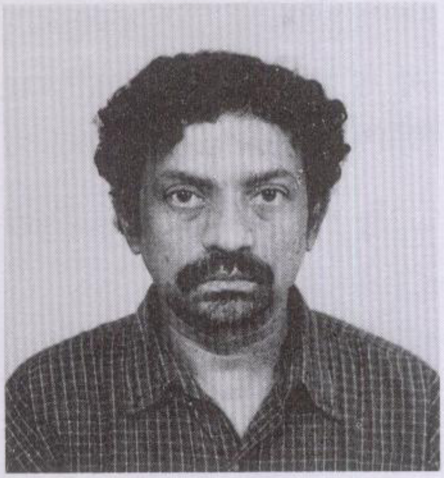

GOUTAM GHOSE

One of India's most acclaimed directors, Ghose is best known for the uncompromising realism he brings to his films. His subjects are often the most marginalized, struggling in their epic, unsung battles against odds. Born in Faridpur, he was an active student activist. He started working as a freelance journalist and a fringe theatre director. Influenced by the legendary documentary filmmaker, Sukhdev, he started making documentaries as an aside to his photojournalism. He made his debut feature on the Telengana Uprising, *Maabhoomi* (1979) in Telugu. The film brought him much acclaim, and his next feature, *Dakhal* (1981) and *Paar* (1984) made him a fixture in international film circles. Though he has made comparatively few films, almost all of them got widespread accolades, especially *Antarjali Yatra* (1987), *Padma Nadir Majhi* (1992), *Patang* (1993) and *Dekha* (2001). He has also acted in, and composed music for, films.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म के लिए पुरस्कार (मद्यनिषेध, महिला व बाल कल्याण तथा दहेज, नशाविरोधी, विकलांग कल्याण आदि)

अवचेतन (हिंदी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **फिल्म प्रभाग**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **मनीषा द्विवेदी**

विवरण
वर्ष 2002 का सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हिंदी फिल्म अवचेतन को व्यक्तिगत रूप से एवं परिवार में संमलैंगिकता की स्थिति एवं संकटों के संवेदनशील तथा स्पष्ट चित्रण के लिए दिया गया है। मनीषा द्विवेदी के नेतृत्व में एफटीआईआई की बेहतरीन नयी प्रतिभाओं को एकत्रित करने में इस लघु फिल्म ने सशक्त रूप से वृहत आयाम प्रदान किया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.)

AVCHETAN (Hindi)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Producers **FILMS DIVISION AND MINISTRY OF SOCIAL EMPOWERMENT**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **MANISHA DWIVEDI**

CITATION
The award for the Best Film on Social Issues of 2002 is given to the Hindi film *Avchetan* for its sensitive and direct portrayal of the predicaments and crisis of homosexuality both for the individual and his family. The short film powerfully covers a large canvas bringing together a team of outstanding new talent from the FTII led by Manisha Diwedi.

मनीषा द्विवेदी

मनीषा द्विवेदी का जन्म 1969 में लखनऊ में तथा पालन-पोषण दिल्ली में हुआ। 1991 में दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक की उपाधि हासिल करने के पश्चात उन्होंने वीडियो संपादक के रूप में विभिन्न प्रोडक्शन हाउस तथा चैनलों में नौ वर्ष तक कार्य किया। वे एफटीआईआई के निर्देशन के तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स में 2000 में सम्मिलित हुईं। इस समय वे संस्थान में अंतिम वर्ष की छात्रा हैं।

MANISHA DWIWEDI

Manisha Dwivedi was born in Lucknow in 1969 and brought up in Delhi. After graduating in Economics (Honours) from Delhi University in 1991, she worked as a video editor for nine years with various production houses and television channels. She joined the FTII's three-year Diploma Course in Direction in 2000. At present she is a final year student of the institute.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

रिक बसु

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **रिक बसु**

विवरण

वर्ष 2002 का विशेष जूरी पुरस्कार रिक बसु एवं उनके दल को अंग्रेजी फिल्म 00:00 के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार नव वर्ष की पूर्व संध्या पर सागर किनारे स्थित एक होटल के कमरों के भीतर व बाहर तथा उनमें रहने वाले लोगों के इर्दगिर्द बुने गये ताने-बाने के लिए सिनेमा विधा के बुद्धिमत्तापूर्ण तथा आकर्षक उपयोग के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

WRIK BASU

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **WRIK BASU**

CITATION

Special Jury Award for the year 2002 is given to the Director Wrik Basu and his team for the English film *00:00* for its intelligent and engaging use of cinematic form and structure as it weaves itself in and out of hotel rooms and peoples' lives on New Year's Eve at a sea-side hotel.

रिक बसु

रिक बसु का जन्म 1977 में मुंबई में हुआ। उन्होंने सेंट जेवियर कालेज, मुंबई से अंग्रेजी साहित्य में बी.ए. किया। वे फरवरी 2000 में एफटीआईआई में दाखिल हुए। यह लघु फिल्म 00:00 उनके द्वितीय वर्ष के अध्ययन के दौरान प्रयोगात्मक रूप से तैयार की गई है। वर्तमामन वे एफटीआईआई के निर्देशन पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष के छात्र हैं।

WRIK BASU

Wrik Basu was born in Mumbai in 1977. He did his B.A. (English Literature) from St Xavier's College, Mumbai. He joined FTII in February 2000. The short film 00:00 is an exercise completed during his second year studies. At present he is a final year student of the FTII's direction course.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म के लिए पुरस्कार

सुंदेर जीबोन (बांग्ला)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **संदीप चटोपाध्याय**

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म का पुरस्कार बांग्ला फिल्म सुंदेर जीबोन को एक लेखक के बारे में तथा सौंदर्य के खट्टे अनुभव के बारे में एक संवेदनशील व रोचक कथा के लिए दिया गया है। फिल्म अपनी तकनीकी श्रेष्ठता के लिए याद की जाएगी। युवा निर्देशक संदीप चटोपाध्याय तथा सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता के उनके सहयोगियों द्वारा रची गयी बेहतरीन प्रस्तुति है यह फिल्म। यह पुरस्कार उन सबकी सराहना है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

SUNDER JEEBON (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **SATYAJIT RAY FILM & TELEVISION INSTITUTE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **SANDEEP CHATTOPADHYAY**

CITATION
The award for the Best Short Fiction Film of the Year 2002 is given to the Bengali film Sunder Jebon for its sensitive and nuanced story about a writer and the sour taste of beauty. The film is notable for its technical excellence and the excellent synergy created by the young director Sandip Chattopadhyay and his colleagues from the Satyajit Ray Film & Television Institute in Kolkata. This award applauds them all.

संदीप चटोपाध्याय

1966 में जन्मे संदीप चटोपाध्याय ने फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ सिनेमा में डिप्लोमा हासिल किया। उन्होंने अनेक लघु फिल्मों व वृत्तचित्रों का निर्माण किया। इनमें शामिल हैं *रिकॉनैसेंस, फार्मेसी इन माडर्न इंडिया, चित्र एंड मैरिज - चैंजिंग सरनेम्स*। उन्होंने विज्ञापन एवं कार्पोरेट फिल्में भी बनायी हैं। टेलीविजन के उनके कार्य में अनुरोधेर गान एवं जबाब नेई शामिल है। वे 1997 से सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता में पढ़ा रहे हैं।

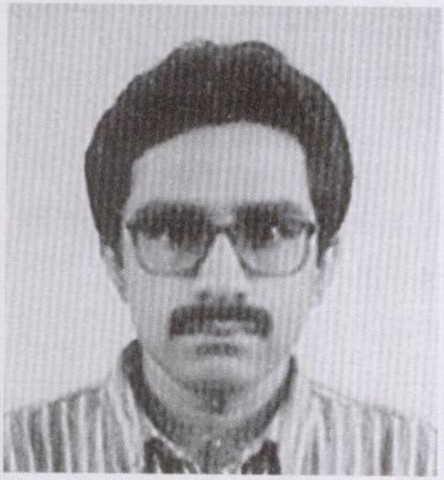

SANDEEP CHATTOPADHYAY

1966-born Sandeep Chattopadhyaya has a Diploma in cinema with a specialisation in direction from the Film and Television Institute, Pune. He has made a number of short films and documentaries including *Reconnaissance, Pharmacy in Modern India, Chitra* and *Marriage – Changing Surnames*. He has also made advertising and corporate films. His work on television includes *Anurodher Gaan* and *Jabab Nei.* He has also been teaching at the Satyajit Ray Film and television Institute, Kolkata since 1997.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म के लिए पुरस्कार

धात्री पन्ना (हिंदी)

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्माता को **फिल्म प्रभाग एवं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय**

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **गुल बहार सिंह**

विवरण
वर्ष 2002 का परिवार कल्याण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हिंदी फिल्म *धात्री पन्ना* को सिनेमाई कथा कथन की सरल किंतु कठिन कला के लिए दिया गया है। फिल्म अपने ग्रामीण दर्शकों को यह महत्वपूर्ण एवं स्पष्ट संदेश देती है कि किस प्रकार गाँव की दाई की परम्परा को छोड़कर एक प्रशिक्षित परिचारिका को स्वीकार किया जाना अनिवार्य है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

DHATRI PANNA (Hindi)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- each to Producers **FILMS DIVISION** and **MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Director **GUL BAHAR SINGH**

CITATION
The award for the Best Film on Family Welfare for the year 2002 is given to the Hindi film *Dhatri Panna* for its success in the simple yet difficult art of cinematic story telling with an important and explicit message for its rural audience, of how the tradition of the village *dai* (midwife) can and must give way to the trained midwife.

गुल बहार सिंह

कलकत्ता निवासी गुल बहार सिंह को 1986 में फिल्म *अंकुरण* के लिए तथा 1992 में *बॉयोटेक्नोलॉजी; सम पॉसिबिलिटीज़* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। उन्होंने पाँच वर्षों तक फिल्म निर्माण का अध्ययन किया। उन्होंने अपने पहले वृत्तचित्र *वीड्स* का निर्माण 1980 में क्रिया, उसके बाद से अब तक वे अनेक फीचर फिल्मों व वृत्तचित्रों का निर्माण कर चुके हैं। उनकी फीचर फिल्म सुंदरी को कोलकाता फिल्म समारोह तथा सोची में आयोजित छठे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया।

44 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के तहत परिवार कल्याण पर बनायी गयी सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार उनकी फिल्म *भीत* को दिया गया। उनकी फिल्म गोतीपुआ को 45 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के दौरान विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया। वे दूरदर्शन के लिए मुंशी प्रेमचंद के जीवन पर एक वृहत् वृत्तचित्र बना चुके हैं।

GUL BAHAR SINGH

Kolkata–based Gul Bahar Singh won the National Award for film *Anukaran* in 1986 and *Biotechnology: Some Possibilities* in 1992. He spent five years as an understudy in filmmaking. He made his first documentary film *Weeds* in 1980, and has since then made a number of feature and documentary films. His feature film, *Sundari,* was shown at the Kolkata Film Festival and also participated in 6th International Film Festival in Sochi.

He won the National Award as Best Film on Family Welfare for the film *Bheet* at 44th National Film Award. His film *Gotipua* has been awarded a special mention in the 45th National Film Awards. He has made a long documentary film on the life of Munshi Premchand for Doordarshan.

सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार

अंजली पंजाबी

स्वर्ण कमल एवं 20,000 रुपये नकद पुरस्कार, निर्देशक को **अंजली पंजाबी**

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का पुरस्कार अंजली पंजाबी को संत मीरा बाई पर उनकी अंग्रेजी फिल्म *ए फ्यू थिंग्स आय नो अबाउट हर* के लिए दिया गया है। दुर्लभ सिनेमाई निपुणता के साथ उन्होंने मीराबाई की कविताओं, उनके बारे में प्रचलित कहानियों, मिथ आदि से उभरने वाले विभिन्न पक्षों को एकत्रित कर प्रस्तुत किया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

ANJALI PANJABI

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to Director **ANJALI PANJABI**

CITATION
The award for the Best Direction for the Year 2002 is given to Anjali Panjabi for the English film *A Few Things I Know About Her* on the saint Mirabai. With rare cinematic virtuosity, she brings together different strands from the elusive Mirabai's drawing upon stories, poetry, myth and legend into a cohesive whole.

अंजली पंजाबी

साहित्य एवं भाषाविज्ञान में एम.ए. अंजली पंजाबी *मानसून वेडिंग* के फिल्मांकन के दौरान मीरा नायर की प्रथम सहायक थीं। इस फिल्म को वेनिस में पुरस्कार मिला और इसका नामांकन गोल्डन ग्लोब के लिए किया गया। उन्होंने नायर के साथ कामसूत्र तथा हाल ही में वृत्तचित्र *द लॉफर क्लब ऑफ इंडिया* के लिए भी कार्य किया जिसका चयन आस्कर के लिए किया गया है। इससे पहले वह देव बेनेगल के साथ हिंदी एवं अंग्रेजी में एक साथ बनने वाली पहली भारतीय फिल्म *इंग्लिश ऑग्सट*, कैजाद गुस्ताद की *बॉम्बे बॉयज* और मंसूर खान की *अकेले हम अकेले तुम* के साथ जुड़ी रही हैं। इसके अतिरिक्त अंजली कनाडाई टीवी की श्रृंखला टर्निंग पाइंट की सहयोगी संपादक के रूप में तथा कनाडा के राष्ट्रीय फिल्म बोर्ड के लिए निशा पाहुजा द्वारा निर्देशित बॉलीवुड बाउंड के साथ शोधकर्ता के रूप में जुड़ी रही हैं। वह एक वर्ष तक एक विज्ञापन फर्म के साथ भी काम कर चुकी हैं।

ANJALI PANJABI

An M.A. in literature and linguistics, Anjali Punjabi was first assistant to Mira Nair during the filming of *Monsoon Wedding*, which received an award at Venice and nominated for the Golden Globe. She also worked with Nair on *Kamasutra* and recently, on her documentary *The Laughter Club of India*, which was shortlisted for the Oscars.

Earlier, she worked with Dev Benegal on *English August*, the first Indian film made in English and Hindi. Kaizaad Gustaad's *Bombay Boys* and Mansoor Khan's *Akele Hum Akele Tum* are the other feature films she was associated with. Besides these, Anjali was associate director of *Turning Point*, a series for Canadian Television, and a researcher for *Bollywood Bound*, directed by Nisha Pahuja for the National Film Board of Canada. She also worked with an advertisement firm for a year.

सर्वोत्तम संपादन के लिए पुरस्कार

प्रथापन पी.

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, संपादक को प्रथापन पी.

विवरण

वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ संपादन का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म 00:00 के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार नव वर्ष की पूर्व संध्या पर सागर किनारे स्थित एक होटल के कमरों के भीतर व बाहर तथा उनमें रहने वाले लोगों के इर्दगिर्द बुने गये ताने-बाने के लिए सिनेमा विधा के बुद्धिमत्तापूर्ण तथा आकर्षक उपयोग के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

PRATHAPAN P.

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor

CITATION

The award for the Best Editing for the Year 2002 is given to Prathpan P. for the English film *00:00* for its intelligent end engaging use of cinematic form and structure as it weaves itself in and out of hotel rooms and people's lives on New Year's Eve at a sea-side hotel.

पी. प्रथापन

केरल विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक प्रथापन ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से संपादन में तथा विज्ञान एवं विकास संवाद में सेंटर फॉर डेवेलपमेंट ऑफ इमेजिंग टेक्नॉलाजी से स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने सी-डिट के लिए विभिन्न लघु वृत्तचित्रों का निर्देशन क्रिया है तथा कुछ फिल्मों के लिए सहायक केमरामैन के रूप में कार्य किया है।

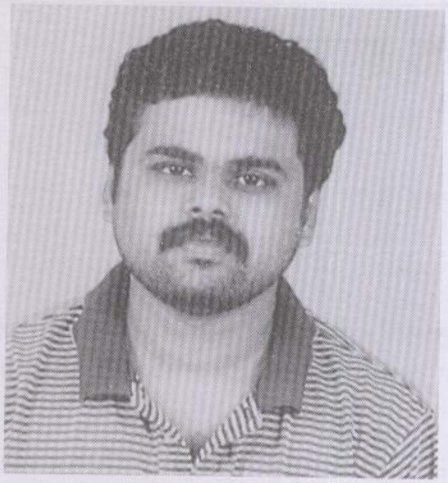

PRATHAPAN P.

A graduate in Sciences from the University of Kerala, he also has post-graduate diplomas in Editing from the Film and Televsion Institute of India and one in Science and Development Communication from the Centre pf Development of Imaging Technology. He has also scripted and directed various short documentaries for C-DIT and assisted in several films as assistant cameraman.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन के लिए पुरस्कार

राजा मित्रा

रजत कमल एवं 10,000 रुपये नकद पुरस्कार, संगीत निर्देशक को **राजा मित्रा**

विवरण
वर्ष 2002 का सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन का पुरस्कार राजा मित्रा को अंग्रेजी फिल्म कालीघाट पेंटिंग्स एंड ड्राइंग के लिए दिया गया है। फिल्म में सरल मगर छूने वाले संगीत के माध्यम से राजा ने कालीघाट पेंटिंग्स को सजीव कर दिया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

RAJA MITRA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to Music Director **RAJA MITRA**

CITATION
The award for the Best Music Direction for 2002 is given to Raja Mitra for the English film *Kalighata Paintings and Drawings* for a simple yet engaging music track that brings alive the Kalighat paintings in the film.

राजा मित्रा

1947 में जन्मे तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से कला स्नातक राजा मित्रा पिछले दो दशकों से वृत्तचित्र तथा लघु फिल्में बना रहे हैं। उनमें *कलकत्ता फूटपाथ ड्वेलर* (1980), *कलकत्ता - पास्ट एंड प्रेजेंट* (1987), *जीबन पतुआ* (1993), *बियांड ए हेड काउंट, आश्रय एंड विद्यासागर* (सभी 1993) उल्लेखनीय हैं। उनके द्वारा बनायी गयी फीचर फिल्मों में एकटी जीबन (1987) शामिल है जिसे कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए तथा भारतीय पैनोरमा में सम्मिलित किया गया। इसके अलावा उन्होंने बेहुला (1989), नयनतारा (1996), जतनेर जामी (1998) तथा अहंकार (1999) भी बनायीं।

RAJA MITRA

An arts graduate form the University of Calcutta, 1947-born Raja Mitra has been making documentaries and short films for over two decades. Notable among them has been *Calcutta Footpath Dweller* (1980), *Calcutta - Past and Present* (1987), *Jiban Patua* (1993), *Beyond a Head Count, Ashray* and *Vidyasagar* (all in 1993). He has also made feature films, including *Ekti Jibon* (1987), which won numerous national and international awards and was part of the Indian Panorama. He has also made *Behula* (1989), *Nayantara* (1996), *Jataner Jami* (1998) and *Ahankar* (1999).

विशेष उल्लेख

राजा मित्रा

विवरण
वर्ष 2002 का विशेष उल्लेख राजा मित्रा को अंग्रेजी फिल्म कालीघाट पेंटिंग्स एंड ड्राइंग के लिए दिया गया। एक समृद्ध कलात्मक परम्परा का चित्रण तथा उसकी संदेहहीन सामाजिक टीका में विशिष्ट उपलब्धि के लिए यह पुरस्कार दिया गया।

SPECIAL MENTION

RAJA MITRA

CITATION
The Special Mention for 2002 is Raja Mitra, the director of the English film *Kalighat Paintings and Drawings,* for his significant achievement in documenting the rich artistic tradition and its implicit social commentary.

राजा मित्रा

1947 में जन्मे तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से कला स्नातक राजा मित्रा पिछले दो दशकों से वृत्तचित्र तथा लघु फिल्में बना रहे हैं। उनमें *कलकत्ता फूटपाथ ड्वेलर* (1980), *कलकत्ता - पास्ट एंड प्रेजेंट* (1987), *जीबन पतुआ* (1993), *बियांड ए हेड काउंट, आश्रय एंड विद्यासागर* (सभी 1993) उल्लेखनीय हैं। उनके द्वारा बनायी गँयी फीचर फिल्मों में एकटी जीबन (1987) शामिल है जिसे कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए तथा भारतीय पैनोरमा में सम्मिलित किया गया। इसके अलावा उन्होंने बेहुला (1989), नयनतारा (1996), जतनेर जामी (1998) तथा अहंकार (1999) भी बनायीं।

RAJA MITRA

An arts graduate form the University of Calcutta, 1947-born Raja Mitra has been making documentaries and short films for over two decades. Notable among them has been *Calcutta Footpath Dweller* (1980), *Calcutta - Past and Present* (1987), *Jiban Patua* (1993), *Beyond a Head Count, Ashray* and *Vidyasagar* (all in 1993). He has also made feature films, including *Ekti Jibon* (1987), which won numerous national and international awards and was part of the Indian Panorama. He has also made *Behula* (1989), *Nayantara* (1996), *Jataner Jami* (1998) and *Ahankar* (1999).

गैर कथाचित्र पुरस्कार जो नहीं दिये गये

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण एवं संकलन फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम शैक्षिक, शिक्षाप्रद एवं निर्देशात्मक फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम अन्वेषण/साहसिक फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम खोजप्रधान फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम एनीमेशन फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम छायांकन फिल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन फिल्म पुरस्कार

NON-FEATURE FILMS AWARDS NOT GIVEN

AWARD FOR BEST SCIENTIFIC FILM
AWARD FOR BEST AGRICULTURAL FILM
AWARD FOR BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION / COMPILATION FILM
AWARD FOR BEST EDUCATIONAL / MOTIVATIONAL / INSTRUCTIONAL FILM
AWARD FOR BEST EXPLORATION / ADVENTURE FILM
AWARD FOR BEST INVESTIGATIVE FILM
AWARD FOR BEST ANIMATION FILM
AWARD FOR BEST CINEMATOGRAPHY
AWARD FOR BEST AUDIOGRAPHY

सिनेमा लेखन का पुरस्कार

Awards for writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक के लिए पुरस्कार

परमा एंड अदर आउटसाइडर्स - द सिनेमा ऑफ अपर्णा सेन (अंग्रेजी) तथा रितु आये रितु जाये (हिंदी)

स्वर्ण कमल एवं 7,500 रुपये प्रत्येक नकद पुरस्कार, लेखक को **शोमा ए. चटर्जी तथा शरद दत्त**

स्वर्ण कमल एवं 7,500 रुपये प्रत्येक नकद पुरस्कार, प्रकाशक को **परुमिता प्रकाशन्स** तथा **सारांश पब्लिकेशन्स प्रा. लि.**

विवरण

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का पुरस्कार संयुक्त रूप से शोमा ए. चटर्जी को 'परमा एंड अदर आउटसाइडर्स : द सिनेमा ऑफ अपर्णा सेन' (अंग्रेजी) तथा शरद दत्त को 'रितु आये रितु जाये' (हिंदी) के लिए दिया गया है। जहाँ शोमा ए. चटर्जी का कार्य अपर्णा सेन के कार्य का उसकी सामाजिक आर्थिक प्रासंगिकता पर स्पष्ट ध्यान केंद्रित कर लिया गया कष्टकारी एवं विचारोत्तेजक अध्ययन है, वहीं शरद दत्त ने नयी धारा प्रारंभ करने वाले संगीतकार अनिल विश्वास की जीवनी लिखी है। उनकी जीवन कथा में केवल उनका व्यक्तिगत संघर्ष और उपलब्धियां ही नहीं हैं वरन अपने रचनात्मक स्वर्णकाल के दोरान हिंदी फिल्म संगीत की पूरी छवि भी है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

PARAMA AND OTHER OUTSIDERS – THE CINEMA OF APARNA SEN (English) AND RITU AAYE RITU JAAYE (Hindi)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 7,500/- each to the authors SHOMA A CHATTERJEE and SHARAD DUTT

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 7,500/- each to the publishers **PARUMITA PUBLICATIONS and SAARANSH PUBLICATIONS PVT LTD**

CITATION

The Award for the Best Book on Cinema of the year 2002 is jointly given to Shoma A Chatterjee for The Cinema of Aparna Sen and Sharad Dutt for Ritu Aaye Ritu Jaaye. While Shoma A. Chatterjee's work is a painstaking and thought -provoking study of the works of Aparna Sen with the clear focus on their socio-economic relevance and context, Sharad Dutt has written a biography of a trend-setting music director Anil Biswas, whose lifestory encompasses not just his personal struggle and achievements but also the scenario of Hindi Film Music when it was at its creative best.

शोमा ए. चटर्जी

शोमा ए. चटर्जी पिछले दो दशकों से सिनेमा, टेलीविजन आदि पर लेखन कर रही हैं। उन्होंने 1991 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। वे 1991 में मैनहेइम हेइडैबर्ग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह तथा 1996 में लघु वृत्तचित्रों एवं एनिमेशन फिल्मों के सेंट पीटरबर्ग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की अंतर्राष्ट्रीय जूरी में भी शामिल रही हैं। उन्हें दिसंबर 1998 में बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन के सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक पुरस्कार से भी नवाजा गया। सिनेमा पर उनकी पहली पुस्तक 1998 में प्रकाशित हुई। उन्होंने हाल ही में सुचित्रा सेन तथा मृणाल सेन की दो लघु जीवनियां लिखी हैं। *द सिनेमा ऑफ अपर्णा सेन* उनकी दसवीं पुस्तक है।

SHOMA A. CHATTERJEE

Shoma A. Chatterjee has been writing on cinema, television and gender for the past two decades. She won the Best Film Critics' Award at the National Film Awards in 1991. She served on the international jury at the Mannheim Heidelberg International Film Festival in 1991 and at the St. Petersburg International film festival in 1996. She won the Bengal Film Journalist's Association Award for Best Film Critic in December 1998. She has recently written two short biographies of Suchitra Sen and Mrinal Sen respectively. *The Cinema of Aparna Sen* is her 10th book.

शरद दत्त

वर्ष 1946 में जन्मे शरद दत्त 1973 से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े हुए हैं। तबसे अब तक उन्होंने टेलीविजन की सभी विधाओं में कार्यक्रम बनाये हैं। उन्होंने *द वर्ल्ड ऑफ नैचर* पर 26 कड़ियों की एक श्रृंखला का निर्माण किया जिसकी चहुविध प्रंशसा हुई तथा उसे विदेशी टीवी पर भी प्रदर्शित किया गया। 1981 में उन्होंने भारतीय वायु सेना की एयरोबेटिक टीम पर पहली रंगीन फिल्म (16 एमएम) *थंडर बोल्ट* बनायी। उन्होंने फ्रेंच टीवी के सहनिर्माण में एक फिल्म *ए लुक एट फ्रांस थ्रो इंडियन आईज* का निर्माण भी किया। उन्होंने हिंदी फिल्म संगीतकारों के जीवन पर आधारित *द मेलोडी मेकर्स* तथा गायकों के जीवन व अतीत पर *आवाज दे कहाँ है* नामक दो धारावाहिकों का निर्माण भी किया। दत्त ने भारतीय सिनेमा पर अनेक लेख लिखे। अनिल विश्वास पर उनकी जीवनी *रितु आये रितु जाये* वर्ष 2002 में प्रकाशित हुई। वर्तमान में वह दिल्ली दूरदर्शन में कार्यकारी निर्माता के रूप में कार्य कर रहे हैं।

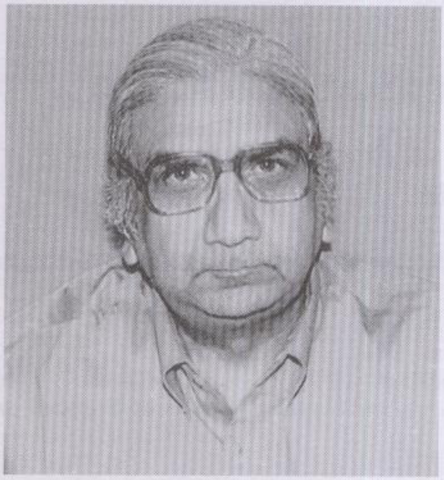

SHARAD DUTT

Born in 1946, Sharad Dutt has been associated with electronic media since 1973. He has produced programmes in all genres of television. He produced a series of 26 programmes on *The World of Nature*, which got rave reviews and was bought by foreign networks. In 1981, he produced the first colour film (16 mm) on the aerobatic team of Indian Air Force. He produced a film, *A Look at France through Indian Eyes*, a co-production with French TV. He has produced two serials *The Melody Makers*, based on the life of music directors of Hindi cinema and *Awaz De Kahan Hain*, based on the life and past singers. Dutt has written numerous articles on Indian cinema. His biography of Anil Biswas, *Ritu Aye Ritu Jaye*, was published in 2002. He is currently with Delhi Doordarshan as Executive Producer.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार 2002

उत्पल बोरपुजारी (अंग्रेजी)

स्वर्ण कमल एवं 15,000 रुपये प्रत्येक नकद पुरस्कार, लेखक को **उत्पल बोरपुजारी**

विवरण
सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक 2002 पुरस्कार उत्पल बोरपुजारी (अंग्रेजी) को भारतीय, विदेशी, फीचर तथा वृत्तचित्र आदि के व्यापक फलक पर संवेदनशील विश्लेषण के लिए तथा सामाजिक मुद्दों तथा बदलती पारिवारिक मानसिकता तथा मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करने के प्रयासों के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2002

UTPAL BORPUJARI (English)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 15,000/- to **UTPAL BORPUJARI (English)**

CITATION
Award for the Best Film Critic 2002 goes to Utpal Borpujari (English) for his sensitive analysis of a wide range – Indian, foreign, feature and documentary – and his attempt to focus on social issues and changing family morals and values.

उत्पल बोरपुजारी

उत्पल बोरपुजारी एक योग्य भूगोलशास्त्री हैं। उन्होंने आईआईटी रुड़की से व्यावहारिक भूगोलशास्त्र में एम.टेक. किया है। कैरियर के रूप में पत्रकारिता का चुनाव करने के पश्चात उन्होंने 1993 में असम के प्रमुख दैनिक *द सेंटिनल* के साथ कार्य करना शुरू किया। वे प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया में 1995 में गये और वहाँ पाँच वर्ष तक कार्य किया। कर्नाटक के प्रमुख समाचार पत्र डेक्कन हेराल्ड के दिल्ली ब्यूरो में नियुक्ति से पूर्व उन्होंने कुछ समय तक इंटरनेट पोर्टल इंडिया टाइम्स में भी कार्य किया। एक पत्रकार के रूप में अनेक सरकारी तथा राजनैतिक बीट पर कार्य करने के बावजूद वह नियमित रूप से डेक्कन हेराल्ड में सिनेमा पर लिखते रहे हैं। अपने कार्यकाल में उन्होंने चुनावों से लेकर दंगे तथा फिल्म समारोह से लेकर कला प्रदर्शनियों तक लगभग सभी विषयों पर लिखा है। वे सिनेमा को सामाजिक अभियांत्रिकी साधन के साथ-साथ मनोरंजन के माध्यम के रूप में देखने का प्रयास करते हैं। वह उत्तर-पूर्वी भारत के सिनेमा में विशेष रूचि रखते हैं।

UTPAL BORPUJARI

Utpal Borpujari is a qualified geologist. He has done an M. Tech in Applied Geology from IIT, Roorkee. After choosing journalism as his career, he started working with Assam's leading daily *The Sentinel* in 1993. He joined the Press Trust of India in 1995 and worked there for five years. Before joining the Delhi bureau of the *Deccan Herald*, a leading newspaper of Karnataka, he had a short stint with the Internet portal Indiatimes. As a journalist, he has covered several governmental and political beats and despite the hectic pace, he regularly wrote on cinema in the *Deccan Herald*.

During his career, he has covered virtually everything - from elections to riots and from film festivals to art exhibitions. He tries to dissect cinema as a social engineering tool and also a medium for entertainment. He is specially interested in writing about the cinema of north-eastern India.

विशेष उल्लेख

जूरी ने अशोक राणे (मराठी) का विशेष उल्लेख उनके भारत साथ ही साथ विदेश में सिनेमा के झुकावों के साहसिक मूल्यांकन के लिए किया है।

SPECIAL MENTION

The Jury makes a Special Mention of Ashok Rane (Marathi) for his serious bold evaluation of trends in cinema in India as well as abroad.

अशोक राणे

51 वर्षीय अशोक राणे फिल्म अकादमिक तथा पटकथा लेखक हैं। वह 1979 से मराठी दैनिक सकाल के लिए भारतीय एवं विश्व सिनेमा का मूल्यांकन कर रहे हैं। वह 1980 से फिल्म सासाइटी जर्नल में योगदान तथा उनका संपादन कर रहे हैं। वे 1984 से भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की रिपोर्टिंग कर रहे हैं। वह 1996 से 2002 तक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों के साथ-साथ बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी शामिल हुए हैं। वह 1980 से आकाशवाणी के लिए नाटक तथा फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम लिख रहे हैं। उन्होंने आठ एकपात्री नाटक तथा एक पूर्णअवधि नाटक भी लिखा है। वह प्रभात चित्र मंडल के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों विशेष कर सिनेमा, साहित्य व नाटक से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन करते रहे हैं। कुछ अवसर पर वह महाराष्ट्र राज्य फिल्म समारोह, स्क्रीन पैनोसोनिक पुरस्कार तथा डा. वी. शांताराम पुरस्कार की जूरी के सदस्य रहे हैं। वह 25वें मास्को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 2003 की विशेष जूरी के सदस्य भी रहे हैं। उनकी लघुकथाएं प्रख्यात साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। 1996 में उनकी पुस्तक *सिनेमाची चित्तकथा* को राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

ASHOK RANE

Ashok Rane, 51, is a film critic, film academician and scriptwriter. He has been reviewing Indian and World cinema for *Sakal*, a Marathi daily since 1979. He has been contributing for and also editing Film Society journal since 1980. He has been covering the International Film Festival of India since 1984. He also covered the Berlin International Festival from 1996 to 2002, besides other international festivals.

He has been writing plays and film-based programmes for All India Radio since 1980. He has written eight one-act plays and one full-length play. He has also organised many cultural events mainly dealing with cinema, literature and theatre for Prabhat Chitra Mandal. On several occasions, he has been member of the jury for Maharashtra State Film Festival, Screen-Panasonic Award and Dr V Shantaram Award. He was been a member of the Fipresci Jury at 25th Moscow International Film Festival 2003. His few short stories are published in reputed literary magazines. His *Cinema chi Chittakatha,* won the National Award in 1996.

कथासार : Synopsis:
कथाचित्र Feature Films

BAAJA

Hindi/ 80 min/ 35mm/ Colour

Director, Story, Screenplay A.K. Bir **Producer** Children's Film Society of India Cinematography **Editing** Aseem Sinha **Music** Bhavdeep Jaipurwale **Cast** Yakub Shaikh, Ram Avna, Roni Bhatt

A free and passionate human spirit is trapped in 11-year-old Shibu. In order to channelise his energy on a constructive path, Shibu's widowed mother sends him to his uncle in the city. But Shibu's energetic approach to life annoys his neighbours as well as his aunt. To keep strict watch on him while he studies, his uncle takes Shibu to his shoeshop. But when he is asked to deliver a pair of shoes to a doctor, Shibu steps out of his carefree manner. Suddenly something very unpredictable happens, allowing him to show his true worth – and surprise all the indifferent adults around him.

बाजा

हिंदी/80 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, कथा, पटकथा ए.के. बीर **निर्माता** भारतीय बालचित्र समिति **फिल्मांकन, संपादन** असीम सिन्हा **संगीत** भवदीप जयपुरवाले **अभिनय** याकुब शेख, राम अवना, रोनी भट्ट

11 वर्षीय शिबु में एक स्वतंत्र एवं उन्मुक्त मानवीय प्रवृत्ति का दर्शन होता है। उसकी उर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाने के उद्देश्य से उसकी विधवा माँ उसे उसके चाचा के पास शहर भेजती है। लेकिन शिबु की उर्जात्मक प्रवृत्ति से उसकी चाची तथा उनके पड़ोसियों को परेशानी होती है। उसकी पढ़ाई के दौरान उस पर कड़ी दृष्टि रखने के लिए उसके चाचा उसे अपनी जूतों की दुकान में ले जाते हैं। लेकिन जब उसे एक डाक्टर को जूते की एक जोड़ी देने के लिए कहा जाता है तो शिबु अपने उसी लापरवाहीपूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन करता है। अचानक कुछ अप्रत्याशित घटित होता है, जिससे उसे अपनी वास्तविक क्षमता के प्रदर्शन का अवसर मिलता है। उसके आसपास के सभी वयस्क उस प्रदर्शन से चकित रह जाते हैं।

भवम

मलयालम/102 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा एम.एस. शंकर **निर्माता** चित्तारा **छायांकन** एच.एम. रामचंद्रा **संपादन** गुना **अभिनय** सुदेश, भावना

पत्रकार जॉय और उसकी कालेज में लेक्चरर पत्नी लता एक गाँव में जॉय की चाची के साथ शांतिपूर्ण वातावरण में रहते हैं। लता बुद्धि के मामले में दिवालिया छात्रों को दोस्तोवेस्की की अपराध और सजा यह सोचकर पढ़ाती है कि इससे वे दैनिक जीवन में चेतना के असर को लेकर प्रभावित हो सकेंगे। जॉय जल्दी ही अपने प्रोफेशन के समाचार एवं सच को सर्वत्र फैलाने के ईमानदार मिशन को महत्व देना बंद कर देता है। उसका झुकाव आसानी से कामनाओं की संस्कृति की ओर हो जाता है। फिर भी घर में उसकी प्राथमिकता उसकी पत्नी की प्रसन्नता है क्योंकि वह उसके प्रति गहरी निष्ठा रखता है। इन परिस्थितियों में लता की बड़ी बहन सुभद्रा का आगमन होता है।

शहरी आभिजात्यपूर्ण वातावरण में जीने वाली सुभद्रा को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है जब उसके पति की मौत हो जाती है और उसका घर एक दुर्घटना में जल जाता है। लता उसे अपनी गर्भावस्था की अवधि के दौरान अपने यहाँ रहने के लिए बुलाती है। जल्द ही यह रहस्य खुल जाता है कि सुभद्रा के पास अपनी बहन के घर रहने के सिवा कोई और स्थान नहीं है। उस बहन के घर जिसके साथ उसने आठ साल से अधिक समय से कोई रिश्ता नहीं रखा था। पहले जॉय सुभद्रा को अपने जीवन में शामिल कर लेने के पत्नी की इच्छा को स्वीकार कर लेता है मगर बाद में उसके निर्णय से असहमति जताता है। जॉय और लता के बीच एक भावनात्मक पेंच फंस जाता है।

BHAVAM

Malayalam/ 102 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay M.S. Shankar **Production Company** Chittaara **Cinematography** H.M. Ramachandra **Editing** Guna **Cast** Sudesh, Bhavana.

Joy, a journalist, and his wife, Lata, a college lecturer, live with Joy's aunt amid tranquil surroundings in a coastal village. Lata teaches Dostoevsky's *Crime and Punishment* to intellectually bankrupt students, determined to impress upon them the impact of consciousness on their daily lives. Joy no longer values the honest mission of his profession to disseminate news and truth, and is easily swayed by the culture of want. However, his priority at home is the happiness of his wife, to whom he is passionately devoted. Into this equation arrives Lata's elder sister, Subhadra.

Subhadra, who has led a life of urban sophistication, has faced grave tragedies – the loss of her husband and her home in a seemingly accidental fire. Lata invites her to stay with them through the duration of her own pregnancy. Soon, it is obvious that Subhadra is harbouring a secret with no place to go but her sister with whom she has not maintained a relationship for over eight years. At first, Joy goes along with his wife's desire to incorporate Subhadra into their life, but later regrets his decision. The intellectual and lifestyle divide between Joy and Lata drives an emotional wedge between them.

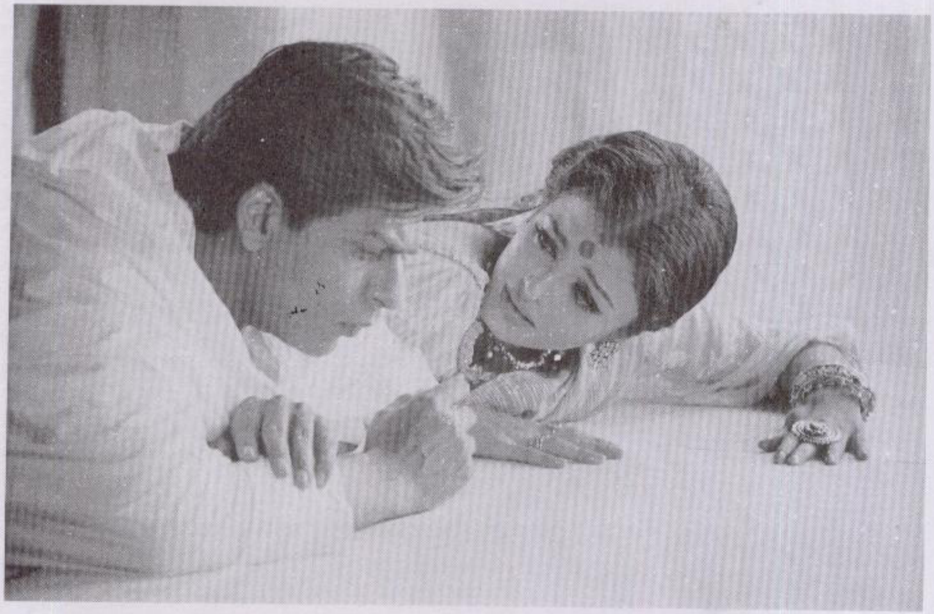

देवदास

हिंदी/181 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा संजय लीला भंसाली **निर्माता** भरत शाह **छायांकन** बिनोद कुमार प्रधान **संपादन** बेला सेगल **ध्वनि** लेसली रॉक मैक्स फर्नांडीज **संगीत** इस्माईल दरबार **कला** नितीन चंद्रकांत देसाई **अभिनय** शाहरूख खान, ऐश्वर्या राय, माधुरी दीक्षित, किरण खेर, अनन्या खरे, जैकी श्राफ

देवदास एक ऐसे अमर प्रेम की कथा है जिसका परिणाम प्रेमी के आत्म-विनाश के रूप में होता है। देवदास मुखर्जी एक अमीर जमीदार का पुत्र है, जिसके जीवन का एकमात्र सहारा उसके बचपन की सखी पार्वती है। देवदास और पार्वती बढ़े होकर दो ऐसे युवाओं में परिवर्तित होते हैं जो सपनों, प्रेरणा और एक-दूसरे के प्रति असीम प्रेम से भरे हुए हैं। लेकिन1940 की सामाजिक परिस्थितियां उन्हें उनके विद्रोही प्रेम के लिए बहिष्कृत कर देती हैं।

पार्वती की शादी एक अन्य अमीर जमीदार से हो जाती है। और देवदास शराब में डूब कर रह जाता है। जहाँ पार्वती प्रेमरहित अपने विवाह के साथ समझौता करने का प्रयास करती है वहीं देवदास को एक नाचनेवाली चंद्रमुखी के कोठे पर बोतल में धीरज मिलता है। चंद्रमुखी बला की सुंदर कोठेवाली है जो एक नाचनेवाली के कोठे पर शरण पाने से इंकार करने और उसके प्रति अपनी घृणा की अभिव्यक्ति करने की निर्भिकता के कारण देवदास का बहुत सम्मान करती है। वह एक सामान्य तपस्विनी की तरह रहना प्रारंभ कर देती है जो केवल एक ही बात की पूजा करती है, देवदास के प्रति उसका बिनाशर्त प्रेम। इस तरह देवदास तीन लोगों की कहानी है जो अपने-अपने कठिन रास्तों पर चलते हुए अपने प्रेम की आस पूरी होने की प्रतीक्षा करते हैं।

DEVDAS

Hindi/ 181 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Sanjay Leela Bhansali **Producer** Bharat Shah **Cinematography** Binod Kumar Pradhan **Editing** Bela Segal **Sound** Leslie Rock Max Fernandes **Music** Ismail Darbar **Art** Nitin Chandrakant Desai **Cast** Shahrukh Khan, Aishwarya Rai, Madhuri Dixit, Kiran Kher, Ananya Khare, Jackie Shroff

Devdas is the story of undying love, which resulted in a lover's self-destruction. Devdas Mukherjee is a rich *zamindar*'s son, whose only anchor in life is his childhood soulmate, Parvati. Devdas and Parvati grow up to become two bright young people, full of dreams, aspirations and undying love for each other but social circumstances prevalent in the 1940s ostracise them for their rebellious love.

Parvati gets married off to another rich *zamindar*, and Devdas gets betrothed to the bottle. While Parvati tries to adjust to her loveless marriage, Devdas tries to find solace in liquor - at the dancing court of Chadramukhi. Chandramukhi is an extremely beautiful courtesan who admires Devdas for his audacity to seek refuge at a courtesan's *kotha* and displaying hatred for the same. She starts living like a simple hermit worshipping only one thing, her unconditional love for Devdas. Thus, *Devdas* is a story of three people who wait for their love to be fulfilled, while treading on their respective and painful paths.

कन्नाथिल मुत्थामिट्टाल

तमिल/136 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, कथा मणि रत्नम **निर्माता** मद्रास टाकिज **छायांकन** रवि के. चंद्रन **संपादन** ए. श्रीकर प्रसाद **ध्वनि** एच. श्रीधर **संगीत** ए.आर. रहमान **अभिनय** माधवन, सिमरन, पी.एस. कीर्थाना, प्रकाश राज, नंदिता दास

अमुधा पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है और बहुत महत्वाकांक्षी है। उसके पिता तिरुचेलवन एक लेखक, इंजीनयर और धैर्यवान व्यक्ति हैं। वह अपनी टीवी प्रस्तोता पत्नी इंदिरा के छद्मनाम से कहानियां लिखते हैं। अमुधा के दो छोटे भाई भी हैं, विनयन जिससे वह सारा समय झगड़ा करती रहती है और बातूनी अकीलन। अनुराधा के नाना थाथा एक सेवानिवृत्त तहसीलदार हैं। अमुधा के जीवन की सबसे बड़ी समस्या उसके तमिल शिक्षक हैं जो उसे बहुत काम करने पर मजबूर करते रहते हैं।

यह आदर्श परिस्थिति अमिधा के नवें जन्मदिवस पर अचानक बदल जाती है जब उसे बताया जाता है कि वह दत्तक ली हुई है। अमुधा अब अपनी असली माँ को खोजना चाहती है और इसके लिए घर से भाग जाना चाहती है। सारा परिवार उसकी व्यथा को समझता है और उसके आसपास रहता है। मगर अमुधा उन सबको ठुकरा देती है और अपनी माँ को चाहती है।

KANNATHIL MUTHAMITTAL

Tamil/ 136 min/ 35mm/ Col

Director, Story Mani Rathnam **Producer** Madras Talkies **Cinematography** Ravi K. Chandran **Editing** A. Sreekar Prasad **Sound** H. Sridhar **Music** A.R. Rahman **Cast** Madhavan, Simran, P.S. Keerthana, Prakash Raj, Nandita Das

Amudha studies in class five and has many ambitions. Her father, Thiruchelvan is a writer and an engineer and has a temper. He writes stories under the pen name of his wife, Indira, a television presenter. Amudha also has two younger brothers, Vinayan, with whom she fights all the time, and Akilan, a chatterbox. Thatha, Amudha's maternal grandfather is a retired Tahsildar. The largest trouble in Amudha's life seems to be her Tamil teacher, who makes her do lots of work.

This idyllic situation suddenly changes on her ninth birthday, when she is told that she was adopted. Amudha now wants to find her real mother and runs away from home. The entire family understands her anguish and rallies around her. But Amudha rejects them all, seeking out her mother.

कन्नाथिल मुत्थामिट्टाल

तमिल/136 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, कथा मणि रत्नम **निर्माता** मद्रास टाकिज **छायांकन** रवि के. चंद्रन **संपादन** ए. श्रीकर प्रसाद **ध्वनि** एच. श्रीधर **संगीत** ए.आर. रहमान **अभिनय** माधवन, सिमरन, पी.एस. कीर्थाना, प्रकाश राज, नंदिता दास

अमुधा पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है और बहुत महत्वाकांक्षी है। उसके पिता तिरुचेलवन एक लेखक, इंजीनयर और धैर्यवान व्यक्ति हैं। वह अपनी टीवी प्रस्तोता पत्नी इंदिरा के छद्मनाम से कहानियां लिखते हैं। अमुधा के दो छोटे भाई भी हैं, विनयन जिससे वह सारा समय झगड़ा करती रहती है और बातूनी अकीलन। अनुराधा के नाना थाथा एक सेवानिवृत्त तहसीलदार हैं। अमुधा के जीवन की सबसे बड़ी समस्या उसके तमिल शिक्षक हैं जो उसे बहुत काम करने पर मजबूर करते रहते हैं।

यह आदर्श परिस्थिति अमिधा के नवें जन्मदिवस पर अचानक बदल जाती है जब उसे बताया जाता है कि वह दत्तक ली हुई है। अमुधा अब अपनी असली माँ को खोजना चाहती है और इसके लिए घर से भाग जाना चाहती है। सारा परिवार उसकी व्यथा को समझता है और उसके आसपास रहता है। मगर अमुधा उन सबको ठुकरा देती है और अपनी माँ को चाहती है।

KANNATHIL MUTHAMITTAL

Tamil/ 136 min/ 35mm/ Col

Director, Story Mani Rathnam **Producer** Madras Talkies **Cinematography** Ravi K. Chandran **Editing** A. Sreekar Prasad **Sound** H. Sridhar **Music** A.R. Rahman **Cast** Madhavan, Simran, P.S. Keerthana, Prakash Raj, Nandita Das

Amudha studies in class five and has many ambitions. Her father, Thiruchelvan is a writer and an engineer and has a temper. He writes stories under the pen name of his wife, Indira, a television presenter. Amudha also has two younger brothers, Vinayan, with whom she fights all the time, and Akilan, a chatterbox. Thatha, Amudha's maternal grandfather is a retired Tahsildar. The largest trouble in Amudha's life seems to be her Tamil teacher, who makes her do lots of work.

This idyllic situation suddenly changes on her ninth birthday, when she is told that she was adopted. Amudha now wants to find her real mother and runs away from home. The entire family understands her anguish and rallies around her. But Amudha rejects them all, seeking out her mother.

कोनिकार रामधेनु

असमिया/112 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, कथा, पटकथा जानु बरुआ **निर्माता** सेलधर बरुआ, जानु बरुआ **छायांकन** पी. राजन **संपादन** ह्यू-एन बरुआ **ध्वनि** जतिन शर्मा **संगीत** वाई.एस. मूखी, रीता बरुआ दास **कला** फतिक बरुआ **अभिनय** विष्णु खरगोरिया, मोलोया गोस्वामी, रोनिक, दिनेश दास, अबिनाश शर्मा

फिल्म कल्पनाशील 11 वर्षीय कुकोई की कथा है जिसका बचपन बुरी तरह से गलत दिशा की ओर बढ़ रहा है। लेकिन वह इस बारे में कुछ भी कर सकने में बहुत छोटा होने के कारण असमर्थ है। वह गुवाहाटी के एक गैरेज में काम करता है जिसका मालिक थानु उसके साथ दुर्व्यवहार का प्रयास करता है। कुकोई लोहे की छड़ से उसे पीट कर उसकी हत्या कर देता है। उसे बाल सुधार गृह में भेज दिया जाता है। भाग्य से वहाँ कुकोई की मुलाकात एक समझदार वार्डन बिस्वा बोरो से होती है। 65 वर्षीय बोरो को यह पता चलता है कि अन्य यौन प्रताड़ित बच्चों की तरह ही कुकोई भी सदमे की स्थिति में है और उन परिस्थितियों को याद करने में असमर्थ है जिन्होंने उसे थानु को मारने के लिए प्रेरित किया। पुनरावलोकन के लिए तीन माह के भीतर कुकोई के कागजात एक मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं। चूंकि कुकोई कुछ भी नहीं बता पाता, बिस्वा उसके मूल का पता लगाने की प्रक्रिया प्रारंभ करते हुए उसे अपने गाँव का सजीव वर्णन करने के लिए उकसाते हैं।

बिस्वा इस आशा में कुकोई को पर्यटन के लिए ले जाते हैं कि प्रकृति का सानिध्य उसके मस्तिष्क की धुंध को छांटने में सफल हो पाएगा। इस बार कुकोई यह बताने में सफल होता है कि गैरेज में क्या हुआ था। मजिस्ट्रेट कुकोई को इस शर्त पर रिहा करता है कि वह अपने माता-पिता के पास जाए अथवा किसी अभिभावक के पास। बिस्वा उसे लेकर उसके गाँव जाते हैं जहाँ पता चलता है कि कुकोई के माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है और उसका शराबी सौतेला बाप उसका पालन-पोषण करने के लिए रुपये चाहता है। कुकोई का मामला एक ऐसे बच्चे का सटीक मामला है जिसे स्वीकार और प्यार की सख्त आवश्यकता है।

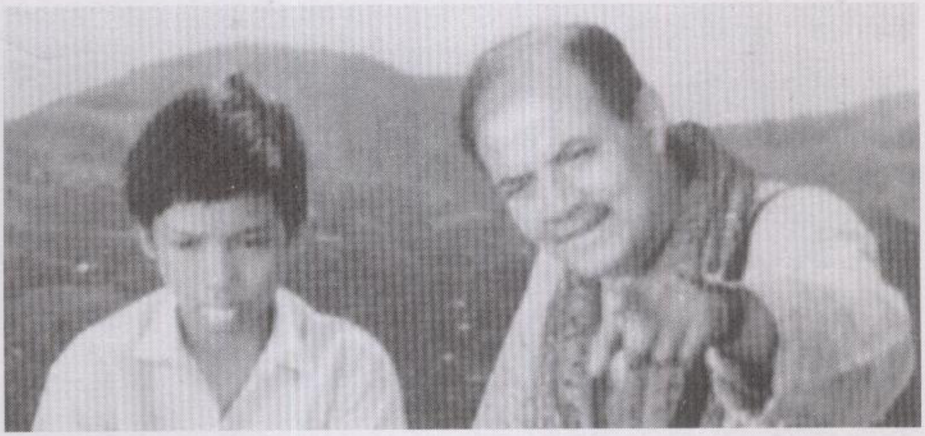

KONIKAR RAMDHENU

Assamese/ 112 min/ 35mm/ Colour

Director, Story, Screenplay Jahnu Barua **Producer** Sailadhar Barua, Jahnu Barua **Cinematography** P. Rajan **Editing** Hue-en Barua **Sound** Jatin Sharma **Music** Y.S. Mookhy, Reeta Barua Das, **Art** Phatik Barua **Cast** Bishnu Kharghoria, Moloya Goswami, Ronik, Dinesh Das, Abinash Sharma

A story of an imaginative 11-year-old, Kukoi, whose childhood is going horribly wrong. But he's too young to do anything about it. He works in a Guwahati garage, whose owner, Thanu, tries to molest Kukoi. Kukoi hits him with an iron rod, killing Thanu. The traumatised boy is sent to a juvenile home. Fortunately Kukoi gets an understanding warden in Biswa Boro. The 65-year-old intuitively grasps that the boy has, like other sexually assaulted children, withdrawn after the shock and is psychologically unable to recount the circumstances that forced him to hit Thanu. For a second chance, Kukoi's papers have to be placed before a magistrate within three months. As Kukoi cannot open up, Biswa coaxes Kukoi into giving a visual description of his native village, beginning the process of tracing the origin of the child.

Biswa takes Kukoi on an excursion, hoping the sights of nature will clear the cobweb of his mind. Kukoi this time is able to tell what happened in the garage. The magistrate release Kukoi on condition that he's taken to his parents or to a guardian. Biswa takes Kukoi to his village, only to find out that Kukoi's parents are dead, and the alcoholic step-father wants money to be a guardian. Kukoi is a typical case of a child in desperate need of acceptance and love.

MAGIC MAGIC

Tamil/ 95 min/ 35mm/ Colour

Director Jose **Producer** Navodaya **Screenplay** Raghunath Paleri, T.K. Rajeevkumar **Cinematography** A.B. Kaul **Editing** N.P. Satish, **Sound** Prabhu and Ajit George, **Music** Sharreeth, Jagan, **Art** Sabu Cyril, Mark Miller, **Cast** Suraj Balajee, S.P. Balasubramaniam, Pooja Kumar

Acharya, a 70-year old magician, belongs to a family of tantrik magicians who could trace their geneology back to King Vikramaditya's court. However his son, Krishna refuses to learn the craft. He becomes a businessman and settles in the US. He has a son, Indrajit, who stays with Acharya. Krishna is not pleased when he comes to learn of Indrajit's magic skills and takes him away with him. Indrajit is horrified to leave India and his grandfather and magically transports himself to New York.

There he runs into Romeo, a street dog. Romeo has escaped from his cruel master Rob, a thief. As both are in a similar state, they soon become friends. Together they try to earn enough money to go back home. Indrajit starts holding shows with other street kids, who sing and dance to earn their keep. Indrajit with the help of his new friends manages to call Acharya and asks him to come to New York and take him away. Meanwhile Krishna has his son's face splashed all over the media to try and locate him.

मैजिक मैजिक

तमिल/95 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक जोस **निर्माता** नवोदय **पटकथा** रघुनाथ पलेरी, टी.के. राजीवकुमार **छायांकन** ए.बी. कौल **संपादन** एन.पी. सतीश **ध्वनि** प्रभु एवं अजीत जार्ज **संगीत** शरीथ, जगन **कला** साबू सिरील, मार्क मिलेर **अभिनय** सूरज बालाजी, एस.पी. बालसुब्रमन्यम, पूजा कुमार

70 वर्षीय जादूगर आचार्य एक तांत्रिक परिवार से सम्बन्ध रखता है और यह बताता है कि उसके पूर्वज राजा विक्रमादित्य के दरबार में हुआ करते थे। लेकिन उसका पुत्र कृष्णा इस कला को सीखने से इंकार कर देता है। वह व्यवसायी बन जाता है और अमेरिका में बस जाता है। कृष्णा का एक पुत्र इंद्रजीत है जो आचार्य के साथ रहता है। जब कृष्णा को इंद्रजीत की जादुई क्षमता के बारे में पता चलता है तो उसे अच्छा नहीं लगता और वह उसे आचार्य से दूर ले जाता है। इंद्रजीत भारत और अपने दादा को छोड़कर जाने से डरता है। वह स्वयं जादू के बल पर न्यूयार्क पहुँच जाता है।

वहाँ उसे एक सड़कछाप कुत्ता रोमियो मिलता है। रोमियो अपने क्रूर मालिक, एक चोर के यहाँ से भागा हुआ होता है। चूँकि दोनों एक जैसी परिस्थिति में होते हैं इसलिए जल्दी ही दोनों मित्र बन जाते हैं। दोनों मिलकर इतना पैसा कमाने का प्रयास करते हैं कि घर वापस पहुँच सके। इंद्रजीत सड़क पर रहने वाले कुछ अन्य बच्चों के साथ शो करना शुरू करता है जो गाकर और नाचकर अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं। इंद्रजीत अपने नये मित्रों की मदद से आचार्य से बात करता है और उन्हें न्यूयार्क आकर उसे वहाँ से ले जाने के लिए कहता है। इस बीच कृष्णा अपने पुत्र का पता लगाने के लिए उसकी तस्वीर मीडिया में चारों ओर प्रसारित कर देता है।

मकड़ी

हिंदी/91 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, निर्माता, पटकथा, संगीत विशाल भारद्वाज **छायांकन** हेमंत चतुर्वेदी **संपादन** आरिफ शेख **ध्वनि** जे.डी. बाबु **गीत** गुलजार **कला** समीर चंदा **अभिनय** आलाप माझगाँवकर, श्वेता प्रसाद, मकरंद देशपांडे, शबाना आजमी

चुन्नी के गाँव में जीवन मजे से भरा हुआ है। वह अपनी जुड़वा बहन मुन्नी का भ्रम बनाकर सबको मूर्ख बनाती है और अपने शिक्षक, गाँव के कसाई और अपने पिता को परेशान करने का कोई अवसर नहीं छोड़ती है। वहाँ सिर्फ एक समस्या है। यह विश्वास किया जाता है कि गाँव के एक घर में एक चुड़ैल रहती है। एक बूढ़े के अनुसार जो भी उस मकान में जाता है एक पशु में बदल जाता है।

एक दिन किसी कारणवश चुन्नी की बहन मुन्नी उस मकान में प्रवेश करती है। चुड़ैल उसे एक भेड़ में बदल देती है। बदहवास चुन्नी सहायता के लिए चारों ओर दौड़ती है मगर गाँव में उसकी छवि इस तरह से बनी हुई है कि कोई भी उसकी बात पर विश्वास नहीं करता है। चुन्नी अपनी बहन की खोज करने के लिए उस मकान में घुसने का निर्णय लेती है। चुन्नी अपने जीवन में कभी इतनी भयभीत नहीं हुई थी। वह मुख्य कक्ष में प्रवेश करती है और उसके भय की कोई सीमा नहीं रहती जब उसे पता चलता है कि चुड़ैल उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह चुड़ैल से विनती करती है कि वह उसकी बहन को फिर से इंसान बना दे क्योंकि उसकी कोई गलती नहीं है। चुड़ैल उसके समक्ष एक शर्त रखती है कि वह उसे सौ मुर्गियां ला कर दे तो वह उसकी बहन को वापस कर देगी। चुन्नी के समक्ष अब अपने जीवन की सबसे बड़ी चुनौती है।

MAKDEE

Hindi/ 91 min/ 35mm/ Colour

Director, Producer, Screenplay, Music Vishal Bhardwaj, **Cinematography** Hemant Chaturvedi, **Editing** Aarif Shaikh, **Sound** J.D. Babu, **Lyrics** Gulzar, **Art** Sameer Chanda, **Cast** Alaap Mazgaonhkar, Shweta Prasad, Makrand Deshpande, Shabana Azmi

In Chunni's village, life is a lot of fun. She fools all by her impersonations of her twin sister Munni, and has all the opportunity to vex her teacher, Kallu the village butcher and her father. There is a small problem though. In a house in the village, believed to be haunted, lives a witch. According to legend, whoever goes into the house turns into an animal.

One day, one of Chunni's pranks gets out of hand and her docile sister Munni enters the mansion. The witch turns her into a hen. Chunni is hysterical when she realises what has happened. She runs from pillar to post for help but her credibility is so low that nobody in the village is willing to believe her. Chunni is compelled to enter the house in search of her sister. Chunni has never been so frightened in her life. She enters the main hall and to her horror finds the witch waiting for her. She pleads with the witch to let her sister become human again as she has been trapped for no fault of her own. The witch strikes a deal – get me a hundred hens and take back your sister. Chunni now faces the biggest challenge of her life.

मंदो मेयेर उपाख्यान

बंगला/90 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा बुद्धदेव दासगुप्ता **निर्माता** आर्य भट्टाचार्य **छायांकन** वेनु **संपादन** रवि रंजन मोइत्रा **ध्वनि** अनुप मुखोपाध्याय **संगीत** विश्वदीप दासगुप्ता **कला** कौशिक सरकार **अभिनय** रीतुपर्णा सेनगुप्ता, रामगोपाल बजाज, तापस प्रमल, समता दास

किशोर उम्र की लती एक वेश्यालय में रहती है जहाँ उसकी माँ रजनी एक वेश्या के रूप में काम करती है। रजनी का सपना है कि वह अपनी बेटी को एक कामुक सिनेमा मालिक के हवाले करेगी। उसका तर्क है कि वह बूढ़ा अमीर उसकी बेटी का अभिभावक बनेगा तो उसकी माँ को भी उसकी उम्र की ढलान पर सहारा देगा। लेकिन लती के लिए अपनी स्कूली पढ़ाई से समझौता करना इसके लिए बहुत बड़ी कीमत है।

लती का उस गाँव पहुँचने का प्रयास जहाँ उसका जन्म हुआ था, इसकी तुलना 1969 में मानव की पहली चंद्रमा यात्रा से की जा सकती है। यह रूपक उसके मुक्ति के प्रयासों को अभिव्यक्त करता है। एक नयी दुनिया के लिए लती की यात्रा के साथ-साथ आशाओं की कुछ अन्य यात्राएं भी हैं। वेश्यालय के तीन अन्य निवासी भी स्वतंत्रता और पूर्णता की खोज में निकलते हैं। सहयात्री के रूप में एक वृद्ध दम्पत्ति भी हैं। इस यात्रा के दौरान उत्पन्न परिस्थितियां फिल्म को आगे बढ़ाती हैं।

MONDO MEYER UPAKHAYAN

Bengali/ 90 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Buddhadeb Dasgupta, **Producer** Arya Bhattacharya, **Cinematography** Venu, **Editing** Rabi Ranjan Moitra, **Sound** Anup Mukhopadhyaya, **Music** Biswadeep Dasgupta, **Art** Koushik Sarkar, **Cast** Rituparna Sengupta, Ramgopal Bajaj, Tapas Paul, Samata Das

Teenaged Lati lives in a brothel where her mother Rajani works as a prostitute. Rajani dreams of handing over her daughter to the lecherous cinema owner. The elderly man will be a wealthy patron for her daughter and a shelter for the mother in the autumn of her life, Rajani reasons. But for Lati, the price is too great to compensate for the loss of school education.

Lati's efforts to transcend the station in which she was born coincides with man's first trip to moon in 1969. This lends a ready metaphor to her quest for emancipation. However Lati's journey to a new world is paralleled by other journeys of hope. There's the quest for freedom and fulfillment by three other inmates of the brothel. There's also the elderly couple's trip from somewhere to nowhere as Ganesh, the cinema owner's chauffeur tosses them about in search of a hospital to lodge them in. The sparse and desolate setting accentuates the notion of disorientation that pervades the film.

मिस्टर एंड मिसेज़ अय्यर

अंग्रेजी/122 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा अपर्णा सेन **निर्माता** एन. वेंकटेशन **छायांकन** गौतम घोष **संपादन** रवि रंजन मोइत्रा **ध्वनि** आलोक डे **संगीत** ज़ाकिर हुसैन **कला** निखिल बरन सेनगुप्ता, गौतम बोस **अभिनय** राहुल बोस, कोंकणा सेन शर्मा, भीष्म साहनी, सुरेखा सिकरी, इशा चौहान

दिसंबर 2001 में दक्षिणी पहाड़ियों में कहीं एक बस एक घुमावदार रास्ते पर आती है। बस में मीनाक्षी अय्यर अपने 11 वर्षीय पुत्र संथानम के साथ है। बस में एक फोटोग्राफर राजा चौधरी भी है जिससे उसका परिचय उनके एक संयुक्त मित्र ने बस अड्डे पर कराया था। चूँकि मीनाक्षी अकेली सफर कर रही थी इसलिए राजू को यात्रा के दौरान उसका ध्यान रखने की जिम्मेदारी दी गयी थी। बस को अचानक एक गुस्से में भरी भीड़ द्वारा रोक लिया जाता है जो एक हत्या का बदला लेने पर उतारू है। चारों तरफ दंगा, आगजनी और हत्याओं के चलते हिंसा का तूफान उस क्षेत्र में फैल जाता है। अब यात्रियों के लिए एक और यात्रा शुरू होती है, अपने भीतर की। भीड़ बस में सवार सारे मुस्लिमों को मार देना चाहती है। मीनाक्षी राजा की जान यह कहकर बचाती है कि वह उसका पति - मिस्टर अय्यर है।

जल्द ही आसपास फैली हिंसा, असहिष्णुता और नफरत उन्हें एक-दूसरे के करीब ले आती है। मूलभूत मानव मूल्य उनकी आस्था और धार्मिक अंतरों को जल्दी ही विस्मृत कर देते हैं। अब वे एक-दूसरे के प्रति प्रगाढ़ आकर्षण का अनुभव करते हैं। लेकिन उनका प्रेम सबसे अधिक मर्मभेदी रूप लेता है क्योंकि वे जानते हैं कि जुदाई अनिवार्य है।

MR AND MRS IYER

English/ 122 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Aparna Sen, **Producer** N. Venkatesan, **Cinematography** Goutam Ghose, **Editing** Rabi Ranjan Moitra, **Sound** Alok De, **Music** Zakir Hussain, **Art** Nikhil Baran Sengupta, Gautam Bose, **Cast** Rahul Bose, Konkona Sen Sharma, Bhisham Sahni, Surekha Sikri, Isha Chauhan

December 2001, somewhere in the southern hills. A bus comes down a winding road. On board is Meenakshi Iyer with her 11-month-old son, Santhanam. Also aboard is Raja Chowdhury, a photographer who was introduced to her by a common friend at the bus terminus. Since Meenakshi is traveling alone, Raja is given the responsibility of helping her during the journey. The bus is suddenly stopped by an angry mob out to avenge a killing. A storm of violence and hatred has swept over the area, with rioting, arson and killing all around. Now begins another journey for the passengers, a journey into themselves. The mob wants to kill all Muslims aboard the bus and Meenakshi saves Raja's life by pretending he is her husband – Mr Iyer.

Soon the surrounding violence, intolerance and enmity makes them come close to each other. Basic human values reshape their conventional beliefs and religious differences are soon forgotten. They now feel a strong attraction for each other. But their love has become all the more poignant as they know parting is inevitable.

नन्बा नन्बा

तमिल/120 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा जयाभारती **निर्माता** मीडिया वर्क्स **छायांकन** रमेश व्यास **संपादन** सुरेश उर्स **अभिनय** वी.एम.टी. चार्ली, एस. चंद्रशेखर, रामदास, रिंधिया

लारेंस और जोसफ दो अनाथ हैं जो फादर क्रुपक्करन के आश्रय में बड़े हुए हैं। बाद में वे एक मकान लेते हैं और व्यवसाय के रूप में पढ़ाना शुरू कर देते हैं। एक दिन जब वे गाड़ी चलाते हुए कहीं जा रहे होते हैं, वे दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। लारेंस को पक्षाघात हो जाता है और जोसेफ अपने मित्र की देखभाल करने लगता है।

लारेंस के सांत्वना की एकमात्र वजह जाननी का रोज आना है, जो उससे ट्यूशन पढ़ने के लिए आती है। कुछ दिन बाद अचानक जाननी युवा हो जाने के कारण लारेंस के पास आना बंद कर देती है।

लारेंस चाहता है कि जोसेफ विवाह कर ले और उसके लिए एक जोड़ीदार खोजने का प्रयास करता है। लेकिन जोसेफ एक शर्त रखता है कि विवाह के उपरांत भी उसे शय्याशायी अपने मित्र की देखभाल का अवसर मिले। लड़की का पिता इसके लिए तैयार नहीं होता है। लारेंस अपने-आप को अपने मित्र की शादी की सबसे बड़ी बाधा समझता है। वह फादर क्रुपक्करन की सहायता से एक होम में दाखिल हो जाता है और कुछ समय बाद वहीं उसकी मौत हो जाती है। जोसेफ लारेंस पर अपनी भावनात्मक निर्भरता का अहसास करता है। निराश होकर वह जाने का निर्णय कर लेता है। जब वह रेलवे गेट पर प्रतीक्षा कर रहा होता है, वह एक पिल्ले की आवाज सुनता है जो सड़क के किनारे पड़ा होता है। वह उसे उठाता है, उसकी ओर देखता है और जीवन के नये उत्साह से भर जाता है।

NANBA NANBA

Tamil/ 120 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Jayabharathy **Production Company** Media Works **Cinematography** Ramesh Vyaas **Editing** Suresh Urs **Cast** V.M.T. Charlee, S. Chandrashekhar, Ramdas, Rindhiya

Lawrence and Joseph are two orphans who grow up under the care of Father Krupakkaran. Later, both take up a house and pursue teaching as their profession. One fateful day, as they were driving down, they meet with an accident and Lawrence becomes a paraplegic and Joseph begins to take care of his friend.

Lawrence's only consolation is the daily visit by Janani, who comes to get tuition from him. A noisy neighbourhood gives him the opportunity to know the problems and urges him to help in demanding situations. Janani suddenly stops visiting him because she has attained puberty.

Lawrence wants Joseph to get married and tries to find a match but Joseph lays a condition that even after marriage, he should be able to take care of his bed-ridden friend. The father of the girl does not agree. Lawrence, who sees himself as a stumbling block to his friend's marriage, gets himself admitted in a home with the help of Father Krupakkaran and soon after dies there. Joseph realises his own emotional dependence on Lawrence. Despondent, he decides to move. While waiting at a railway gate, he hears the yelping of a puppy and finds it abandoned in a bush by the roadside. He picks it up, looks at it and regains his zest for life.

निझलकूथ

मलयालम/150 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, निर्माता, पटकथा अदूर गोपालकृष्णन **छायांकन** रवि वर्मा, सनी जोसेफ **संपादन** बी. अजीतकुमार **ध्वनि** हरि कुमार **संगीत** इलयाराजा **कला** रतीश बाबु **अभिनय** ओडुविल उन्नीकृष्णन, सुकुमारी, नेदुमुदी, वेनु, जगती श्रीकुमार, रीजा वेनुगोपाल

कथा 1940 के स्वतंत्रता पूर्व भारत की है। देश के अन्य हिस्सों की तरह की त्रावणकोर की रियासत में भी फांसी एक आम सजा के रूप में थी। राज्य का अपना एक जल्लाद था। एक सीमाई गाँव में रहने वाले इस जल्लाद का मुख्य समाज से कोई सीधा संपर्क या लेनदेन नहीं था। बदले में उसे राज्य की ओर से कुछ विशेष सुविधाएं मिलती थीं, जैसे मकान, भूमि, सालाना भत्ता और हर कार्य के लिए विशेष नकद लाभ और उपहार।

हर फांसी के साथ गाँव वाले यह विश्वास करते थे कि जल्लाद अलौकिक शक्तियों के संपर्क में आता है और जल्लाद की रस्सी से बनी राख से चमत्कारिक फायदा होता है। लेकिन इसके बावजूद कोई भी चीज जल्लाद के इस पश्चाताप को दूर करने में सफल नहीं हो पाती है कि उसने जिस आखिरी व्यक्ति को फांसी पर लटकाया था, वह निर्दोष था।

एक लम्बे अंतराल के बाद जबकि जल्लाद भी यह विश्वास करने लगा था कि अब उसका काम पीछे छूट गया है, एक राजकीय संदेशवाहक उसके पास एक नयी फांसी का आदेश लेकर आता है। अनिच्छुक कलियप्पन प्रार्थनाओं की सहायता से खुद को तैयार करने का प्रयास करता है। उसकी बीमार और चेताती काया के लिए दृढ़ रह पाना बहुत कठिन दिखायी देता है। उसे पुलिस सुरक्षा में राजधानी ले जाया जाता है। फाँसी अगली सुबह होने वाली होती है। पश्चाताप और भय के अहसास को खत्म करने के लिए जेल वार्डरों द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर वह शराब पीना शुरू कर देता है। रात लम्बी होती है और मदहोश तथा थके हुए कलियप्पन को जगाये रखने के लिए जेल वार्डर कहानियां सुनाना प्रारंभ करते हैं। कलियप्पन ऐसा कुछ चाहता है जिससे वह अपनी नींद से लड़ सके। तब दूसरा वार्डर यह जिम्मेदारी लेता है और वह कलियप्पन के समक्ष एक ऐसी कथा सुनाता है जो उसे पूरी तरह से अपने भीतर ले जाती है। वह वार्डर की कथा के अनुसार लोगों और स्थानों को अलग-अलग भूमिकाओं में रखना प्रारंभ करता है। एक कड़ी परीक्षा में जेल वार्डर की कथा उस निर्दोष लड़के की कथा में बदल जाती है जिसकी स्मृति कलियप्पन को जीवन भर परेशान करती है।

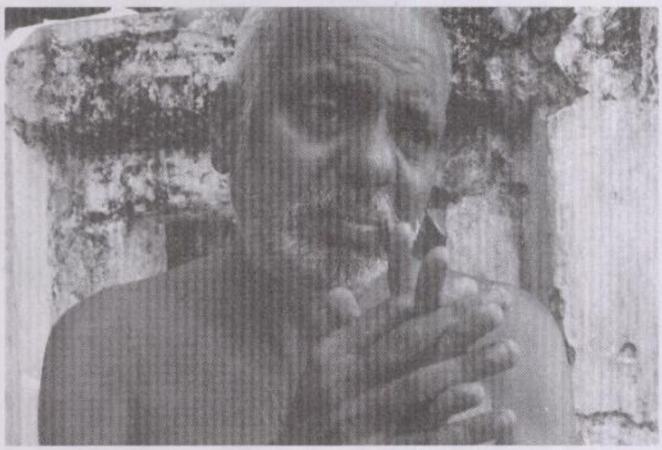

NIZHALKKUTHU

Malayalam/ 150 min/ 35mm/ Colour

Director, Producer, Screenplay Adoor Gopalakrsihnan, **Cinematography** Ravi Varma, Sunny Joseph, **Editing** B. Ajithkumar, **Sound** Harikumar, **Music** Ilayaraja, **Art** Ratish Babu, **Cast** Oduvil Unnikrishnan, Sukumari, Nedumudi Venu, Jagathy Sreekumar, Reeja Venugopal

The story is set in pre-Independence India of the 1940s. In the princely state of Travancore as elsewhere in the country, death by hanging was a prevalent penal practice. The State had its own professional executioner. Settled way out in a border village, he was not to have any direct links or dealings with the mainstream society. In return, the Hangman used to enjoy a few privileges from the royalty – housing, lands, a yearly allowance and special monetary benefits and gifts for each job done.

With each hanging, the villagers believed the hangman came to possess divine powers and the ash made from the hangman's rope was a miracle healer. All the same, nothing could compensate for the guilt that keeps haunting him from the realisation that the last man he hanged was innocent.

After a long interval – even as the hangman believed that he had put his vocation behind him – a royal messenger arrives to order an execution afresh... Reluctant Kaliyappan prepares himself with prayers and penance. His sick and worn out physique finds the rigour of it all too difficult to endure. He is taken to the capital under police escort. The actual execution will take place next morning. In an attempt to kill his sense of guilt and fear, the hangman starts drinking encouraged by the jail warders. The night is long and a tired and drunk Kaliyappan cannot help feeling sleepy. In order to keep the hangman awake, the jail warders start narrating stories. But Kaliyappan longs for something that would fight his sleep. A second warder takes over and there develops before Kaliyappan a story that takes him in completely. He starts transposing people and places into the roles and locales in the story that the warder narrates. In a close examination, the jail warder's story is a replay of the execution of the innocent boy the memory of which has been haunting Kaliyappan for life.

पाताल घर

बंगला/141 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा अभिजीत चौधरी **निर्माता** निती सोनी गौरीसरिया **छायांकन** अभिक मुखोपाध्याय **संपादन** अर्जुन गौरीसरिया **ध्वनि** आलोक डे **संगीत** देवज्योति मिश्रा **कला** इंद्रनील घोष **अभिनय** जॉय सेनगुप्ता, मीता वशिष्ठ, सोमित्रो चटर्जी, सौरव बैनर्जी

अच्छे, बुरे, घृणित और दूसरे गृह के चरित्रों द्वारा द्वारा रहस्यमय आविष्कार की खोज, उनके तरीके और एजेंडा फिल्म की पृष्ठभूमि तय करता है। एक विलक्षण वैज्ञानिक अघोर सेन निस्चिंतपुर के एक छोटे से गाँव में 150 साल से पहले रहते थे। वह संयोग से एक ऐसा यंत्र बनाते हैं जो मनुष्यों और पशुओं को सुला देता है। उनकी मौत के बाद वह यंत्र भूला दिया जाता है।

150 साल बाद डा. भूतनाथ नंदी के हाथ सेन की डायरी लगती है जिसमें उस रहस्यमय यंत्र का उल्लेख है। भूतनाथ उस यंत्र की खोज को अपना लक्ष्य घोषित कर देते हैं। एक अंतर्राष्ट्रीय हथियार गिरोह की सरगना बेगम जनरल टेक्का और उसके दल को इस यंत्र की खोज करने के लिए भेजती है। सेन का यंत्र उसकी गुप्त भूमिगत प्रयोगशाला - पातालघर में है। टेक्का भूतनाथ पर उस यंत्र की खोज में सहायता करने के लिए दबाव डालता है। एक बुद्धिमान और संवेदनशील लड़का कार्तिक कोलकाता में रहता है। जनरल टेक्का को पता चलता है कि कार्तिक निस्चिंतपुर में सेन के मकान का एकमात्र उत्तराधिकारी है। जनरल टेक्का कार्तिक से उस मकान को बेच देने के लिए संपर्क करता है, मगर वह इंकार कर देता है।

नीयप्चा ग्रह से निष्कासिक विक निस्चिंतपुर के निकट अपने अंतरिक्षयान से उतरता है। निस्चिंतपुर में मंच तैयार हो जाता है। विक, जनरल टेक्का, बेगम स्वयं, कार्तिक और भूतनाथ आखिरी लड़ाई के लिए एकत्रित होते हैं।

PATAL GHAR

Bengali/ 141 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Abhijit Chaudhari **Producer** Niti Soni Gourisaria, **Cinematography** Abhik Mukhopadhyaya, **Editing** Arjun Gourisaria, **Sound** Alok De, **Music** Debojyoti Mishra, **Art** Indranil Ghosh, **Cast** Joy Sengupta, Mita Vasishth, Soumitro Chatterjee, Saurav Bannerjee

A search for a mysterious invention by good, bad, ugly and extra terrestria characters, whose path and agenda criss-cross to forms the backdrop of the film. Aghor Sen, an eccentric scientist, lived more than 150 years in the small village of Nischintipur. He accidentally designs a device which can put people and animals to sleep. With his death the device is forgotten.

150 years later, Dr. Bhootnath Nandy comes across Sen's diary which mentions this amazing device. Bhootnath announces his aim to look for the device. Begum - the head of an international arms cartel sends General Tekka and her goons to search for this machine. Sen's device is within his secret underground laboratory - the *Patalghar*. Tekka forces Bhootnath to help him search for the device. Kartik, an intelligent and sensitive young boy lives in Kolkata. General Tekka gets to know that Kartik is the sole inheritor of Sen's house in Nischintipur. Kartik is approached by Tekka to sell their house. They refuse.

Vik, exiled from the planet Nyapcha, lands with his spaceship near Nischintipur. The stage is set in Nischintipur. Vik, General Tekka, Begum herself, Kartik and Bhootnath all congregate for the final showdown.

प्रोहोर

बंगाली/94 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक सुभद्रो चौधरी **निर्माता** देबयानी गुप्ता **पटकथा** शेखर दास **छायांकन** अम्लान दत्ता **संपादन** सौरव शारंगी **ध्वनि** पार्थ बर्मन **संगीत** चिरदीप दासगुप्ता **कला** तन्मय चक्रवर्ती **अभिनय** देवश्री राय, रजताभा दत्ता, अलकनंदा रे, रित्विक

एक नर्स नंदिता एक कस्बाई इलाके में अपनी माँ एवं बहन के साथ रहती है। वे एक स्थान से ही बंधे हुए जान पड़ते हैं। छह साल पहले हुई एक पीड़ादायक घटना की स्मृति और पिता की मौत उन्हें तकलीफ पहुँचाती है। नंदिता आपातकालीन विभाग में कार्य करती है। बेड नम्बर 10 पर बम विस्फोट का शिकार एक अपराधी पुलिस सुरक्षा में है। वह बम विस्फोट के शिकार को देखती है और उसकी यादें फिर उभर आती हैं और वह अस्वस्थ अनुभव करती है।

रात में नंदिता रोगी के चेहरे पर से आक्सीजन मास्क हटाती है। वह हाँफने लगता है। नंदिता के चेहर पर एक मुस्कान उभरती है। नंदिता चुपके से मास्क बदल देती है। रोगी हाँफना बंद कर देता है। रोगी के शरीर का रक्त बहने लगता है। रोगी की जान बचाने के लिए रक्त अनिवार्य है। नंदिता, जो कि उसी ब्लड ग्रुप की है, अपना रक्त देने का निर्णय लेती है और रोगी की जान बचाती है। अपराधी बिलतु कुछ समय के लिए बच जाता है। बाद में डाक्टर उसे दोपहर में एक तीव्र झटका लगने के कारण मृत घोषित कर देता है। नंदिता कुछ समय बाद पुनः लय पा लेती है। जीवन चलता रहता है।

PROHOR

Bengali/ 94 min/ 35mm/ Colour

Director Subhadro Chaudhary, **Producer** Debjani Gupta, **Screenplay** Shekhar Das **Cinematography** Amlan Dutta, **Editing** Saurav Sharangi, **Sound** Partha Burman, **Music** Chiradeep Dasgupta, **Art** Tanmay Chakrabarty, **Cast** Debashree Roy, Rajatabha Dutta, Alakananda Ray, Ritwik

A nurse, Nandita lives in a suburban locality with her mother and sister. They seem trapped within a space. The memory of a turbulent occurrence six years ago, and the death of her father, haunts them. Nandita works in the emergency ward. The patient on bed number 10 is a bomb blast victim, a criminal under police protection. She sees the bomb blast victim and memories come rushing back, and she feels sick.

At night, Nandita dislodges the oxygen mask from the patient's face. He starts gasping. A smile flashes on Nandita's face. Nandita quietly replaces the mask. The patient stops gasping. The blood that the patient needs begins to run out. The patient needs blood to survive. Nandita, who has the same blood group, decides to save the criminal and donates blood. The criminal, Biltu survives for the time being. Later a doctor declares him dead due to a heavy shock in the afternoon. Nandita, after some months, finds her rhythm again as life goes on.

SHUBHO MUHURAT

Bengali/ 152 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Rituparno Ghosh, **Producer** Bishu Chakraborty and Indra Kumar Ghosh, **Cinematography** Aveek Mukhopadhyaya, **Editing** Arghyakamal Mitra, **Sound** Anup Mukhopadhyaya, **Music** Debojyoti Mishra, **Art** Kaushik Sarkar, **Cast** Raakhee, Sharmila Tagore, Sumanto Mukhopadhyaya, Nandita Das

After 20 years, Padmini, a retired filmstar of yesteryears, comes all the way from America to launch her second husband, Sambit, as the director of his debut film in Kolkata. Kakoli, the proposed heroine of the film, is infamous for her narcotic addiction. On the first day of the shoot, normally known as the Muhurat, appears Mallika, an aspiring journalist, who lives with her Rangapishima, her widowed aunt, for her maiden film assignment.

Mallika accompanies Kakoli home after the shoot for an exclusive interview only to remain the lone witness of Kakoli's sudden accidental death. The media is ripe with assumptions and the police are misled with ever-changing crime clues. At this point a second death occurs. Rangapishima, an avid fan of Padmini, intervenes with her native intelligence and conducts an investigation on her own domesticated steam simultaneously setting the stage for a riveting and complex dramatic narrative.

शुभो मुहुर्त

बंगाली/152 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा रितुपर्णो घोष **निर्माता** बिशु चक्रवर्ती एवं कुमार घोष **छायांकन** अवीक मुखोपाध्याय **संपादन** अर्घ्यकमल मित्रा **ध्वनि** अनुप मुखोपाध्याय **संगीत** देवज्योति मिश्रा **कला** कौशिक सरकार **अभिनय** राखी, शर्मिला टैगोर, सुमन्तो मुखोपाध्याय, नंदिता दास

20 साल बाद पिछले जमाने की फिल्म अभिनेत्री पद्मिनी अमेरिका से अपने दूसरे पति को निर्देशक के रूप में उसकी पहली फिल्म से स्थापित करने के लिए कोलकाता आती है। फिल्म की संभावित हीरोइन ककोली नशीले पदार्थों की लत के लिए बदनाम है। शूटिंग के पहले दिन, जिसे सामान्यतया मुहुर्त के रूप में जाना जाता है, सेट पर एक उभरती पत्रकार मल्लिका आती है जो अपनी विधवा चाची रंगपिशिमा के साथ रहती है।

शूट के बाद एक विशेष साक्षात्कार के लिए ककोली के साथ घर जा रही मल्लिका ककोली की दुर्घटना में आकस्मिक मौत की एकमात्र गवाह के रूप में बचती है। मीडिया तरह-तरह की कल्पना करता है और पुलिस कभी न बदलने वाले अपराध सुराग से भ्रमित होती है। इसी समय एक दूसरी मौत होती है। पद्मिनी की बेहद प्रशंसक रंगपिशिमा अपनी बुद्धिमत्ता से घरेलू सामर्थ्य के साथ एक अलग जाँच शुरू करती है। एक-दूसरे को जोड़ने वाली तथा उलझन में डालने वाली स्थितियों के लिए मंच तैयार हो जाता है।

सिंगारव्वा

कन्नड़/120 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा - टी.एस. नागाभरण **निर्माता** संदेश नागराज **छायांकन** बी.सी. गौरीशंकर **संपादन** पी.आर. सुंदरराज **ध्वनि** महेंद्रन **संगीत** सी. अश्वथ **कला** शशिधर अड़पा **अभिनय** अविनाश, प्रेमा, शिवध्वज, अकीला

चंद्रशेखर कंबर के उपन्यास पर आधारित कथा नंदगवी गाँव के मुखिया भ्रष्ट एवं लालची पंडारी गौड़ा की तीन पत्नियों में से एक के पेट से जन्मी सिंगरी के आसपास घूमती है। गौड़ा घरेलू नौकर मरिया की बड़ी बहन नगी को फुसलाता है और उसकी छोटी-सी सम्पत्ति को हड़प लेता है। मरिया बदला लेने के लिए प्रतीक्षा करता है। जब मरिया नगी और गौड़ा को खेत में आपत्तिजनक स्थिति में देखता है तो वह नगी की हत्या कर देता है। गौड़ा बच निकलता है। मरिया को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है और फिर उसे जेल की सजा हो जाती है।

सम्पति हासिल करने के लालच में गौड़ा सिंगरी से अपनी बहन शांतवा के पुत्र के शव से विवाह करने के लिए कहता है। सिंगरवा को सदमा पहुँचता है। बाद में गौड़ा सिंगरव्वा से शिवपुरा के सरगम देसाई से विवाह करने के लिए कहता है। सिंगरवा को हुच्छाय्या के बारे में पता चलता है कि वह कोई पूजा करता है जिसके परिणामस्वरूप गर्भ ठहर जाता है। वह इसके लिए व्यवस्था करती है। लेकिन हुच्छाय्या की आकस्मिक मौत हो जाती है और सिंगरी लाश को ठिकाने लगाने के लिए जेल से रिहा होकर आये मरिया की सहायता लेती है। मरिया उससे सहायता के लिए कहता है। मरिया देसाई का विश्वासपात्र नौकर बन जाता है। वह गौड़ा का बदला सिंगरी से लेना चाहता है मगर बाद में उसे अपनी गलती का अहसास होता है और वह उसकी रक्षा करता है। बहुत से द्वद्वों और मोड़ों के पश्चात सिंगरव्वा अकेली रह जाती है, अपने बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा में।

SINGARAVVA

Kannada/ 120 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay T.S. Nagabharana, **Producer** Sandesh Nagaraj, **Cinematography** B.C. Gowrishankar, **Editing** P.R. Soundarraj, **Sound** Mahendran, **Music** C. Ashwath, **Art** Shashidhar Adapa, **Cast** Avinash, Prema, Shivadwaj, Akila

Based on a novel by Chandrashekhara Kambar, the story revolves around Singari, born to one of the three wives of the corrupt and greedy Pandari Gowda, head of Nandagavi village. He lures Nagi, elder sister of Mariya, a domestic help and takes away the small property that she owned. Mariya waits to take revenge. When Mariya sees Nagi and Gowda in a compromising position in a field, he kills Nagi, Gowda escapes, but Mariya is taken into custody and sentenced to jail.

In a bid to acquire wealth, Gowda gets Singari to marry his sister Shantavva's son's corpse. Singaravva is shocked. Later, Gowda gets Singaravva to marry Saragam Desai of Shivapura. Singaravva learns of Huchchayya, who is believed to perform a pooja that results in pregnancy, and she arranges to have it done. But Huchchayya dies unexpectedly and Singari takes the help of Mariya, who has been released, to dispose of the body. Mariya asks her to grant her one favour in return. Mariya becomes a loyal servant of Desai with the intention of taking revenge on Singari but eventually feels sorry and decides to protect her. After various twists and turns, Singaravva is left alone, awaiting the birth of her child.

स्टम्बल

अंग्रेजी/144 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा प्रकाश बेलावाड़ी **निर्माता** 2स्ट्रीम मीडिया **अभिनय** अनंत नाग, सुहासिनी मणिरत्नम, मोहम्मद अमानुल्ला, अशोक मंडाना, पल्लवी दत्तु, प्रिया गणपति

दर्शन खोसला (डीके) एक सॉफ्टवेयर कम्पनी मोंट पिटन (इंडिया) टेक्नोलॉजीज़ (एमपीआई) का निदेशक है। डॉटकाम उछाल के शांत पड़ जाने पर डीके एक कॉल सेंटर प्रारंभ करने की इच्छा रखता है। वह इस नये ढंग के व्यवसाय के लिए नया स्टाफ चाहता है और अपने पुराने विश्वस्त सहयोगियों को बिना किसी क्षतिपूर्ति के काम पर से हटाना शुरू कर देता है। इस प्रक्रिया में वह अपने मित्र और टेक्नोलॉजीज़ के सह निदेशक प्रमुख प्रशांत हेगड़े को अंधेरे में रखने से भी संकोच नहीं करता है। लेकिन उसे उस सॉफ्टवेयर की आवश्यकता है जिसे हेगड़े की टीम ने तैयार कर रही है। इसलिए डीके अपनी सोशलाइट पत्नी इंदु की सहायता से साफ्टवेयर पर कब्जा करने के बाद हेगड़े और उसकी टीम से छुटकारा पाने का षडयंत्र रचता है।

हेगड़े की टीम जिसमें आदित्य सुब्बु, वसु, सेनगुप्ता और मधु हैं, छटनी के कारण टूट जाती है। जबकि सभी लोग परेशान हैं, मधु की छटनी उसके परिवार के लिए सदमे का कारण बन जाती है। मधु के पिता आनंद राव मधु को नौकरी छूटने के लिए और अपनी नौकरी को बरकरार न रख पाने के लिए दोषी ठहराते हैं। राव अपनी उपयोगिताहीनता की स्थिति के कारण फ्रस्ट्रेशन में हैं। राव अमेरिका में सॉफ्टवेयर इंजीनियर अपने पुत्र उदय को आदर्श साबित करने का प्रयास करते हैं। हर कोई जीवन के साथ पटरी बैठाने का प्रयास करता है, जब फिल्म अंत भला तो सब भला की ओर बढ़ती है।

STUMBLE

English/ 144 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Prakash Belawadi, **Producer** 2Streams Media, **Cast** Anant Nag, Suhasini Manirathnam, Mohammad Amanulla, Ashok Mandanna, Pallavi Dattu, Priya Ganapathy

Darshan Khosla (DK) is the director of Mont Piton (India) Technolgies (MPI), a software company. MPI is now deep in the red having gone down with the dotcom bust. But DK, ever ready to jump on the bandwagon, now wants to start a call centre. He needs new staff for this new line of business and goes about laying off his loyal old employees without compunction. In the process, he does not even baulk at manipulating his friend and co-director in charge of technology, Prashant Hegde. But he needs the software that Hegde's team is developing. So DK, with the support of his socialite wife Indu, hatches a plot to get rid of Hegde and his team while retaining the software.

Hegde's core team, comprising Aditya, Subbu, Vasu, Sengupta and Madhu, is broken up with the layoffs. While all are upset, Madhu's layoff comes as a shock to Madhu's family. Madhu's father, Anand Rao blames Madhu for the layoff, humiliating her for her inability to retain the job. Rao is frustrated due to his present state of uselessness. Rao tends to idolize his son, Uday, a software engineer in the US. All of them try to come to terms with life, with the film leading up to a feel-good finale.

स्वराज

हिंदी/90 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक अनवर जमाल **निर्माता** जार्ज मैथ्यु **पटकथा** सेहजो सिंह **छायांकन** एस. चोकालिंगम **संपादन** ए. श्रीकर प्रसाद **ध्वनि** ए.ए. लक्ष्मीनारायणन **संगीत** इंडियन ओशन **कला** कन्हैयालाल कैथवास **अभिनय** अलका अमीन, राजेंद्र गुप्ता, मंदाकिनी गोस्वामी, हरविंदर कौर, तनिष्ठा चटर्जी

राजस्थान के एक गाँव में चार दृढ़ इच्छाशक्ति वाली महिलाएं परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करती हैं। गाँव में लोकतंत्र की हवा बहने लगती है और वहाँ भी वर्तमान संसार के समान घटनाएं आकार लेती हैं। फिल्म दस लाख से ज्यादा महिलाओं, जो स्थानीय शासन के लिए चुनी गयी हैं, उनके संघर्ष के लिए, लोकतंत्र में उनके विश्वास के लिए और संसार को एक बेहतर स्थान बनाने के उनके सपने के लिए एक आदरांजलि के रूप में सामने आती है।

फिल्म राजनैतिक शक्ति के विपरीत दृष्टिकोणों को सामने रखती है। ग्राम पंचायत में दबदबा रखने वाले उँची जाति के लोग अपने स्वार्थ के लिए सत्ता चाहते हैं। लेकिन महिलाओं के लिए यह समाज की पानी जैसी जरूरतों को पूरा करने का एक साधन है। बात स्पष्ट होती है जब रेगिस्तान की यात्रा एक ऐसे स्थान की ओर पहुँचती है जहां चार महिलायें ग्रामीण समाज की कड़ी आचार संहिता से मुक्त होकर अपना अतीत पीछे छोड़ती हैं और एक-दूजे से शक्ति हासिल करती हैं। कबीर के भजन को मुख्य गीत के रूप में प्रयोग किया गया है जो सत्य और प्रेम की शक्ति को अभिव्यक्त करता है। हुसैन की शहादत की किंवदंती का महिलाओं व दलितों की कथा के सहायक के रूप में इस प्रकार उचित उपयोग किया गया है कि इससे भारतीय संस्कृति की महानता का दर्शन होता है जहाँ किंवदंती, इतिहास और अलग-अलग धर्मों के आदर्श एक साझी विरासत के रूप में सामने आते हैं।

SWARAAJ

Hindi/ 90 min/ 35mm/ Colour

Director Anwar Jamal, **Producer** George Mathew, **Screenplay** Sehjo Singh **Cinematography** S. Chockalingam, **Editing** A. Sreekar Prasad, **Sound** A.S. Lakshmi Narayanan, **Music** Indian Ocean, **Art** Kanhaiya Lal Kaithwas, **Cast** Alka Amin, Rajendra Gupta, Mandakini Goswami, Harvinder Kaur, Tannishtha Chatterjee

In a Rajasthan village four strong willed women try to change thing. The village becomes a microcosm of democracy and the events a parable for the world today. The film becomes a tribute to more than a million women elected to the local governments, to their struggles, to their faith in democracy, to their dreams of making the world a better place.

The film confronts opposed views of political power. The high caste men, who dominate the village panchayat, seek power for their selfish needs. But for the women it is an instrument to realise the needs of the community, like water. The narrative unfolds as journey through the desert towards a feminine space where four women, freed from the rural society's strict code of conduct, relive their histories and draw strength from each other. The film uses music to capture the dynamic spirit of the contemporary Indian polity. The theme song is the poetry of Kabir, whose verses celebrate the power of truth and love. The subtle use of legend of Hussein's martyrdom serves as a parallel to the story of the women and underscores the deeply embedded plurality of Indian culture where legends, histories and heroes of different religions are a universal heritage.

द लीजेंड ऑफ भगत सिंह

हिंदी/155 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक राजकुमार संतोषी **निर्माता** रमेश तौरानी, कुमार एस. तौरानी **पटकथा** अंजुम रजाबली **छायांकन** के.वी. आनंद **संपादन** वी.एन. मयेकर **ध्वनि** राजेश रंजन **संगीत** ए.आर. रहमान **गीत** समीर **कला** नितीन चंद्रकांत देसाई **अभिनय** अजय देवगन, सुशांत सिंह, अमृता राव, फरीदा जलाल, नक्शदीप सिंह

ब्रिटिशों द्वारा 1931 में फांसी पर चढ़ाये गये भगतसिंह ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीय संघर्ष के सबसे अधिक प्रेरणा देने वाले चरित्रों में से एक हैं। फिल्म हमें भगतसिंह की उल्लेखनीय एवं नाटकीय जीवन की एक यात्रा कराती है। 12 वर्ष की आयु में जलियांवाला बाग हत्याकांड के खिलाफ उनकी थर्रा देने वाली प्रतिक्रिया, किशोर के रूप में अपने देश को मुक्त कराने वाली रणनीति बनाने की उनकी उत्सुकता, एक विद्रोही के रूप में उनके रूपांतरण और अपनी आवाज को लाखों-करोड़ों भारतीयों तक न पहुँचा पाने की उनकी निराशा, एकाकीपन और हताशा को फिल्म भलीभांति दर्शाती है। अंत में अपने कामरेडों के साथ वे एक ऐसी कार्यवाही का निर्णय लेते हैं जो देश को झकझोर दे, चाहे इसके बदले में उन्हें गिरफ्तारी और मौत का ही सामना क्यों न करना पड़े। वह निसंकोच रूप से अपने कामरेडों के साथ जाते हैं और अपने प्रयासों के परिणामस्वरूप गिरफ्तार हो जाते हैं। एक अविस्मरणीय सुनवाई शुरू होती है, जिसके दौरान उनकी आवाज जनता तक पहुँचती है और उन्हें प्रेरित करती है। हाँलाकि इसके बदले में उन्हें मौत को गले लगाना पड़ता है।

THE LEGEND OF BHAGAT SINGH

Hindi/ 155 min/ 35mm/ Colour

Director Rajkumar Santoshi, **Producer** Ramesh Taurani, Kumar S. Taurani, **Screenplay** Anjum Rajabali, **Cinematography** K.V. Anand, **Editing** V. N. Mayekar, **Sound** Rakesh Ranjan, **Music** A.R. Rahman, **Lyrics** Sameer **Art** Nitin Chandrakant Desai, **Cast** Ajay Degun, Sushant Singh, Amrita Rao, Farida Jalal, Nakshdeep Singh

Bhagat Singh, hanged by the British in 1931, was one the most inspiring figures in India's struggle against imperialism. The film takes us on a journey of Bhagat Singh's remarkable and dramatic life. His searing anguish as a 12-year-old at the Jallianwala massacre, his obsessive search as a teenager for a strategy that would free his country, his growth as a revolutionary are all depicted. And his isolation and frustration as he despairs to make his voice reach millions of Indians. Finally, along with his comrades, he decides a course of action that would shake up the country, even though it would mean his imprisonment and death. He unhesitatingly goes through along with his comrades and is jailed for his efforts. A remarkable trial follows, in which his voice does reach, and inspire the masses, though he has to pay for it with his life.

वास्तुपुरुष

मराठी/150 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक सुमित्रा भावे, सुनील सुकठणकर **निर्माता** एनएफडीसी **पटकथा, कला** सुमित्रा भावे **छायांकन** संजय मेमने **संपादन** सुशील सुकथनकर **ध्वनि** अनिता कुशवाहा, डी.एन. चतुर्वेदी **संगीत** श्रीरंग उमरानी **गीत** सुनील सुकठणकर **अभिनय** सिद्धार्थ दफ्तरदार, उत्तरा बावकर, सदाशिव अमरापुरकर, रेणुका दफ्तरदार

सफल वकील भास्कर नारायण देशपांडे मुंबई के झोपड़पट्टी इलाके में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के अपने कार्य के लिए मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त करते हैं। वह 40 साल बाद अपने गाँव लौटते हैं। वह इस बात का अहसास करते हैं कि केवल उनकी माँ ने उन्हें लीक से हटकर मेडीसिन को समाज सेवा के माध्यम के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया था। भास्कर की माँ एक दृढ़ एवं जमीन से जुड़ी महिला है जो समय के हिसाब से बदलती है और भूमि सुधार को अपनाने के चलते सम्पत्ति और रसूख में होने वाले नुकसान को स्वीकार करती है। वह भास्कर को समझाती है कि जागीरदार ब्राह्मण परिवार ने निचली जातियों के साथ अन्याय किये हैं और वास्तुपुरुष ने पीढ़ियों के पापों को संचित किया हुआ है। माँ को तीन जगहों से अनपेक्षित समर्थन मिलता है। उनकी बूढ़ी सास, एक मराठा महिला जिसे भास्कर के बड़े भाई से विवाह करने से रोक दिया जाता है और भास्कर का मित्र सोपान, एक प्रतिभाशाली दलित युवक। आज जब भास्कर ने अपने पुश्तैनी मकान की नींव पर एक अस्पताल बनाने का निर्णय लिया है तो सोपान, जो अब एक चीनी मिल का अध्यक्ष बन गया है और मराठा महिला की पोती कृष्णा, जो एक डाक्टर है, उसकी माँ के सपने को पूरा करने में उसकी मदद करते हैं।

VASTUPURUSH

Marathi/ 150 min/ 35mm/ Colour

Director Sumitra Bhave, Sunil Sukthankar, **Producer** NFDC, **Screenplay, Art** Sumitra Bhave **Cinematography** Sanjay Memane, **Editing** Sunil Sukthankar, Neeraj Voraliya, **Sound** Anita Kushwaha, D.N. Chaturevedi, **Music** Shrirang Umrani, **Lyrics** Sunil Sukthankar, **Cast** Siddharth Daftardar, Uttara Baokar, Sadashiv Amrapurkar, Renuka Daftardar

Bhaskar Narayan Deshpande, a successful lawyer receives the Magsasysay Award for his work in preventive medicine in the slums of Mumbai. Bhaskar returns to his village after 40 years. He realises that only his mother had pushed him out of the rut, urging him to take up medicine as a medium of social service. Bhaskar's mother was a strong, down to earth woman who changed with the times, and accepted the loss of status and riches that entailed the land reforms. She made Bhaskar understand that the feudal Brahmin family had wronged many lower castes and the Vastupurush had borne their curse for generations. The mother receives support from three unlikely quarters, her old, bedridden mother-in-law, a Maratha woman who was barred from marrying Bhaskar's elder brother and Bhaskar's friend, Sopana, an intelligent Dalit youth. Today when Bhaskar decides to build a hospital on the ruins of his ancestral home, Sopana, now the chairman of a sugar factory and Krishna, the Maratha woman's granddaughter who has become a doctor, help him fulfil his mother's dreams.

जिंदगी खूबसूरत है

हिंदी/142 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक मनोज पुंज **निर्माता** मनजीत मान **पटकथा** सूरज सनीम **छायांकन** योगेश जानी **संपादन** ओंकार भाकरी **ध्वनि** गोपाल सिन्हा **संगीत** आनंद राज आनंद **कला** जयंत देशमुख **अभिनय** गुरदास मान, तब्बू, रजत कपूर, दिव्या दत्ता, चांदनी पंडित, आशीष विद्यार्थी, सोनु सूद, शहबाज खान, ननवी परिहार

अमर केवल एक महत्वाकांक्षा लेकर मुंबई आता है, अमीर और प्रसिद्ध बनने की। एक नाइट क्लब गायक के रूप में काम करते हुए वह अपने सपने को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है। वहाँ वह शालु से मिलता है जो जीवन से वह सब कुछ हासिल करने के लिए उत्सुक है जिससे भाग्य ने उसे वंचित कर रखा है। गुल ब्लोच एक माफिया सरगना है जो केवल अपनी मानसिक रूप से कमजोर बेटी जमिला से प्यार करता है। जमिला जब अमर को टेलीविजन पर गाते हुए देखती है तो उसकी प्रशंसक बन जाती है। गुल अमर का अपहरण करके जमिला के पास ले आता है। अमर जल्दी ही जमिला से भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। इस बीच अमर को पता चलता है कि शालु का सपना अपने पति के साथ एक दूरवर्ती पहाड़ी इलाके में रहने का है। अमर उसके पति की भूमिका करने के लिए तैयार हो जाता है जबकि जमिला बेटी बनती है। वहाँ वे एक-दूसरे के प्रेम में गिरफ्त हो जाते हैं। मुंबई लौटने पर अमर देखता है कि उसका लम्बा संघर्ष सफल हो गया है और उसे तीन बड़ी फिल्मे साइन करने का अवसर मिलता है। वह शालु के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है। लेकिन इस बीच गुल की हत्या हो जाती है और जमिला का जीवन खतरे में पड़ जाता है।

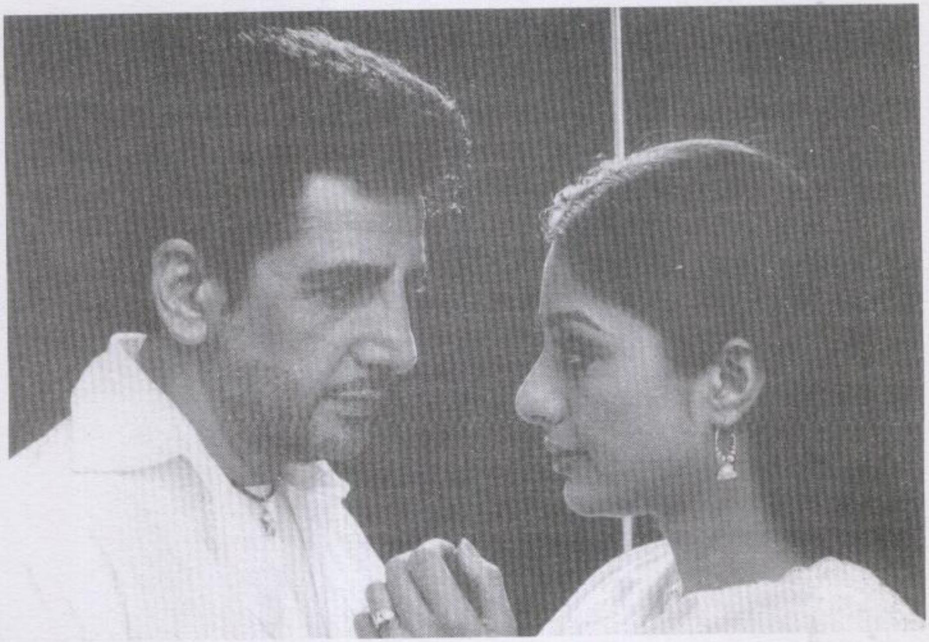

ZINDAGI KHOOBSURAT HAI

Hindi/ 142 min/ 35mm/ Colour

Director Manoj Punj, **Producer** Manjeet Maan, **Screenplay** Suraj Sanim, **Cinematography** Yogesh Jani, **Editing** Omkar Bhakri, **Sound** Gopal Sinha, **Music** Anand Raaj Anand, Hemant Parasher, **Art** Jayant Deshmukh, **Cast** Gurdas Maan, Tabu, Rajit Kapoor, Divya Dutta, Chandani Pandit, Ashish Vidyarthi, Sonu Sood

Amar had come to Mumbai with just one ambition - to be rich and famous. Working as a nightclub singer, he struggles to realise his ambition. There he meets Shalu, adept at getting from life what destiny has denied her. Gul Baloch is an underworld don who loves his only daughter Jamila, a mentally challenged kid. Jamila becomes a fan of Amar after she sees him singing on television. Gul has Amar kidnapped and brought to Jamila, but Amar soon is emotionally attached to Jamila. Meanwhile Amar discovers that Shalu's dream is to live in a remote hill area with her husband. Amar offers to play the role of the husband, with Jamila for a daughter. And once there, they fall in love. Back in Mumbai, Amar discovers that his long struggle has paid off as he is offered a chance to sign up for three big films. He offers to marry Shalu, but meanwhile Gul is killed and Jamila's life is in danger.

कथासार : Synopsis:
गैर कथाचित्र Non-Feature Films

ए फ्यू थिंग्स आई नो अबाउट हर

अंग्रेजी/30 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक अंजली पंजाबी **निर्माता** फिल्म प्रभाग **छायांकन** मृणाल देसाई **संपादन** जबीन मर्चेंट **ध्वनि** अरुण नांबियार

मीराबाई एक सांस्कृतिक प्रतीक हैं और उनकी छवि और कहानियां हमारी लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा हैं। उनकी कविताओं में व्यक्त द्वंद उनके बारे में प्रचलित इन लोकप्रिय मान्यताओं से मेल नहीं खाते हैं।

फिल्म इनमें से कुछ परस्पर विरोधी बातों पर प्रकाश डालती है। हमें मीरा की कुछ वैकल्पिक परम्पराओं का पता चलता है और एक चमत्कारिक संत के साथ उनका एक व्यक्तिगत संपर्क स्थापित होता है जो उनसे बहुत प्राचीन थे और लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व ही जिनकी मृत्यु हो गयी थी।

A FEW THINGS I KNOW ABOUT HER

English/ 30 min/ 35mm/ Colour

Director Anjali Panjabi, **Producer** Films Division, **Cinematography** Mrinal Desai **Editing** Jabeen Merchant, **Sound** Arun Nambiar

Mirabai is a cultural icon and her images and stories swamp our popular culture. The conflicts expressed in her poetry, however do not tally with these popularly held belief.

The film explores some of these contradictions. We discover some alternate traditions of Mira and a personal connection is formed with the mystic saint who lived and died about 500 years ago.

अवचेतन

हिंदी/11 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा मनीषा द्विवेदी **निर्माता** प्रेम मटियानी, एफटीआईआई **छायांकन** मालिनी देसाई **संपादन** मेघना श्रीवास्तव **ध्वनि** अरूणराम वर्मा **संगीत** चारू भारद्वाज **कला** मालिनी देसाई

काकु एक पिता है जो अपनी बेटी सुरु के लिए तथा उसके पति संदीप के लिए जीना चाहता है जिससे वह केवल रात के अंधेरे में ही मिला है। संदीप का स्थानांतरण दूसरे शहर में हो जाता है। उनकी एक साथ बीतने वाली आखिरी रात एक धमाका लेकर आती है जब उसकी बेटी उसे संदीप के साथ यौनक्रीड़ा करते हुए देख लेती है। वास्तव में वह अपने भीतर एक स्त्री को छुपाये हुए है, जिसके अस्तित्व से वह इंकार नहीं कर सकता मगर उसमें इतना साहस नहीं है कि उसे सबके सामने खुले में ले आये। जब उसकी बेटी और पति दोनों उसे भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं तब वह देखता है कि उसके भीतर बसने वाली यह स्त्री ही उसकी मुक्ति का एकमात्र रास्ता है।

AVCHETAN

Hindi/ 11 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay, Art Manisha Dwivedi, **Producer** Prem Matiyani, FTII, **Cinematography** Malini Dasari, **Editing** Meghna Shrivastav, **Sound** Arun Rama Varma, **Music** Charu Bhardwaj, **Art** Malini Dasari

Kaku is a father who wants to live for his daughter Suru as much as for her husband Sandeep, whom he can meet only in the darkness of night. Sandeep is getting transferred to another city. Their last night together comes as a big blow to him when his daughter sees him in a sexual act with Sandeep. All along, he has been hiding a woman inside him, whose existence he could not deny but at the same time he did not have the strength to bring her out in the open. When both the daughter and "husband" leave him to his destiny, he sees this woman inside him as the only way out to his freedom.

बियांड ऑर विदिन

अंग्रेजी/30 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा विनोद मंकारा **निर्माता** पी.टी.एम. पय्योली **छायांकन** सुरेश डी. नायर **संपादन** विजय कुमार **ध्वनि** कृष्णकुमार **संगीत** रमेश नारायण

तंत्र-मंत्र युगों से लोगों को आकर्षित करता रहा है। फिल्म वेदों से शुरू होती है और संभवतः वैदिक काल में प्रारंभ हुए कुछ चमत्कारों की खोज करती है। फिल्म की यात्रा विभिन्न आदिवासियों के साथ जंगल के बीच जारी रहती है और उन आदिवासियों द्वारा पहाड़ों की देवी को प्रसन्न करने के लिए किये जा रहे पूजा-पाठ के दृश्यों को दर्ज करती जाती है। अनेक विशेषज्ञ इस विषय पर अपने विचार प्रकट करते हैं और तंत्र-मंत्र के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हैं। फिल्म तंत्र-मंत्र के दो विभाजनों का भी पता लगाती है, शुद्ध तथा आडम्बरपूर्ण। और एक सवाल छोड़ जाती है कि क्या तंत्र-मंत्र अभी भी जीवन के विभिन्न पहलुओं में से एक है, जो मानव को समझना है।

BEYOND OR WITHIN

English/ 30 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Vinod Mankara, **Producer** P.T.M. Payyoli, **Cinematography** Suresh D Nair, **Editing** Vijayakumar, **Sound** Krishnakumar, **Music** Ramesh Narayan

Occult has fascinated humans for ages. The film begins with the Vedas and explores the birth of the phenomenon, which probably originated in the Vedic age. The camera journeys through forests among various tribes and records their rituals to please the Goddess of the mountains. Various experts speak on the subject and debate aspects of the occult. The film also explores the two divisions of occultism, pure and demonic. And asks the pertinent question – is occultism among the facets of life that humans still have to comprehend.

धात्री पन्ना

अंग्रेजी/58 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक गुलबहार सिंह **निर्माता** स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए फिल्म प्रभाग **पटकथा** पार्थ बेनर्जी, सुबीर मुखर्जी **छायांकन** बरुन राहा **संपादन** उज्वल्ल नंदी **ध्वनि** तपन **संगीत** चंदनराय चौधरी **कला** अशोक बोस **अभिनय** सुलभा देशपांडे, अनन्या खरे, अरूप जागीरदार

रजत बिहार के एक दूरस्थ गाँव में अपनी दुलिया के साथ फंस जाता है जिसका प्रसवकाल नजदीक है। आसपास कोई चिकित्सा सहायता नहीं मिलती है और गाँव के लोग उसे पास के गाँव में रहने वाली दाई पन्ना दाई के पास जाने की सलाह देते हैं। पन्ना दाई आती है और प्रसव कराती है मगर अगली सुबह बच्चे की मौत हो जाती है। रजत उस पर अपने बच्चे की मौत का आरोप लगाता है। स्तब्ध पन्ना दाई अपने गाँव लौट आती है और अपने काम को छोड़ देने का निर्णय लेती है। उसकी बहू मालती उसका स्थान लेती है और वह भी अच्छी दाई साबित होती है।

मालती को दाइयों के लिए सरकार के कार्यक्रम में शामिल होने की सलाह दी जाती है। पन्ना नये तरीकों के प्रति नाराजगी जताती है, खासकर जब मालती शीघ्र ही कमाने और सरकार से सहायता प्राप्त करने लगती है। पन्ना दाई को सरकारी प्रशिक्षण के लाभों की प्रत्यक्ष जानकारी दी जाती है। वह भी आधुनिक तरीकों का प्रशिक्षण लेती है और दोनों मिलकर सदियों पुरानी परम्पराओं से बाहर निकल आती हैं। दोनों मिलकर धात्री पन्ना की भूमिका अदा करती हैं और बच्चों को सुरक्षित रूप से इस संसार में कदम रखने में सहायता करती हैं।

DHATRI PANNA

English/ 58 min/ 35mm/ Colour

Director Gulbahar Singh **Producer** Films Division and Ministry of Health and Family Welfare **Screenplay** Partha Bannerjee, Subir Mukherjee **Cinematography** Barun Raha **Editing** Ujjal Nandy, **Sound** Tapan, **Music** Chandan Roy Chowdhury **Art** Ashok Bose **Cast** Sulabha Deshpande, Ananya Khare, Arup Jagirdar

Rajat gets stranded at night in a remote village in Bihar with his wife Dulia in an advanced stage of pregnancy. There is no medical help around and the local people advise him to go to Pannadai, a midwife from a neighbouring village. Pannadai comes and delivers, but next morning the baby dies. Rajat blames Pannadai for the mishap and she returns to her village saddened and decides to give up her profession. Her daughter-in-law Malti replaces her, and she too proves to be good midwife.

Malti is advised to join the government's programme for midwives. Panna is angry at the new ways, especially as Malti soon begins earning and getting support from the government. Pannadai is gradually made to see the benefits of the government training. She too learns the modern methods and together they overcome centuries-old traditions. Together they will lay the role of Dhartipanna, welcoming babies safely into the world.

द आई ऑफ द फिश

अंग्रेजी/42 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा प्रिया कृष्णास्वामी **निर्माता** फिल्म प्रभाग **छायांकन** वी. सुकामरन **संपादन** संजीव दत्ता **ध्वनि** एम. चेलापंडियन

हजारों साल पहले दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर होने वाले युद्धों, सम्पत्ति और जीवन के असीमित नुकसान के विरोध में मार्शल आर्ट के प्रकार कलारीप्पुयुट्टु का जन्म हुआ। इसमें मस्तिष्क की एकाग्रता पर अधिक जोर दिया जाता है। एक संकीर्ण संसार में यह कला शीघ्र ही आत्मबोध के सबसे सबल साधन के रूप में विकसित हो गयी।

THE EYE OF THE FISH

English/ 42 min/ 35mm/ Colour

Director Priya Krishnaswamy **Producer** Films Division, **Cinematography** V. Sukumaran, **Editing** Sanjib Dutta, **Sound** M. Chellapandian

A thousand years ago, the martial art form of Kalarippayuttu was born in south India as a rejection of large-scale war, entailing immense loss of lives and property. Today Kalarippayuttu, with its emphasis on a completely focused mind, is being harnessed as the single most potent tool of self-realisation in a chaotic world.

कालीघाट पेंटिंग एंड ड्राइंग

अंग्रेजी/21 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा, कला, संगीत, गीत राजा मित्रा **निर्माता** पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र **छायांकन** गौर करमाकर **संपादन** इंद्रनील चटर्जी **ध्वनि** प्रदीप घोष

एक ऐसी चित्रकला जिसमें पर्याप्त शहरी प्रभाव परिलक्षित होता है। यह कला प्रकार मात्रा में सीमित है किंतु सामाजिक प्रभाव से परिपूर्ण है। इस कला के चित्रकार कालीघाट पाट के नाम से प्रसिद्ध हैं और कालीघाट मंदिर में बसे हुए हैं। 18 वीं सदी के मध्य में कलकत्ता के बढ़ने के साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को कालीघाट पाट ने अपनी कला में प्रदर्शित किया है। यह कला खासतौर से अपने मोटी रेखाओं, शालीन अंकन और प्राथमिक रंगों के ठोस प्रयोग के लिए जानी जाती है। वर्तमान में इस कला के चित्र देश व विदेश के अनेक संग्रहालयों में सुरक्षित हैं और ये कलाकारों तथा आम जनता दोनों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

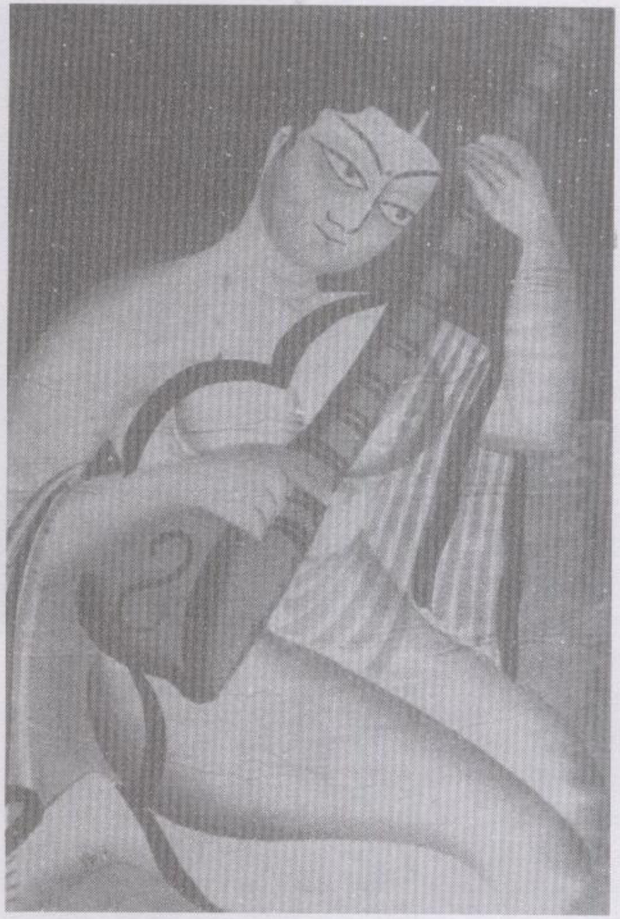

KALIGHAT PAINTINGS AND DRAWINGS

English/ 21 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay, Art, Music, Lyrics Raja Mitra, **Producer** Eastern Zone Cultural Centre, **Cinematography** Gour Karmakar, **Editing** Indranil Chatterjee, **Sound** Pradip Ghose

A school of painting that reveals considerable urban influence, this form is secular in content and rich in social commentary. The painters of the Kalighat Pat, as they are popularly known as, settled in Kalighat Temple. As Kolkata grew, the patuas depicted the different aspects of urban life from mid eighteenth century. The paintings are distinguished by their bold strokes, graceful fluid lines and solid use of primary colours. Today these paintings form part of several national and international museums, and a are a source of inspiration for artists as well as people's delight.

मीटिंग मनजीत

अंग्रेजी/39 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक, पटकथा बुद्धदेव दासगुप्ता **निर्माता** इना पुरी **छायांकन** नीलोत्पल सरकार **संपादन** रवि रंजन मोइत्रा **ध्वनि** अनुप मुखोपाध्याय **संगीत** बिस्वदीप दासगुप्ता

मीटिंग मनजीत भारत के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक मनजीत बाबा के जीवन और कार्य पर बना वृत्तचित्र है। फिल्म में कलाकार के चित्र बनाते हुए, यात्रा करते हुए, गाते हुए, जीवन पर बोलते हुए, खाना पकाते समय या डलहौजी में चढ़ाई के दौरान उभरे विभिन्न भाव सहेजे गये हैं। कलाकार ने अपने जीवन के अविस्मरणीय क्षणों, कला संसार में स्वयं को स्थापित करने के लिए किये गये संघर्ष, एक मानसिकरूप से कमजोर बेटे को पालने में आने वाली कठिनाइयों आदि के बारे में बताया है। फिल्म में निर्देशक बुद्धदेव दासगुप्ता और निर्माता इना पुरी दोनों ने कलाकार के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया है कि किस प्रकार उन्होंने उनसे प्रेरणा पायी और प्रभावित हुए - निश्चय ही केवल एक कलाकार के रूप में ही नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी जो जीवन के प्रति समानरूप से सकारात्मक है और पूर्णता में अपना हर दिन जीता है।

MEETING MANJIT

English/ 39 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Buddhadeb Dasgupta **Producer** Ina Puri **Cinematography** Nilotpal Sarkar, **Editing** Rabi Ranjan Moitra, **Sound** Anup Mukhopadhyaya, **Music** Biswadep Dasgupta

Meeting Manjit is a documentary on the life and work of one of India's most prominent artists, Manjit Bawa. The film captures the myriad moods of the artist as he paints, travels, sings, contemplates on life, cooks or treks in Dalhousie. The artist talks of the defining moments of his life, of the struggles to establish himself on the art scene, the travails of bringing up a mentally challenged son. Both the director, Buddhadeb Dasgupta and the producer of the film, Ina Puri, also express their points of view on how the artist inspired and influenced them – not merely as an artist, but as a man who is equally passionate about life and lives each day to the full.

द मॉरंग - साइलेंट विटनेस ऑफ द ब्रेव वांचो

अंग्रेजी/35 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक बप्पा राव **निर्माता** एंथ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया **छायांकन** बरुन राहा **संपादन** गुरप्रीत सिंह **ध्वनि** आलोक डे

भारत के पूर्वोत्तर में स्थित अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले में वांचो एक बड़ा आदिवासी समुदाय है। उनकी एक सुसंस्थागत शयनागार व्यवस्था है, जिसके माध्यम से हर वांचो गाँव में सामाजिक-राजनैतिक गतिविधियां निर्धारित होती हैं और जो उनके अस्तित्व को बचाये रखने में कई बार महत्वपूर्ण साबित हुई है। मोरंग अथवा पो कहलाने वाली इस शयनागार व्यवस्था में आज अतीत की बहुत कम झलक देखने को मिलती है। अपने प्राचीन रूप में यह केवल बर्मा सीमा के पास दूरस्थ इलाकों में बसे कुछ ही गाँवों में शेष है।

इस शयनागार व्यवस्था की खोज में एक एंथ्रोपोलजिस्ट डा. जयंतो सरकार जिन्होंने 30 वर्ष पूर्व वांचो समाज में मोरंग की भूमिका का अध्ययन किया था, अपने कदमों के निशान तलाशते हैं। उनकी यात्रा जिला मुख्यालय खोंसा से प्रारंभ होती है और लोंगडींग स्थित उपसंभागीय मुख्यालय तक पहुँचती है जहाँ 32,366 वांचो 41 गाँवों में रहते हैं। अब एंथ्रोपोलोजिकल सर्वे आफ इंडिया के निदेशक डा. सरकार वांचो की जीवन शैली में बहुत से परिवर्तन देखते हैं।

THE MORUNG - SILENT WITNESS OF TEH BRAVE WANCHO

English/ 35 min/ 35mm/ Colour

Director Bappa Ray, **Producer** Anthropological Survey of India, **Cinematography** Barun Raha, **Editing** Gurpreet Singh, **Sound** Alok De

The Wanchos are a major tribe of the Tirap district of Arunachal Pradesh in the northeast of India. They had a well-institutionalised dormitory system, which characterized the socio-political activities of each Wancho village and at times determined their very survival. The Morung or the Po, the dormitory system, is today merely a relic of the past, existing in its original form in just a few villages in the remote areas near the Burma border.

In search of the dormitory, Dr Jayanto Sarkar, an anthropologist who studies the role of the Morung in Wancho society 30 years ago, retraces his footsteps. His journey begins from Khonsa, the district headquarters, and takes him to the sub-divisional headquarters at Longding, where 32,366 Wanchos occupy 41 villages. Now the director of the Anthropological Survey of India, Dr Sarkar finds many changes in the Wancho way of life.

नारायण गंगाराम सूर्वे

मराठी/45 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक अरुण खोपेकर **निर्माता** खयाल ट्रस्ट **पटकथा** शांता गोखले **छायांकन** मृणाल देसाई **संपादन** अरुणाभा मुखर्जी **ध्वनि** सुबीर दास **कला** बाबुभाई शेख **अभिनय** किशोर कदम

फिल्म प्रख्यात मराठी कवि नारायण गंगाराम सूर्वे के जीवन और कविताओं पर प्रकाश डालती है। सूर्वे एक पितृहीन बालक थे जो एक अतुलनीय मराठी कवि के रूप में उभर कर सामने आये। फिल्म उस दृश्य से प्रारंभ होती है जिसमें यह दर्शाया गया है कि किस तरह उनकी माता ने उन्हें एक मिल के दरवाजे पर छोड़ दिया था। गंगाराम सूर्वे ने उन्हें देखा और उन्हें अपने घर ले गये। दृश्य उस तरह से फिल्माया गया है जैसे मिल के गेट पर खड़े कवि नारायण सूर्वे यह कल्पना कर रहे हैं। प्रश्नोत्तर के संवाद के बाद जिसमें उनका परिचय दिया जाता है, हम उनकी कविता माझे विद्यापीठ (मेरा विश्वविद्यालय) का दृश्यरूपांतरण देखते हैं, जिसमें मुंबई के फर्श, सड़कें, गलियां आदि दिखाई देती हैं।

सूर्वे द्वारा कविताओं का पठन एक दृश्य से समाप्त होता है जिसमें हम उन्हें घर पर अपनी पत्नी और उस अभिनेता के साथ देखते हैं जिसने इस फिल्म में उनकी भूमिका अदा की है। उनके जीवन के बहुत से दृश्य अभिनेता और सूर्वे के बीच बातचीत के माध्यम से दर्शाये गये हैं। फिल्म के अंतिम दृश्य में हम सूर्वे और अभिनेता को बीडीडी चाल के निकट देखते हैं। जिसमें अभिनेता उनका चश्मा उनकी जेब में डालता है जो इस बात का संकेत देता है कि सूर्वे के रूप में उसकी यात्रा समाप्त हो चुकी है। वह सूर्वे को सड़क किनारे स्थित एक बैंच पर अकेला छोड़ देता है और कैमरे के समक्ष कविता की अंतिम पंक्तियां बोलता है।

NARAYAN GANGARAM SURVE

Marathi/ 45 min/ 35mm/ Colour

Director Arun Khopkar, **Producer** Khayal Trust, **Screenplay** Shanta Gokhale **Cinematography** Mrinal Desai **Editing** Arunabha Mukherjee, **Sound** Subir Das, **Art** Babubhai Sheikh, **Cast** Kishore Kadam

This film depicts the life and poetry of a famous Marathi poet, Narayan Gangaram Surve. Surve was a foundling who became an outstanding Marathi poet . The film deals with some landmark events of his life and a number of his outstanding poems. The film opens with a scene that depicts how his mother abandoned him at the gate of a mill. Gangaram Surve finds him and takes him home. The scene is played as it is imagined by the poet Narayan Surve whom we see at the gate of the mill. After a question and answer dialogue which introduces him, we have the visualization of his poem *Maajhe Vidyapeeth* (My University) with scenes from the Mumbai pavements, streets, lanes and by-lanes.

The recitation of the poem by Surve ends with a scene in which we see him at his home with his wife and the actor who plays his role in the film. Many scenes from his life are depicted through the actor and Surve's interaction. In the final scene we see the actor and Surve which takes place on a pavement near the BDD chawls. The actor puts his specs into his pocket indicating the end of journey as Surve. He leaves Surve who sits alone on a roadside bench and recites the concluding couplet of the poem to the camera.

परमापथम

तमिल/ 13.30 मिनट/ 35 एमएम/ रंगीन

निर्देशक, पटकथा प्रभु राधाकृष्णन **निर्माता** तमिलनाडु फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **छायांकन** सी. प्रेमकुमार **संपादन** मथन सुनदेवा **ध्वनि** ए.सी. जाल्टसन **संगीत** इसाक थॉमस कोट्टुकपाली **कला** रमेश कृष्णन **अभिनय** सुरेश के. नायर, पद्मा चौधरी

विद्याशंकर अपनी डायरी में लिखता है : 'जीवन में मुझे कितने अनत्तरित प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा?' वह संदेह के साथ उन पन्नों को पलटता है जिसमें उसके जीवन की घटनाएं दर्ज हैं। यह जाहिर करता है कि किस तरह उद्देश्यहीन होकर उसने जीवन बिताया है। उसके अभिभावक आत्महत्या कर लेते हैं और उसे अनाथ छोड़ जाते हैं। आत्महत्या का कारण भी एक रहस्य है। पन्ने पलटते हैं और वह एक ऐसी स्थिति में पहुँचता है जहाँ जिज्ञासाएं समाप्त हो जाती हैं और सेक्स के रहस्य का उद्घाटन करने की आवश्यकता उसे परेशान करने लगती है। वह एक मूर्तिकार बन जाता है।

विद्याशंकर की जिज्ञासा उसे अपने घर एक वेश्या को लेकर आने के लिए प्रेरित करती है। वह एक कांट्रेक्ट पर वहाँ आयी है और वह तय दिन उसके साथ व्यतीत करती है। वह महसूस करता है कि काम प्रेम में परिवर्तित हो गया है। वे एक-दूसरे के बहुत निकट आ जाते हैं। विद्याशंकर वर्तमान अवस्था में लौटता है। वे अब साथ हैं मगर क्या उन्हें उत्तर मिल गये हैं? स्त्री को लकवा हो गया है और वह बिस्तर से उठ नहीं सकती। लेकिन वह अब भी अपने अस्तित्व पर सवाल पूछती है। जीवन की उसकी खोज जारी रहती है।

PARAMAPATHAM

Tamil/ 13.30 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay Prabhu Radhakrishnan, **Producer** Film and Television Institute of Tamil Nadu, **Cinematography** C. Premkumar, **Editing** Mathan Sunadeva, **Sound** A.C. Jaltson, **Music** Isaac Thomas Kottukapally, **Art** Ramesh Krishnan, **Cast** Suresh K. Nair, Padma Chowdhary

Vidhyashankar writes in his diary: "How many unanswered questions will life take me through?" With an air of dubiousness, he flips through the pages that have captured the moments of his life. They convey how aimless he has been in life. His parents had committed suicide, orphaning him. The reasons for the suicide too were a mystery. The pages flip by and he reaches a stage where inquisitiveness takes over and the urge to unravel the secrets of sex haunts him. He becomes a sculptor.

Vidhyashankar's curiosity leads him to bring a prostitute to his house. She is here on a contract and she spends the contracted days with him. Vidhyashankar realises that love has replaced lust. They become very close to each other. Vidhyashankar comes back to the present scenario. They are together now but have they found the answers? She is paralysed and completely bed-ridden. But she still questions her existence and his search for life continues...

सुंदर जीबोन

बंगला/ 37 मिनट/ 35 एमएम/ रंगीन

निर्देशक, पटकथा संदीप चटोपाध्याय **निर्माता** सत्यजीत राय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **कथा** , **छायांकन** मृणाल नंदी **संपादन** मलय लाहा **ध्वनि** अरिजीत पाल **संगीत** पिंकी **कला** संचयन घोष **अभिनय** शांतनु बोस, अलकनंदा रे, चिरंतन दासगुप्ता

यह कहानी एक ऐसे लेखक की है जिसकी पत्नी ने उसे त्याग दिया है। वह शहर से दूर एक पुराने घर में वह किताबों के संग्रह के बीच अपनी उदासी को दूर करने के प्रयास में है। पपीहे की मिलन-पुकार उसे लगातार परेशान करती रहती है, खासतौर से पपीहे के स्वर की मधुरता उसे सहन नहीं होती। एक ऐसी ही दोपहर में उसका पुराना मित्र शांति उससे मिलने आता है। शांति की पत्नी का निधन कैंसर से हो गया था। वह शहर में अपने समृद्ध रिश्तेदारों के साथ रहता है। शांति दाहसंस्कार में शामिल नहीं होता है। क्या वह उदास है? फिल्म में सौंदर्य के खटास भरे स्वाद का अनुभव होता है।

SUNDER JEEBON

Bengali/ 37 min/ 35mm/ Colour

Synopsis

Director, Screenplay Sandeep Chattopadhyaya, **Producer** Satyajit Ray Film and Television Institute Story Script **Cinematography** Mrinmoy Nandy, **Editing** Malay Laha, **Sound** Arijit Pal **Music** Pinky, **Art** Sanchayan Ghosh, **Cast** Shantanu Bose, Alaknanda Ray, Chirantan Dasgupta

A story of a writer whose wife has deserted him. Stuck with a writer's block and in an old house in the countryside, he churns out his sadness. The incessant mating calls of the cuckoo disturb him, especially as he cannot stand the sweetness of its tone. On one such afternoon, his old friend, Shanti comes looking for him. Shanti has lost his wife to cancer. She used to stay in the city with her rich relatives. Shanti did not attend the funeral. Is the sad? A film that explores the sour taste of beauty.

द ट्रेजर इन द स्नो

अंग्रेजी/ 28 मिनट/ 35 एमएम/ रंगीन

निर्देशक, छायांकन गौतम घोष **निर्माता** विदेश मंत्रालय, साऊथ एशिया फाउंडेशन **पटकथा** जवाहर सिकचर **संपादन** मलय बेनर्जी **ध्वनि** अरुण बोस **संगीत** तपन कुमार डे

पूर्व का स्विटजरलैंड कहलाने वाला हिमालयी राज्य सिक्किम नेपाल, भूटान और चीन के बीच स्थित है जो वर्ष 1975 में भारतीय संघ की मुख्य धारा में सम्मिलित हुआ। तब तक रहस्य की यह भूमि नामग्याल परिवार से सम्बन्धित चोग्याल द्वारा शासित राज्य था।

यह सदियों तक अनदेखा रहा और सिक्किम के बारे में बहुत कम जानकारी थी। लेकिन जब एक बार उसने अपने द्वार खोल दिये अधिक से अधिक लोग इस स्वर्ग के खजाने की खोज करने में सक्षम हुए। इसकी जादुई चोटियों वाली विशाल पर्वत श्रृंखला, कंचनजंगा और सिनिओलचु, इसके अप्रतिम झरने और गहरी घाटियां, बलखाती नदियां सबको मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

वृत्तचित्र में सिक्किम की झलकियां हैं - इसका इतिहास, रहस्य, धर्म, कला और संस्कृति। यह सिक्किम के अनुभव को एक मानवीय रूप प्रदान करता है।

THE TREASURE IN THE SNOW

English/ 28 min/ 35mm/ Colour

Director, Cinematography Goutam Ghose, **Producer** Ministry of External Affairs, South Asia Foundation, **Screenplay** Jawahar Sircar **Editing** Moloy Banerjee, **Sound** Arun Bose, **Music** Tapan Kumar Dey

It is known as the Switzerland of the East. Sikkim, the Himalayan state nestling between Nepal, Bhutan and China, joined the mainstream of the Indian Union in1975. Till then, this land of mist and mystery was a monarchy ruled by the Chogyal, belonging to the Namgyal family.

It was locked away for centuries, and little was known about Sikkim. But once it opened its doors, more and more people have been able to discover the treasures of this paradise. Its vivid, ageless mountain ranges with their majestic peaks, Kanchenzonga and Siniolchu, its spectacular flora and verdant valleys, the vivacious Teesta and serpentine Ringit rivers leave everyone transfixed.

This documentary offers glimpses of Sikkim – its history, myths, religion, arts and culture. It gives a human face to the experience that is Sikkim.

उरुमाट्रम

तमिल/ 32 मिनट/ 35 एमएम/ रंगीन

निर्देशक, पटकथा बी. सिवकुमार **निर्माता** जी. मीनाक्षी सुंदरम, बी. सिवकुमार **छायांकन** श्री भरनी **संपादन** सुरेश उर्स **संगीत** ए. इलाकेयन **कला** रवि **अभिनय** आर.सी. शक्ति, श्रीलता, जी.एम. सुंधर, अंसारी

विकास होता है और हस्तांतरित होता है। किसी और पीढ़ी द्वारा जिया गया, महसूस किया गया, समझा गया और अपनाया गया जीवन उस समय द्वंद का शिकार होता है जब वह रूपांतरणीय आदान-प्रदान के आधुनिक दृष्टिकोण से परखा जाता है।

एक दादा, पुत्र और पोते के इर्द-गिर्द घूमने वाली यह एक पुत्र की कथा है जो अमेरिका जाने की जल्दी में है। वह संतुष्ट है कि उसने सभी विपरीत संभावनाओं को समाप्त कर दिया है, अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित कर लिया है और अपने बूढ़े पिता की ठीक से देखभाल की है। दादा को बड़ी आसानी से पुश्तैनी मकान को बेचकर पैसा एकत्रित किये जाने के विचार से सदमा लगता है। वह इस पैसे से एक प्लास्टिक फैक्ट्री का मालिक बनने के विचार से पूरी तरह से असहमत है। पूरी तरह से निराश दादा को पोते से सहारा मिलता है जब वह अपने दादा के बिखरे हुए संसार के टुकड़ों से आशा का एक नया बीज बोता है।

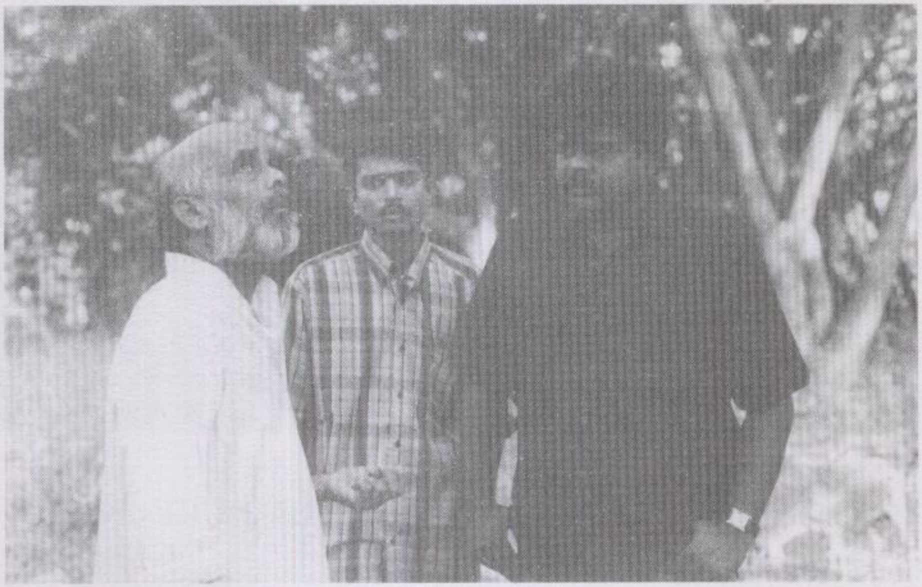

URUMATTRAM

Tamil/ 32 min/ 35mm/ Colour

Director, Screenplay B. Sivakumar, **Producer** G. Meenakshi Sundaram, B. Sivakumar, **Cinematography** Sri Bharani, **Editing** Suresh Urs, **Music** A. Elakeyan, **Art** Ravi, **Cast** R.C. Sakhti, Sri Latha, G.M. Sundhar, Ansari

Evolution, the happening and passing on, lived, felt, understood and practised by the older generations finds itself in conflict with the modern view of convertibility exchange.

Revolving around a grandfather, his son and grandson, this is a story of the son who is in a hurry to escape to the United States. He is convinced he has tied up all the loose ends like securing the future of his family as also taking proper care of his old father. The grandfather is shocked by the easy translation into money of the ancestral home and completely shattered by the irresponsibility of maximising gain in turning it over to a plastics factory owner. The lost grandfather is redeemed by the grandson who, from among the broken pieces of his grandfather's world, picks up hope....

00:00

अंग्रेजी/ 11 मिनट/ 35 एमएम/ रंगीन

निर्देशक रिक बसु **निर्माता** भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **छायांकन** आराधना वैष्णव **संपादन** पी. प्रतापन **ध्वनि** मिलिंद बापट

अलीबाग के सागर किनारे स्थित एक होटल में नये साल का उत्सव प्रारंभ होता है। अलग-अलग लोग अपने-अपने कमरों में अपने-अपने जीवन के ढंग से समय व्यतीत करते हैं, तब तक जब तक कि मध्य रात्रि नहीं होती और तब नया साल प्रारंभ होता है।

00:00

English/ 11 min/ 35mm/ Colour

Director Wrik Basu, **Producer** FTII, **Cinematography** Aradhana Vaishnav, **Editing** P. Prathapan, **Sound** Milind Bapat

New year's celebrations take place in a seaside hotel in Alibaug. Different people play out their individual lives in their respective rooms until… midnight and New Year begins.